मिडल श्रेणियों के लिए

हिन्दी व्याकरण व लेख रचना

सर्वशिक्षा अभियान, पंजाब

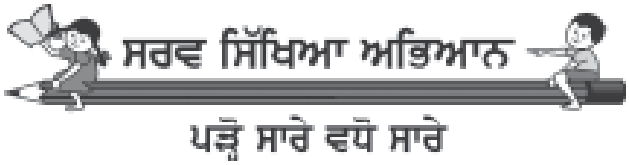

सब पढ़ें सब बढ़ें

क्रमांक	विषयवस्तु	लेखक
1.	संज्ञा और भाव वाचक संज्ञा निर्माण	श्री हरिभजन प्रियदर्शी स.स.स. स्कूल (लड़के) मलोट (मुक्तसर) फोन : 98760-86791
2.	सर्वनाम	डॉ. मीनाक्षी वर्मा हिन्दी अध्यापिका स.सी.सै.स्कूल लचकानी (पटियाला) फाने : 94175-34588
3.	विशेषण	डॉ. मीनाक्षी वर्मा
4.	कारक	डॉ. सुनील बहल स.मा.स.स.स्कूल 3-बी-1, मोहाली फोन : 94177-41122
5.	काल	डॉ. मीनाक्षी वर्मा
6.	क्रिया	श्री शिव शंकर, स.स.स. स्कूल गडांगा, मोहाली फोन: 94175-54627
7.	क्रिया विशेषण	श्री शिव शंकर
8.	विशेषण निर्माण	श्री शिव शंकर
9.	सम्बम्ध बोधक	डा. सुनील बहल
10.	योजक	डा. सुनील बहल
11.	वाच्य	श्री हरिभजन प्रियदर्शी
12.	विस्मयादि बोधक	श्री हरिभजन प्रियदर्शी
13.	विराम चिह्न	श्री तरसेम कुमार शर्मा स.(क) स.स.स्कूल, कपूरथला फोन : 98146-11442
14.	व्यावहारिक व्याकरण	श्रीमती सोमा सबलोक

15.	पर्यायवाची शब्द	श्री शिव शंकर
16.	मुहावरे एवं लोकोक्तियां	श्री तरसेम कुमार शर्मा
17.	निबंध	श्रीमती सुधा जैन 'सुदीप' हिन्दी मिस्ट्रेस, स.(क). स.स. स्कूल, सोहाना (मोहाली) फोन : 99883-10624
18.	पत्र लेखन	डॉ. पूनम गुप्ता पटियाला फोन : 95015-66622
19.	कहानी लेखन	डॉ. पूनम गुप्ता

पाठ–1
संज्ञा और भाववाचक संज्ञा निर्माण

1. मेरा नाम राम है
2. इनका नाम श्याम है।
3. आपका क्या नाम है?
4. मैं लुधियाना जा रहा हूं।
5. नेकी कर कुएं में डाल।
6. मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।
7. हाथी एक शक्तिशाली जानवर है।
8. गाय एक पालतू पशु है।
9. आम मीठे और बेर खट्टे होते हैं।

उपरोक्त वाक्यों में हमने व्यक्तियों, पशुओं, स्थान आदि के नाम के साथ भाव और क्रिया व्यापार को उनके नामों से बताया है। ये नाम ही संज्ञा है। जैसे- राम, श्याम, लुधियाना, मोर, पक्षी, पशु, मीठे, खट्टे, नेकी आदि।

परिभाषा :- किसी वस्तु (मेज, कुर्सी), स्थान (मुक्तसर, जालंधर), प्राणी (शेर, बच्चा, आदमी), भाव (प्रेम, सुख, दु:ख) आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा शब्द मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं।

क. व्यक्ति वाचक संज्ञा **ख.** जातिवाचक संज्ञा **ग.** भाववाचक संज्ञा।

(क) व्यक्ति वाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी एक ही विशेष पुरुष, स्थान वस्तु के नाम को प्रकट करें उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते है।

उदाहरण :-

1. सरदार भगत सिंह एक सच्चे देश भक्त थे।
2. भारत की राजधानी दिल्ली है।
3. अजीत समाचार पत्र सबसे उत्तम है।

उपरोक्त उदाहरण में भगत सिंह, भारत, दिल्ली, अजीत समाचार ये सभी शब्द किसी एक

खास नाम को सम्बोधित किए गए हैं। अत: ये शब्द व्यक्तिवाचक हैं।

(ख) जाति वाचक संज्ञा :-

जो संज्ञा शब्द एक जाति के सभी पुरुषों, स्थानों या वस्तुओं के नाम का समान बोध कराएं उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- फल, कुत्ता, हाथी, नगर, फूल, देश, नदी, झरना, नर, नारी, पर्वत, लकड़ी, तांबा, सेना, कक्षा, परिवार आदि।

1. कुत्ता एक वफादार जानवर है।
2. गाय हमारी माता है।
3. भारत एक महान देश है।
4. यह फूल बहुत सुंदर है।

उपरोक्त वाक्य में कुत्ता शब्द समस्त प्रकार की प्रजातियों का बोध करवाता है। इसी प्रकार ''देश'' शब्द भी विश्व के समस्त देशों के लिए प्रयोग होगा तथा फूल सभी प्रकार के फूलों के लिए चाहे वह गुलाब का हो या गेंदे का।

(ग) भाव वाचक संज्ञा :-

किसी गुण, दशा, स्वभाव, कार्य, भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों को भाव वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे -

गुण-दोष - चौड़ाई, लम्बाई, सुंदरता, चतुरता।
दशा - बुढ़ापा, बचपन, जवानी, प्यास, भूख।
भाव - आशा, स्वार्थ, क्रोध, शांति।
कार्य - सहायता, प्रशंसा, सलाह।

उदाहरण :- (1) जीवे <u>आशा</u> मरे <u>निराशा</u>।
(2) राम ने श्याम की <u>सहायता</u> की।
(3) राम को कभी <u>क्रोध</u> नहीं आया।
(4) मुझे बहुत <u>प्यास</u> लगती है।

रेखांकित शब्द से मन में भाव स्वयं उठते हैं इसलिए यह भाव वाचक संज्ञा है।

भाववाचक संज्ञा निर्माण

1. चोर ने रात को चोरी की।
2. बूढ़े व्यक्ति का बुढ़ापा मुश्किल से कटता है।
3. भूखा व्यक्ति, भूख से मर रहा है।
4. मीठा आम लाओ, इसमें मिठास कम है।
5. बच्चो हारना बुरी बात है, जिंदगी में कभी हार नहीं माननी चाहिए।
6. सभी को पढ़ना चाहिए। जो पढ़ाई करेगा वही पास होगा।

उपरोक्त उदाहरण में चोट, बूढ़े, व्यक्ति वाचक संज्ञा है। बुढ़ापा तथा चोरी भाववाचक

संज्ञा बनी।

भूखा और मीठा विशेषण शब्द है जिससे भूख और मिठास भाव वाचक संज्ञा बनी।

इसी प्रकार हारना, पढ़ना दोनों क्रिया हैं उससे हार और पढ़ाई भाव वाचक संज्ञा बनी।

अत: भाव वाचक संज्ञा मुख्य तीन प्रकार के शब्दों से बनती है:-

(क) जाति वाचक शब्दों से

(ख) विशेषण शब्दों से

(ग) क्रिया शब्दों से

(क) जाति वाचक संज्ञा	**भाव वाचक संज्ञा**
माता	मातृत्व
भ्राता	भ्रातृत्व
पशु	पशुता, पशुत्व
पंडित	पांडित्य
हिन्दू	हिन्दुत्व
मनुष्य	मनुष्यता
प्रभु	प्रभुता
बाल	बालपन
राष्ट्र	राष्ट्रीयता

विशेषण शब्दों से	**भाव वाचक संज्ञा**
मोटा	मोटापा
सुंदर	सुंदरता
उचित	औचित्य
ऊंचा	ऊंचाई
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
पवित्र	पवित्रता
मधुर	मधुरता
कठिन	कठिनाई

क्रिया शब्दों से	**भाव वाचक संज्ञा**
चिल्लाना	चिल्लाहट
खोजना	खोज
जीतना	जीत
पूजना	पूजा
मुस्कुराना	मुस्कुराहट
थकना	थकान
जपना	जप
सीना	सिलाई

पाठ–2

सर्वनाम

एक नाम में शंकर नाम का एक बालक रहता था। शंकर में एक बड़ा गुण था। शंकर बहुत ईमानदार था। शंकर सदा सच बोलता था। गांव वाले शंकर को बहुत प्यार करते थे।

उपर्युक्त गद्यांश में शंकर शब्द का बार–बार प्रयोग हुआ है। शंकर एक संज्ञा शब्द है। एक ही संज्ञा का बार–बार प्रयोग वाक्य प्रवाह में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिए संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हैं। निम्न उदाहरण देखें:

एक गांव में शंकर नाम का एक बालक रहता था। उसमें एक बड़ा गुण था। वह बहुत ईमानदार था। वह सदा सच बोलता था। गांव वाले उसको बहुत प्यार करते थे।

उपर्युक्त गद्यांश में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द '' उसमें '', '' वह'' तथा '' उसको '' सर्वनाम शब्द है।

सर्वनाम की परिभाषा :–

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मैं, हम, आप, ये, वे, तुम, यह, वह, इस, कौन, कोई, कुछ, जो, सो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद

(क) 1. मुझको मालूम हुआ है कि तुम फिरंगियों के कायल हो। उनकी शीर्गिदी में ही तुमने यह सब सीखा है।

2. मैं तुमसे इस (घोड़े को) वापस करने के लिए न कहूंगा।

3. तुम्हारी उंगलियां तवे पर जल जाती थीं इसलिए मैंने इसे (चिमटे को) लिया।

उपर्युक्त वाक्यों में ''मुझको'', ''तुम'', ''उनकी'', ''तुमने'', ''मैं'', ''तुमसे'', '' इसे'', ''तुम्हार'', ''मैंने'', तथा ''इसे'' आदि शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम है। इसमें वक्ता के लिए '' मुझको'', ''मैं'' तथा ''मैंने'' श्रोता के लिए ''तुम'', ''तुमने'', ''तुमसे'', तथा तुम्हारी अन्य के लिए ''उनकी'', ''इसे'' शब्दों का प्रयोग हुआ है। अत: ये पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम

वक्ता, श्रोता या अन्य किसी व्यक्ति के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–

1. उत्तम पुरुष:– वक्ता अपने लिए जिन सर्वमानों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– मैं, हम, हमें, मुझे, मेरा आदि।

2. मध्यम पुरुष:– वक्ता सुनने वाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे मध्यम

पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – तू, तुम, तुम्हें, तुझे, तेरा इत्यादि।

3. अन्य पुरुषः– वक्ता किसी अन्य के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – वे, उसने, उसका, उनका आदि।

(ख) 1. बाबू जी यह मेरा लड़का है, मुझ अंधे की लकड़ी है।
2. यह तो चौधरी साहब का पंखा है।
3. यह पांच रुपये का नोट आपका है।
4. राजा ने सिपाही से कहा कि यह नौकर लेखक का है, उसे सौंप दो।
5. यह मेरी वीर सेना है।
6. क्या ये आम तुम्हारे हैं ?

उपर्युक्त वाक्यों में ''यह'', ''ये'' शब्दों से दूरवर्ती तथा निकटवर्ती शब्दों की ओर निश्चित संकेत मिल रहा है। अतः ये शब्द निश्चय वाचक सर्वनाम हैं।

निश्चय वाचक सर्वनाम

अतः जो सर्वनाम किसी निकट या दूर के व्यक्ति या वस्तु का निश्चित बोध कराते हैं, वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ग) 1. झाड़ियों मे कुछ सरसराहट हुई।
2. वातावरण विचित्र था। एक ओर कुछ व्यक्ति अलग खड़े थे।
3. मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा।
4. वह नगर में प्रवेश कर चुका था। वहां उसे कोई नहीं जानता था।
5. कोई भी व्यक्ति इस काम के लिए नहीं उठा।
6. अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता ?
7. जब हम किसी से कोई चीज लें तो उसका 'धन्यवाद' करना न भूलें।
8. किसान अभी कुछ नहीं कह पाया था।

उपर्युक्त वाक्यों में ''कुछ'', ''कोई'' शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति उथवा वस्तु का निश्चित बोध नहीं हो रहा है क्योंकि कई बार व्यक्ति अथवा वस्तु का आभास तो होता है पर उसके संबंध में निश्चयपूर्वक कह पाना कठिन होता है। अतः ये शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम है।

अनिश्चय वाचक सर्वनाम

अतः किसी अनिश्चित व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले सर्वनाम अनिश्चियवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(घ) 1. जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
2. जो ठीक काम करेगा, वह फल पाएगा।
3. जिसको आपने बुलाया था, वह आ गया है।
4. जो समय को नष्ट करते हैं, समय उनको नष्ट करता है।
5. जो बोओगे, सो काटोगे।

उपर्युक्त वाक्यों में ''जैसा....वैसा'', ''जो....वह'', ''जिसको.....वह'',

''जो.....उनको'' तथा ''जो....सो'' ऐसे सर्वनाम है जो वाक्यों में संबंध जोड़ते हैं। अत: ये संबंध वाचक सर्वनाम हैं।

संबंधवाचक सर्वनाम

अत: जिन सर्वनामों का प्रयोग अन्य वाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम से संबंध बताने के लिए किया जाता है, वे संबंध वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ङ) 1. शेर को कौन बाहर निकाल सकता है ?

2. यह कौन है, जो डरना तो दूर रहा, शांतिपूर्वक मुस्करा रहा है।

3. अन्यायी कौन है ?

4. तुम कौन हो देवी ?

5. मोहन दोने में क्या लाया था ?

उपर्युक्त वाक्यों में ''कौन'' का उपयोग मनुष्यों के लिए और ''क्या'' का उपयोग किसी प्राणी या वस्तु के लिए हुआ है। अत: ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

अत: किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के विषय में प्रश्न का बोध कराने वाले सर्वनाम प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(च) 1. इतने में वह स्वयं ही लौट आया।

2. स्वयं कोई उल्टा-पुल्टा इलाज नहीं करना चाहिए।

3. मनुष्य स्वयं अपने साथ ही शत्रुता का व्यवहार कर रहा है।

4. तुम यह काम अपने आप करो।

5. मैं खुद ही आ जाऊंगा।

उपर्युक्त वाक्यों में ''स्वयं'', ''अपने आप'' तथा ''खुद'' शब्द कर्ता के लिए प्रयुक्त हुए हैं। अत: ये निजवाचक सर्वनाम हैं।

निजवाचक सर्वनाम

अत: जिन सर्वनामों शब्दों का प्रयोग कर्ता के स्वयं के लिए किया जाए, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

संज्ञा का भाई कहलाए,
उसके सिंहासन पर यह बैठ जाए।
पुरुष, निश्चय, अनिश्चय, संबंध, प्रश्न और
निज है इसके छ: प्रकार,
जो देते हैं इसे सुंदर आकार।

पाठ–3

विशेषण

1. शंकर ईमानदार बालक था।
2. सुल्तान सुंदर घोड़ा था।
3. अंगुलिमाल हिंसक डाकू था।
4. प्रेमचंन्द्र जी ने गुलाबी सेब खरीदे।
5. साहसी नवयुवकों में भगत सिंह का नाम प्रमुख है।

उपर्युक्त वाक्यों में '' ईमानदार '' , '' सुंदर '', '' हिंसक '', '' गुलाबी '' तथा '' साहसी '' शब्द क्रमशः बालक, घोड़ा, डाकू, सेब तथा नवयुवकों भाव संज्ञाओं की विशेषता प्रकट कर रहे हैं। अतः ये विशेषण हैं।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करें, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाए, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करें, उन्हें विशेषता कहते हैं। जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाए, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

विशेषण के भेद

(क) 1. राहुल गरीब आदमी था।
2. बाघ की मोटी–मोटी आंखें थी।
3. खड़गसिंह इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।
4. शिमला पहाड़ी प्रदेश है।
5. पवित्र नदियों में लाखों लोग स्नान करते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में '' गरीब '' , '' मोटी–मोटी '', '' प्रसिद्ध '', '' पहाड़ी '' तथा '' पवित्र '' शब्द क्रमशः आदमी, आंखें, डाकू, प्रदेश तथा नदियों (संज्ञाओं) की गुण संबंधी विशेषता प्रकट कर रहे हैं। अतः ये गुणवाचक विशेषण हैं।

गुणवाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम के गुण–दोष, रंग, स्वभाव, दशा, काल और आकार आदि के विषय में बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

कुछ उदाहरण देखो–

गुण – अच्छा, बुरा, सुंदर, मुलायम, मीठा, शुद्ध

आकार – छोटा, बड़ा, लंबा, चौड़ा, मोटा, पतला

रंग – काला, नीला, पीला, बैंगनी, सांवला

स्थान – भारतीय, जापानी, शहरी, ग्रामीण

स्वभाव – गंभीर, कमजोर, शांत, धैर्यवान, झगड़ालू

स्थिति – गरीब, खड़ा, बीमार, सोई हुई

(ख) 1. आज तीस रोज़ों के बाद ईद आई है।

2. इब्राहिम मराठों के दस हजार सिपाहियों का सेनापति था।

3. कबड्डी की टीम में सात खिलाड़ी थे।

4. प्रतिदिन आठ से दस गिलास तक पानी पीना चाहिए।

5. आज मैंने कुछ जूते बना कर देने हैं।

6. गोपू ने सोचा काश! आज ज्यादा उपले बिक जायें।

7. भारत अनेक उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर चुका है।

8. अमरीका में लाला जी ने कुछ पुस्तकें भी लिखीं।

उपर्युक्त वाक्यों में ''तीस'' ,''दस हजार'' ,'' सात'' ,'' दस'' ,'' कुछ'' ,'' ज्यादा'' ,'' अनेक '' तथा '' कुछ'' शब्द क्रमशः रोज़ों, सिपाहियों, खिलाड़ी, गिलास, जूते, उपले, उपग्रह तथा पुस्तकों की संख्या संबंधी विशेषता बता रहे हैं। अतः ये संख्यावाचक विशेषण है।

पहले चार वाक्यों से **निश्चित** तथा अंतिम चार वाक्यों से **अनिश्चित संख्या** का पता चलता है।

संख्यावाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या बताते हैं, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण तथा जिन शब्दों से अनिश्चित संख्या का पता चले, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

कुछ उदाहरण देखो–

एक, दो, दस, सौ, हजार, आदि निश्चित संख्या वाले विशेषण है।

पहला, दूसरा, दसवां आदि क्रम बताने वाले विशेषण है। कुछ, ज्यादा, कई, अनेक, बहुत से आदि अनिश्चित संख्या वाले विशेषण हैं।

(ग) 1. हमारे शरीर में पांच लीटर रक्त होता है।

2. भाखड़ा बांध 226 मीटर ऊंचा है।

3. गोबिंद सागर का क्षेत्रफल 155 वर्ग किलोमीटर है।

4. प्रेमचन्द्र जी ने आधा किलो सेब मांगे।
5. शरीर से थोड़ा रक्त निकालने से शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।
6. थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दूध-चाय की दुकानें थीं।
7. मैंने काबुली वाले से कुछ सौदा खरीदा।
8. यह थोड़ा सा मेवा बच्ची के लिए लाया था।

उपर्युक्त वाक्यों में ''पांच लीटर'' ,''226 मीटर'' ,''155 वर्ग किलोमीटर '', '' आधा किलो'' ,'' थोड़ा'',''थोड़ी-थोड़ी'',''कुछ'' तथा ''थोड़ा सा'' शब्द क्रमशः रक्त, भाखड़ा बांध, गोबिंद सागर का क्षेत्रफल, सेब, रक्त, दूरी, सौदा तथा मेवा की परिमाण संबंधी विशेषता बता रहे हैं। अतः ये परिणाम वाचक विशेषण हैं।

पहले चार वाक्यों से **निश्चित** तथा अंतिम चार वाक्यों से **अनिश्चित** परिणाम का पता चलता है।

परिमाण वाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम की निश्चित परिमाण संबंधी (माप-तोल संबंधी) विशेषता बताते हैं, उन्हें निश्चित परिमाण वाचक तथा जिनसे अनिश्चित परिमाण संबंधी विशेषता पता चले उन्हें अनिश्चित परिमाण संबंधी विशेषण कहते हैं।

कुद उदाहरण देखो-

मापने के :- दो लीटर तेल, एक लीटर डीजल

नापने के :- पांच मीटर कपड़ा, दो किलोमीटर सड़क

तोलने के :- एक किलो सेब, दस किलो चीनी

अनिश्चित परिमाण वाचक :- थोड़ा, कुछ, थोड़ी-सी

(घ) 1. यह घोड़ा आपके पास न रहने दूंगा।
2. यह शेर केवल पिंजरे का शेर था।
3. इस किशोर को पुरस्कार दिया जाए।
4. वह घोड़ा सुंदर और बलवान था।
5. यह दूषित वायु हमारे फेंफड़ों को रोगी बना देती है।
6. यह मेवा बच्ची के लिए लाया था।

उपर्युक्त वाक्यों में ''यह '',''वह '',''इस '',''वह'' ,''यह '' तथा ''यह'' सर्वनाम क्रमशः घोड़ा, शेर, किशोर, दूषित वायु तथा मेवा संज्ञा शब्दों से पहले आकर उनकी विशेषता बता रहे हैं। अतः ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम संज्ञा के पहले आकर उस संज्ञा की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

सार्वमान और सार्वनामिक विशेषण में अंतर

वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर आएं वे सर्वनाम कहलाते हैं और जो शब्द संज्ञा से पहले

लगकर विशेषण का कार्य करें वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

वह पढ़ रहा है। (सर्वनाम)

वह लड़का पढ़ रहा है। (सार्वनामिक विशेषण)

निश्चय वाचक सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण -

निश्चय वाचक सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर है। निश्चयवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, आदि की निश्चितता का बोध कराता है। जबकि सार्वनामिक विशेषण से व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि की विशेषता का पता चलता है।

जैसे-

यह शार्दूल का घर है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

वह स्निग्धा की कार है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

यह घर शार्दूल का है। (सार्वनामिक विशेषण)

वह कार स्निग्धा की है। (सार्वनामिक विशेषण)

प्रविशेषण

कुछ शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं। ऐसे शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे-

क. तूलिका बहुत सुंदर लड़की है।

ख. अत्यधिक काला रंग भी अच्छा नहीं लगता।

ग. शौर्य बहुत मोटा है।

संज्ञा, सर्वनाम की जो विशेषता बतलाए,
विशेषण है वो कहलाए।
गुण, संख्या, सार्वनामिक, परिणाम,
इन चार भेदों से होता है इसका निर्माण।

पाठ–4

कारक

(क)	(ख)
1. राम बाण बाली मारा	1. राम ने बाण से बाली को मारा
2. प्रेमचन्द्र गोदान रचना की	2. प्रेमचन्द्र ने गोदान की रचना की
3. उस फूल तोड़ा	3. उसने फूल तोड़ा

उपर्युक्त '' क '' वाक्यों में आए शब्दों का एक दूसरे से संबंध का ज्ञान नहीं होता और न ही अर्थ स्पष्ट होता है जबकि उपर्युक्त '' ख '' वाक्यों में आए शब्दों का एक दूसरे से संबंध प्रकट होता है। '' ख '' भाग के पहले वाक्य में आए '' ने '' , '' से '', '' को '', चिह्न वाक्य के अन्य शब्दों का आपसी संबंध जोड़ते हैं। इसी प्रकार '' ख '' भाग के दूसरे वाक्य में '' ने '' और '' की '' चिह्न वाक्य में शब्दों का परस्पर संबंध प्रकट कर रहे हैं। '' ख '' भाग के तीसरे वाक्य में '' ने '' और '' को '' चिह्न वाक्य के अन्य शब्दों का परस्पर संबंध जोड़ रहे हैं।

अत: वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों का वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध बताने वाले शब्द रूप को कारक कहते हैं।

कारक विभक्ति

कारकों का रूप प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो चिन्ह लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्ति या कारक चिह्न कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों में प्रयुक्त '' ने '', ''से '', '' को '' तथा '' की '' कारक विभक्ति या चिह्न है।

हिन्दी में आठ कारक प्रयोग में आते हैं–

1. कर्त्ता कारक : मुंशी प्रेमचन्द ने सेब खरीदे।

इस वाक्य में खरीदने का काम मुंशी प्रेमचंद ने किया है। मुंशी प्रेमचंद कर्त्ता हैं। अत: मुंशी प्रेमचंद में कर्ता कारक है।

अतएव वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम के द्वारा क्रिया के करने वाले का पता चले, वहां कर्त्ता कारक होता है।

कर्त्ता कारक के संबंध में विशेष टिप्पणियां

1. वर्तमान काल में कर्त्ता के साथ '' ने '' चिह्न नहीं लगता।

जैसे– बालक गेंद से खेलता है।

2. भविष्यकाल में भी कर्त्ता के साथ '' ने '' चिह्न नहीं लगता।

जैसे– लव–कुश तीर चलाएंगे।

3. अनिवार्यता, आवश्यकता तथा कर्तव्य की ओर ध्यान दिलाते समय ''चाहिए '' तथा '' पड़ना '' क्रियाओं के कर्त्ता के साथ '' को '' चिह्न लगता है। जैसे-

1. मेरी क्यूरी को सेहत का ध्यान रखना चाहिए।
2. लाल बहादुर शास्त्री को मेला देखने के लिए गंगा तैर कर जाना पड़ा था।
3. बच्चों को खेलने जाना है।

4. असमर्थता का भाव दर्शाने के लिए कर्त्ता के साथ ''से '' चिह्न लगता है। जैसे-

1. महन्त से गोवर्धन दास का दु:ख सहा नहीं गया।
2. रोगी से उठा नहीं जाता।

5. कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्त्ता के साथ ''से '', द्वारा या '' के द्वारा '' चिह्नों का प्रयोग होता है। जैसे-

1. मेघावी से पाठ पढ़ा गया।
2. मुंशी प्रेमचंद द्वारा सेब खरीदे गए।
3. श्यामा के द्वारा सब्जी खरीदी जाती है।
4. बच्चे से आम को खाया गया।

कर्म कारक

राजा ने किसान को चाबुक मारे।

यहां क्रिया (मारना) का फल '' किसान'' पर पड़ रहा है और किसान कर्म है। अत: वाक्य में '' किसान को '' में कर्म कारक है।

अतएव वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं।

कर्म कारक के संबंध में विशेष टिप्पणियां

1. कई वाक्यों में दो कर्म होते हैं। एक मुख्य तथा दूसरा गौण कर्म। गौण कर्म के साथ '' को '' चिह्न लगता है तथा मुख्य कर्म के साथ '' को '' चिह्न नहीं लगता। जैसे-

1. मां ने बच्चे को खाना खिलाया
   बच्चे को- गौण कर्म, खाना- मुख्य कर्म
2. राजा ने किसान को चाबुक मारे।
   किसान को- गौण कर्म, चाबुक- मुख्य कर्म
3. गतिवाचक क्रियाओं में स्थान बोधक कर्म के साथ '' को '' चिह्न नहीं लगता। जैसे-
   राहुल आश्रम जा रहा है।

करण कारक

राहुल पेंसिल से लिखता है।

यहां '' लिखता है '' क्रिया का साधन पेंसिल है। अत: जिस साधन से क्रिया सम्पन्न होती वहां करण कारक होता है।

करण कारक में कहीं-कहीं '' द्वारा '' , '' के द्वारा '', '' के जरिए '' चिह्नों का भी प्रयोग होता है। जैसे-

1. टेलिफोन द्वारा सूचना मिलते ही वह चला गया।
2. लाल बहादुर शास्त्री के मित्रों ने नौका के जरिए गंगा पार की।

करण कारक के संबंध में विशेष टिप्पणियां

1. अमूर्त साधन में '' से '' का प्रयोग होता है। जैसे- विचारों से ही चरित्र निर्माण हो सकता है।
   यहां चरित्र निर्माण का काम '' विचार '' अमूर्त रूप में है।
2. शरीर के जिस अंग में विकार (दोष, कमी) हो, वहां '' से '' का प्रयोग होता है।
   ठेले वाला पैर से लंगड़ा था।
3. कार्य के कारण बोधक शब्द में भी '' से '' का प्रयोग होता है। जैसे-
   वह कैंसर से पीड़ित है।

सम्प्रदान कारक

1. हम पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं।
2. राजा गरीबों को धन देता है।

उपर्युक्त पहले वाक्य में ''पढ़ने के लिए '' तथा दूसरे वाक्य में '' गरीबों को '' में सम्प्रदान कारक है क्योंकि '' जाने '' और '' देने '' क्रियाओं का कार्य इनके लिए हुआ है।

अत: जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, वहां सम्प्रदाय कारक होता है।

सम्प्रदान कारक के संबंध में विशेष टिप्पणी

'' के लिए '' के समान अर्थ वाले शब्द भी सम्प्रदान कारक में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- '' के वास्ते '' , '' के निमित्त '' , '' के हेतु '', ''की खातिर'' आदि।

उदाहरण-

1. हमें भूखों के वास्ते भी कुछ सोचना चाहिए।
2. राजा गरीबों के निमित्त योजनाएं बनाता है।
3. हमें अभावग्रस्त लोगों के हेतु कुछ दान देना चाहिए।
4. भगत सिंह ने देश की खातिर जान दी।
5. महात्मा बुद्ध से मिलने के बाद अंगुलिमाल के जीने के अर्थ बदल गए।
6. कपिल मुनि से मिलने के बाद राहुल के जीने के अर्थ बदल गए।

अपादान कारक

मुंशी प्रेमचंद जी बाजार से आये।

उपर्युक्त वाक्य में व्यक्ति का बाजार से अलग होने का अर्थ स्पष्ट हो रहा है। अत:

''बाजार'' में अपादान कारक है।

अत: जिस संज्ञा या सर्वनाम से पृथक्ता अर्थात अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

अपादान कारक के संबंध में विशेष टिप्पणियां

निम्नलिखित भावों को दर्शाने में भी अपादान का प्रयोग होता है-

1. सीखने के अर्थ में - राहुल मुनि से सीखता है।
2. उद्‌भव के अर्थ में - सूर्य पूर्व से उदित होता है।
3. मांगने के अर्थ में - भिखारी ने लेखक से रुपये मांगे।
4. बचाने के अर्थ में - विजय ने गांव वासियों को बाघ से बचाया।
5. लजाने के अर्थ में - बच्चा अध्यापक से लजाता है।
6. डरने के अर्थ में - वह मगरमच्छ से डरता है।

संबंध कारक

मोहन का भाई सुरेश पढ़ रहा है।

इस वाक्य में सुरेश का संबंध ''मोहन से '' है। अत: '' मोहन '' संबंध कारक का उदाहरण है।

अत: जहां दो संज्ञाओं या सर्वनामों का आपस में संबंध प्रकट हो, वहां संबंध कारक होता है।

संबंध कारक के संबंध में विशेष टिप्पणियां

संबंध कारक में का, के, की के अतिरिक्त रा, रे, री तथा ना, ने, नी का भी प्रयोग होता है। जैसे-

रा का प्रयोग - यह मेरा गांव है।
री का प्रयोग - मेरी कार कहां है।
रे का प्रयोग - मेरे पापा चंडीगढ़ में रहते है।
ना का प्रयोग - अपना गांव बहुत दूर है।
नी का प्रयोग - हामिद अपनी दादी का कहना मानता है।
ने का प्रयोग - मैं अपने देश से प्यार करता हूं।

अधिकरण कारक

कपिल मुनि आश्रम में रहते थे।

सेब रेहड़ी पर रखे थे।

पहले वाक्य में '' आश्रम में '' से रहना क्रिया के आधार तथा दूसरे वाक्य में ''रेहड़ी पर '' से रखना क्रिया के आधार का पता चलता है।

अत: '' आश्रम में '' तथा '' रेहड़ी पर'' में अधिकरण कारक है।

अधिकरण कारक के संबंध में विशेष टिप्पणियां

1. निम्नलिखित की अन्त: स्थिति में अधिकरण कारक होता है तथा '' में '' चिह्नों लगता है-

क. स्थान की अंत: स्थिति - यशवंत सिंह जोधपुर में राज्य करते थे।

ख. मूल्य की अंत: स्थिति - प्रेमचंद जी ने दस रुपये में सेब खरीदे।

ग. समय की अंत: स्थिति - एक दिन में चौबीस घंटे होते हैं।

2. तुलना अर्थ में -इन कारों में मारूति प्रसिद्ध कार है।

3. जहां एक वस्तु की दूसरी वस्तु के ऊपर की स्थिति की सूचना दी जाए, वहां अधिकारण कारक में ''पर '' चिह्न लगता है। जैसे-

बच्चे छत पर कूद रहे हैं।

सम्बोधन कारक

हे ईश्वर! गरीबों की भी सुनो।

अरे! सड़क को ध्यान से पार करो।

उपर्युक्त पहले वाक्य में '' हे ईश्वर'' में पुकारने तथा दूसरे वाक्य में '' अरे '' में सावधान करने का भाव प्रकट हो रहा है। अत: '' हे ईश्वर'' तथा '' अरे बच्चों '' में संबोधन कारक है।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप में किसी को सम्बोधित किया जाए या पुकारा जाए, उसमें संबोधन कारक होता है।

उपर्युक्त सभी बातों से स्पष्ट है कि कुछ विशेष प्रयोगों में कारक के विभक्ति चिह्न बदल भी जाते हैं। जैसे कर्त्ता कारक का विभक्ति चिह्न '' ने '' है किंतु गौण रूप से कर्त्ता कारक में '' से '', '' को '', '' द्वारा '', '' के द्वारा'' आदि विभक्ति चिह्नों का प्रयोग भी हो सकता है।

अतएव उपर्युक्त आधार पर सभी कारकों और उनके विभक्ति चिह्नों की तालिका इस प्रकार बनाई जा सकती है-

क्रम	कारक	मुख्य विभक्ति चिह्न	विशेष प्रयोगों (जैसे कि ऊपर टप्पणियों में व्यक्त किया गया है) में प्रयुक्त होने वाले विभक्ति चिह्न
1.	कर्त्ता कारक	ने	0 शून्य अर्थात कई बार कर्त्ता के साथ कोई भी विभक्ति चिह्न नहीं लगता। से, को, द्वारा, के द्वारा।
2.	कर्म कारक	को	0 शून्य अर्थात कई बाद कर्म (अप्राणिवाचक) के साथ 'को' चिह्न नहीं लगता। जैसे- जगदीश अखबार पढ़ता है।
3.	करण कारक	से	के द्वारा, द्वारा, के ज़रिए
4.	सम्प्रदान	के लिए, को	के वास्ते, के निमित्त,के हेतु, की खातिर, के अर्थ
5.	अपादान	से	-
6.	संबंध	का, के, की	रा, रे, री
7.	अधिकरण	में, पर	के ऊपर, ऊपर, के भीतर,के अंदर
8.	संबोधन	हे, रे, अरे	-

पाठ–5

काल

1. मैं पढ़ रहा था।
2. मै पढ़ रहा हूं।
3. मैं पढूंगा।

उपर्युक्त पहले वाक्य में क्रिया हो चुकी है। दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है तथा तीसरे वाक्य में क्रिया प्रारंभ नहीं हुई है। अर्थात् इनसे हमें क्रिया के होने के समय का बोध हो रहा है।

काल

क्रिया के जिस रूप से उसके समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल का भेद

(क) 1. राम ने रावण को मारा।
2. श्वेता ने कहानी पढ़ ली थी।
3. सौरभ सैर कर रहा था।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में क्रिया का बीते हुए समय में होने का बोध हो रहा है। अत: ये भूतकाल के उदाहरण हैं।

भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में किसी कार्य के समाप्त होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।

भूतकाल में छ: भेद हैं–

सामान्य भूत	आसन्न भूत	अपूर्ण भूत
पूर्ण भूत	संदिग्ध भूत	हेतु–हेतुमद् भूत

(ख) 1. अनुज पुस्तक पढ़ रहा है।
2. मैं पत्र लिख रहा हूं।
3. सिमरन खाना बना रही है।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों से पता चलता है कि क्रिया चल रहे समय में हो रही है। अत: ये वर्तमान के उदाहरण हैं।

वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से चल रहे समय में किसी कार्य को करने या होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं-

सामान्य वर्तमान अपूर्ण वर्तमान संदिग्ध वर्तमान

(ग) 1. हम कल अमृतसर जाएंगे।

2. आस्था गाना सुनेगी।

3. वह कार चलाएगा।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में क्रिया का आने वाले समय में होने का बोध हो रहा है। अत: ये भविष्यत्काल के उदाहरण हैं।

भविष्यत्काल

क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं।

भविष्यत्काल के भेद हैं-

सामान्य भविष्यत् संभाव्य भविष्यत्

पाठ-6

क्रिया

अध्यापक पुस्तक पढ़ता है।
बाबा भारती घोड़े को खिलाते हैं।
मैं भी पढ़ने जाऊंगी।
खड़गसिंह का नाम सुनकर लोग कांपते थे।
रूई की पूनियां बनती हैं।
बिना मतलब हार्न न बजाएं।
ठेले वाले ने बच्चे को बैसाखी से मारा।
काबुलीवाले ने मिन्नी को मेवे दिए।
शेर पिंजरे में बंद है।
रेल बाबू ने नहीं पकड़ा ?

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ें और रेखांकित शब्दों पर विचार करें तो हम देखते हैं कि उक्त शब्द पढ़ता, खिलाते, पढ़ने, जाऊंगी, कांपते, बनती, बजाएं, मारा, दिये, बंद है, पकड़ा सभी कोई न कोई काम होने अर्थात क्रिया होने का बोध करा रहे हैं। इस प्रकार के शब्दों को क्रिया कहते हैं भाव

जिन शब्दों से किसी काम का होना या करना पाया जाए उसे क्रिया कहते हैं। जैसे-

हामिद दौड़ता है।
मोहसिन मिठाई खाता है।
भारत ने पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में छोड़ा था।
संगीता दौड़ती है।
गिल्लू चिक चिक की आवाज करता है।

उपर्युक्त वाक्यों में दौड़ता है, खाता है, दौड़ती है, करता है शब्दों से कार्य करने या होने का बोध हो रहा है अत: ये क्रिया शब्द हैं।

अब कुछ और वाक्यों को पढ़ते हैं:-

प्रेमचंद ने सेब खरीदे।
बाबा भारती ने घोड़े को दाना खिलाया।
मेरी धोबिन रोज कपड़े धोएगी।
इस किशोर को पुरस्कार दिया जाए।
तेल के कण पानी में तैरने लगे।
मिन्नी डर गई।
लड़का रोने लगा।
बच्चा सोता है।

महात्मा बुद्ध चल दिए।

फुलकारी खद्दर पर काढ़ी जाती है।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देखते हैं कि क्रिया में दो बातें हो रही हैं। कार्य और फल। क्रिया को करने वाला कर्त्ता कहलाता है और जिस पर क्रिया का फल पड़ता है कर्म कहलाता है। उपर्युक्त वाक्यों में प्रेमचंद ने क्या खरीदा ? उत्तर है सेब, बाबा भारती ने क्या खिलाया- '' दाना '', धोबिन क्या धोएगी- कपड़े, किशोर-पुरस्कार। इन वाक्यों में कर्त्ता का कर्म स्पष्ट है अत: जिन वाक्यों में कर्त्ता का कर्म स्पष्ट पता चलता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। इसी प्रकार अन्य वाक्यों में ''डर गई '' किससे '' रोने लगा क्यों '' चल दिए - कहां'' आदि का उत्तर नहीं मिलता अत: यह क्रियाएं अकर्मक हैं।

इस प्रकार क्रिया के दो भेद हैं :-

1. सकर्मक क्रिया।

2. अकर्मक क्रिया।

अर्थात जिन क्रियाओं का कर्म होता है वे सकर्मक क्रियाएं होती है और जिनका कर्म नहीं होता अकर्मक क्रिया कहलाती है।

अब निम्न वाक्यों को देखते हैं :-

1. अर्जुन ने अकेले ही चक्रव्यूह का भेदन किया।
2. लोहड़ी का त्योहार सारे देश में धूम-धाम से मनाया जाता है।
3. हमने भी रात वहीं विश्राम किया।
4. अंगुलिमाल ने महात्मा बुद्ध का रास्ता रोक लिया।
5. तुमने फिरंगी जुबान पढ़ी है।
6. दुकानदार ने सेब उठाए।
7. बिजली का पंखा अचानक दीवार से टकराया।

इन वाक्यों में रेंखाकित शब्द कार्य का बोध करा रहे हैं। अत: ये क्रिया शब्द है।

इसी प्रकार निम्न वाक्य:-

1. उस समय पंजाब छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था।
2. पठानों की सेना अधिक थी।
3. पक्षी का रक्षक कौन था।
4. समाज के अभाव में मनुष्य निरा पशु ही रहता है।
5. मैं उसकी आवाज सुनकर चौंक पड़ा।

उपर्युक्त वाक्यों में पहला, दूसरा और चौथा वाक्य सकर्मक क्रियाएं हैं। क्योंकि यदि इनसे क्या, किसे, किसको आदि प्रश्न किए जाएं तो उत्तर मिल जाता है जैसे क्या बंटा था- 1. पंजाब, क्या अधिक थी- पठानों की सेना 2. क्या रहता है 3. निरा पशु।

इसी प्रकार तीसरे और पांचवें वाक्य के प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलते अत: यह अकर्मक क्रियाएं हैं।

क्रिया में परिवर्तन

क्रिया शब्द विकारी है। इनमें लिंग, वचन, पुरुष, काल और वाक्य के कारण परिवर्तन होता है जैसे कि निम्न वाक्यों में:-

(क) मिन्नी भीतर दौड़ गई।
(ख) बुढ़िया सास रोने लगी। = स्त्रीलिंग
(ग) मैं भी पढ़ने जाऊंगी।

(घ) लड़का पैंतरा काट कर चल रहा था।
(ड़) छोटा जादूगर खेल दिखा रहा था। =पुलिंग
(च) मिठाईवाला आवाज़ लगाकर मिठाई बेचता था।

अर्थात क्रिया शब्द के दो लिंग-स्त्रीलिंग व पुलिंग शब्द हैं। इसी तरह क्रिया शब्दों के वचन भी परिवर्तित होते हैं। जैसे-

1. महात्मा बुद्ध ने कहा, ''बोल कब ठहरेगा ?'' (एक वचन)
2. हम धर्मशाला में ठहरेंगे (बहुवचन)

इसी तरह क्रिया के जिस रूप से क्रिया करने के समय का बोध हो, काल कहलाता है।

हम ने वैष्णों मां के दर्शन किए।
अकेले भूपेन्द्र सिंह ने सात टैंक नष्ट किए।
गोपू ग्वाले की उपलें लड़कों ने जला दी।

यहां क्रिया का करना बीते समय में हुआ है अतः भूतकाल की क्रिया है।

बच्चा मूंगफली चुराता है।
गिल्लू भागता है।
शेर दहाड़ता है।

इन वाक्यों में क्रिया वर्तमान समय में है अतः वर्तमान काल की क्रिया है। इसी तरह:-

हम मनाली जाएंगे।
मैं भी एक वकील बनूंगी।
स्वस्थ होने पर मैं इसे मौत के घाट उतार दूंगा।

इन वाक्यों में क्रिया भविष्यकाल में होनी है।

पुरुष परिवर्तन :- क्रिया के में जब पुरुष परिवर्तन अर्थात उत्तम, मध्यम या अन्य कर्त्ता के अनुसार परिवर्तन आए उसे पुरुष परिवर्तन कह सकते हैं। जैसे:-

मैं यह घोड़ा तुम्हारे पास न रहने दूंगा। (उत्तम पुरुष)
तुम ससुराल कब जाओगे? (मध्यम पुरुष)
वे रोम के राजदूत थे। (अन्य पुरुष)

इसी प्रकार क्रिया में जिस रूप की प्रधानता अर्थात कर्त्ता, कर्म व भाव तो इसे वाच्य परिवर्तन कहते हैं।

क. बाबा भारती ने अपाहिज को घोड़े पर बिठाया। (कर्तृवाच्य)
ख. लेखक से साइकिल पर चढ़ा नहीं जाता। (कर्म वाच्य)
ग. काबुलीवाले की बात पर मिन्नी से हंसा नहीं जाता। (भाव वाच्य)

पाठ–7

क्रिया विशेषण

लड़का धीरे–धीरे चल रहा था।
वह वहां गया है।
'' क्यों बे तू अंधे पिता को छोड़कर कहां भागा था ?''
'' क्यों आज तुम्हारा लड़का कहां गया ? ''
गहने पहने मिन्नी शर्म से सिकुड़ी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।
महात्मा बुद्ध बोले– '' बोल कब ठहरेगा।''
सहसा सूर्य देव आए।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देखते हैं कि क्रिया शब्द से पहले एक विशेष शब्द आ रहा है जैसे धीरे–धीरे, वहां, कहां क्यों, पास, कब सहसा आदि। ये सभी शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। अत: इन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है। अर्थात यदि क्रिया से हम कब, कहां, कितना और कैसे प्रश्न करें तो हमें क्रिया की विशेषता पता चलेगी और प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे। अत:

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रिया विशेषण कहते हैं।

अब निम्न उदाहरण देखते हैं :–

1. बाबा भारती हर रोज सैर करते थे।
2. ऊपर देखो।
3. सुल्तान तेज दौड़ता है।
4. शेर धीरे–धीरे झोंपड़ी के पास आया।

इन वाक्यों में '' हर रोज '' से समय का पता लग रहा है, ऊपर से स्थान का, तेज से परिणाम का और धीरे–धीरे से ढंग अर्थात रीति का बोध हो रहा है। अत: इन वाक्यों से क्रिया के काल, स्थान, परिणाम तथा रीति की विशेषता का पता चलता है। इसी आधार पर क्रिया विशेषण के चार प्रकार हैं–

1. कालवाचक
2. स्थानवाचक
3. परिणाम वाचक
4. रीति वाचक

1. काल वाचक क्रिया विशेषण

जो क्रिया विशेषण क्रिया में होने वाले समय अर्थात काल का बोध कराते हैं उन्हें काल वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। यह तीन प्रकार की होती है:–

(क) समय संबंधी

अब= अब कोई गरीबों की सहायता से मुंह नहीं मोड़ेगा।

कभी= फिर कभी किसी ने अंगुलीमाल की मारकाट की घटना नहीं सुनी।

अभी= इसे फांसी अभी दे दो।

तत्काल= सैनिक तत्काल चल दिए।

(ख) अवधि संबंधी

दिनभर= बच्चे दिनभर खेलते हैं।

प्रतिदिन = बाबा भारती प्रतिदिन घुड़सवारी करते थे।

सदा = चींटी सदा चलती रहती है।

(ग) बारंबारता संबंधी

प्राय= रामू प्रायः जंगल से जाता था।

हमेशा = हमेशा पढ़ो।

2. स्थान वाचक क्रिया विशेषण

क्रिया के होने वाले कार्य का स्थान बताने वाले शब्द का बोध कराने वाले शब्द को स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–

(क) स्थिति वाचक

यहां = यहां ठहरना ठीक नहीं।

वहां = वहां जादू का खेल हो रहा है।

जहां = वह जहां गया निराश ही लौटा।

बाहर= भारती घोड़े को बाहर ले आए।

भीतर= खड़गसिंह ने घोड़ा चुपचाप भीतर बांध दिया।

पास = कुछ घुड़सवार झोंपड़ी के पास आकर रुके।

एक ओर = एक ओर बाण गंगा बह रही थी।

कहीं = कहीं राखियां हैं चमक है कहीं पर।

(ख) दिशा वाचक

आगे = आगे चलकर हम मण्डी नगर पहुंचे।

इधर–उधर= खिलाड़ियों के शव इधर–उधर पड़े मिले।

दूर= खड़गसिंह के नाम से दूर–दूर तक लोग कांपते थे।

(ग) विस्तार वाचक

सर्वत्र = मुगलों का अत्याचार सर्वत्र फैला था।

चारों ओर = चारों ओर गाड़ियां दौड़ रही थीं।

3. परिमाण वाचक

जिन क्रिया विशेषणों से होने वाले कार्य की मात्रा व परिमाण का ज्ञान हो, परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। इन्हें निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :–

(क) अधिकता वाचक :

बहुत =बिजली से बहुत कारखाने चलते हैं।

पर्याप्त =लाला जी ने छुआछूत मिटाने के लिए पर्याप्त धन इकठ्ठा किया।

काफी = काफी धूम लिए, अब चलो।

पेटभर = पहले पेटभर पकौड़ियां खाऊंगा।

(ख) न्यूनता वाचक:

न्यून / थोड़ा = बहुत थक गए थोड़ा आराम कर लो।

तनिक = छोटा जादूगर तनिक भी नहीं रुका। उसकी मां बीमार थी।

कम = कम बोलना अच्छी बात है।

थोड़ा = थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पढ़कर, तुम ज्ञानी बन सकते हो।

जल्दी = मां ने कहा है कि आज जल्दी आना मेरी घड़ी समीप है।

(ग) तुलनावाचक :

जैसे-तैसे= जैसे ही शेर दिखाई दिया तैसे ही विजय ने गोली चला दी।

ऐसे= '' ऐसे क्यों भाग रहे हो कायरो ''

कैसे= बच्चों को अब पता लगा उपलें कैसे बनते हैं।

इतना = इतना मत कूदो।

उतना = उतना चलो जितना चल सको।

लगभग = खेल लगभग खत्म हो रहा था।

वैसे = वह वैसे ही लंगड़ा कर चल रहा था।

हमारा पहला दिन वैसे हो गया।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया की रीति अर्थात ढंग का बोध कराए वह रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। इसे निम्न भागों में बांटा जा सकता है। यथा:-

(क) प्रकार वाचक

धीरे-धीरे = खड़गसिंह धीरे-धीरे अस्तबल पहुंचा।

ज्यों-ज्यों = ज्यों-ज्यों हमने भयानक जंगल लांघा।

रुक-रुक कर = भक्तों के जयकारे रुक रुक कर सुनाई दे रहे थे।

क्रमश: हमने क्रमश= बाण गंगा, चरणपादुका मंदिर, गर्भवास गुफा, भगवती की तीन पिंडियां व भैरोनाथ मंदिर के दर्शन किए।

अकस्मात = अक्समात शेर के माथे पर से चांदी सी बूंदें टपकी।

सामान्यतया = लोग दर्शन के बाद साधारणतया कन्या पूजन करते हैं।

सहसा = सहसा बिजली चमकी।

कभी-कभी = कभी-कभी मसूढ़ों से खून बहने लगता है।

जल्दी-जल्दी = जल्दी-जल्दी चलो, शाम होने वाली है।

इस प्रकार क्रिया विशेषण के उपर्युक्त चार भेद हैं।

पाठ-8

विशेषण निर्माण

1. श्री लाल बहादुर शास्त्री अपने दृढ़ निश्चय के लिए प्रसिद्ध है।
2. भगत सिंह ने केन्द्रीय विधानसभा में बम फैंक कर अंग्रेजों को जगाया।
3. आर्यभट्ट एक सफल वैज्ञानिक प्रयोग था।
4. हामिद ने कहा, चिमटा बिकाऊ है या नहीं।
5. मेजर भूपेन्द्र सिंह के लिए श्री लाल बहादुर शास्त्री पूज्य थे।

उपर्युक्त रेखांकित शब्द विशेषण हैं। हम जानते हैं कि संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। विशेषण निर्माण मूल शब्दों से बनते हैं। जैसे- ऊपर के वाक्यों में दृढ़ता से दृढ़, केन्द्र से केन्द्रीय, विज्ञान से वैज्ञानिक, बिकना से बिकाऊ और पूजा से पूज्य।

कुछ मूल शब्द मूल रूप से विशेषण होते हैं जैसे- लाल, पीला, अच्छा, मोटा, पतला, काला आदि तथा कुछ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है। जैसे-

इक प्रत्यय होने पर आदि स्वर अ का आ बनना:-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**	**मूल शब्द**	**विशेषण शब्द**
अर्थ	आर्थिक	शरीर	शारीरिक
प्रकृति	प्राकृतिक	समाज	सामाजिक
मास	मासिक	वर्ष	वार्षिक
वर्ष	वार्षिक	संसार	सांसारिक
साहित्य	साहित्यिक	समूह	सामूहिक
धर्म	धार्मिक	परिश्रम	पारिश्रमिक
पक्ष	पाक्षिक	मन	मानसिक
समय	सामयिक	हृदय	हार्दिक
नगर	नागरिक	सम्प्रदाय	साम्प्रदायिक

कई शब्दों में '' इक '' प्रत्यय होने पर आदि स्वर इ, ई, ए का ऐ हो जाता है जैसे:-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**
इतिहास	ऐतिहासिक
वेद	वैदिक
विज्ञान	वैज्ञानिक
नीति	नैतिक

दिन दैनिक

इस तरह ''इक'' प्रत्यय होने पर आदि स्वर उ, ऊ, ओ का औ हो जाता है जैसे :-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**
मुख	मौखिक
उद्योग	औद्योगिक
बुद्धि	बौद्धिक
योग	यौगिक

कुछ शब्दों में ''इत'' प्रत्यय लगकर विशेषण निर्माण होता है जैसे:-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**
नियम	नियमित
प्रभाव	प्रभावित
पुरस्कार	पुरस्कृत

जब संज्ञा शब्दों के अंत में '' आ '' स्वर लगा होता है, वहां '' इत '' प्रत्यय होने पर अंतिम '' आ '' स्वर लोप हो जाता है जैसे:-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**	**मूल शब्द**	**विशेषण शब्द**
सुरक्षा	सुरक्षित	लज्जा	लज्जित
रक्षा	रक्षित	चिन्ता	चिंतित
विकास	विकसित		

कुछ शब्दों में अंत में '' य '' वर्ण होता है वहां '' इत '' प्रत्यय होने पर '' य '' का लोप हो जाता है। जैसे:-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**
मानव	मानवीय
भारत	भारतीय
केन्द्र	केन्द्रीय
स्मरण	स्मरणीय
देश	देशीय

कुछ शब्दों के अंत में '' आ '' स्वर होता है, वहां '' ईय '' लगाने पर '' आ '' का लोप हो जाता है। जैसे-

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**
पूजा	पूजनीय
दया	दयनीय
प्रशंसा	प्रशंसनीय

आत्मा	आत्मीय
वंदना	वंदनीय
पतन	पतनीय

इसी तरह कुछ शब्दों के साथ '' ई '' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनते हें। जैसे–

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**	**मूल शब्द**	**विशेषण शब्द**
विरोध	विरोधी	गुलाब	गुलाबी
चालाक	चालाकी	आधा	आधी
खराब	खराबी	सफेद	सफेदी
काला	काली	सुनहरा	सुनहरी
खड़ा	खड़ी	बहादुर	बहादुरी
विदेश	विदेशी	लम्बा	लम्बाई
लोभ	लोभी	धन	धनी
कमजोर	कमजोरी	अत्याचार	अत्याचारी
बीकानेर	बीकानेरी	चोर	चोरी
पंजाब	पंजाबी	यात्रा	यात्री
बसंत	बसंती	उद्यम	उद्यमी

क्रिया शब्दों की विशेषण रचना निम्न प्रकार से बनाई जा सकती है। जैसे:–

मूल शब्द	**विशेषण शब्द**
बेचना	बिकाऊ
पढ़ना	पढ़ाकू
भूलना	भुल्लकड़
भागना	भगोड़ा

भाव वाचक संज्ञा शब्दों के प्रत्यय हटाकर विशेषण रचना हो जाती है जैसे :–

भाव वाचक संज्ञा	**विशेषण**
चंचलता	चंचल
योग्यता	योग्य
उष्णता	ऊष्ण
प्रसन्नता	प्रसन्न
श्रेष्ठता	श्रेष्ठ
स्वादिष्ट	स्वाद
हत्यारा	हत्या
दृढ़ता	दृढ़
संध्या	सांध्य

मिठास	मीठा
मुक्ति	मुक्त

श, ईला, लू, यी, इम प्रत्यय लगाकर बनने वाले विशेषण

शब्द	**विशेषण**	**शब्द**	**विशेषण**
रंग	रंगीला	घर	घरेलू
चमक	चमकीला	जादू	जादूयी
विष	विषैला	स्वर्ण	स्वर्णिम
फुर्ती	फुर्तिला		

विशेषण रचना में ध्यान योग्य बात है कि एक शब्द के एक से अधिक विशेषण भी हो सकते हैं। जैसे:-

शब्द	**विशेषण**
शोभा	शोभित, शोभायमान
प्रतिभा	प्रतिभावान, प्रतिभाशाली
शक्ति	शक्तिशाली, शक्तिमान
कर्म	कर्मी, कर्मशील
पूजा	पूज्य, पूजनीय, पूजित

इस प्रकार हम संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय शब्दों से विशेषण रचना कर सकते हैं।

पाठ–9

सम्बम्ध बोधक

1. हामिद ने चिमटा कंधे के ऊपर रख लिया।
2. हामिद का अमीना के सिवा और कौन है ?
3. कुछ घुड़सवार उसकी झोंपड़ी के सामने आकर रुके।
4. परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती।
5. महात्मा बुद्ध के मुंह पर तेज था।
6. वह फूल के समान कोमल थी।
7. वे मंदिर के भीतर गये।
8. मेरे पीछे मत आओ।

उपर्युक्त वाक्यों में ऊपर, सिवा, सामने, बिना, पर, समान, भीतर तथा पीछे शब्द क्रमशः '' कन्धे '', '' अमीना '', '' झोंपड़ी '', '' परिश्रम '', '' मुंह '', '' फूल '', '' मंदिर '', संज्ञा शब्दों तथा '' मेरे '' सर्वनाम शब्द के साथ आये हैं तथा इनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बता रहे हैं। अतः ये संबंधबोधक है।

अतएव जो अविकारी या अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकार उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

संबंधबोधक शब्दों के भेद

(1) **कालवाचक :** **पहले :** परीक्षा से पहले खूब तैयारी करो।
बाद : परीक्षा के बाद ही विश्राम करो।
आगे: बगीचे के आगे कुंआ है।
पीछे : रामू झाड़ियों के पीछे छिप गया।

(2) **स्थानवाचकः** **बाहर :** शेर पिंजरे के बाहर आ गया।
भीतरः शेर पिंजरे के भीतर था।
ऊपर : भवन के ऊपर झंडा फहरा रहा था।
नीचे : काली कलकत्ते वाली देवी के पैरों के नीचे राक्षस है।
बीच : शीश महल के बीच सरोवर बना है।

(3) दिशावाचक **निकट :** खूंखार बाघ के निकट मत जाओ।
पास : हमारे स्कूल के पास जामुन के पेड़ लगे हैं।
सामने : किले के सामने दर्शनी दरवाजा है।
ओर : सभी लोग पिंजरे की ओर देख रहे थे।
तरफ : विजय ने गाय के शव की तरफ निशाना साध लिया।

(4) विरोध सूचक : विरुद्ध : क्षत्रिय ने ब्राह्मण के विरुद्ध हथियार नहीं उठाया।

(5) समतासूचक : अनुसार : हमें गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं के अनुसार ही जीवन जीना चाहिए।
सदृश : लव कुश ने क्षत्रियों के सदृश ही वीरता दिखाई।
समान : भगतसिंह के समान देशभक्त बनो।
तरह : इब्राहिम बहादुरों की तरह शत्रुओं से लड़ा।

(6) हेतुवाचक: **रहित :** गुणों से रहित व्यक्ति सम्मान नहीं पाता।
अतिरिक्त : राम के अतिरिक्त सभी पहुंच गए हैं।
सिवा : हामिद के सिवा सभी ने मिठाई खाई।

(7) सहचरसूचक : **समेत:** लवकुश ने लक्ष्मण समेत सैनिकों को घायल कर दिया।
संग : बुरे लोगों का संग मत करो।
साथ : हामिद मित्रों के साथ मेले में गया।

1. नीचे लिखे वाक्यों में से संबंधबोधक शब्द चुनकर उनको रेंखाकित करें।
(क) राम के साथ लक्ष्मण भी वन को गए।
(ख) उसके निकट कौन खड़ा है ?
(ग) कमरे के बाहर बैठ जाओ।
(घ) मेरे सामने से दूर हट कर बैठो।
(ङ) उसके समान कक्षा में कोई लायक नहीं है।

(2) नीचे लिखे शब्दों को संबंधबोधक के रूप में प्रयोग करके वाक्य बनाओ।
(क) आगे : लेखक की साइकिल के आगे तांगा आ गया।
(ख) पीछे : पुलिस चोर के पीछे लगी है।
(ग) भीतर : विद्यालय के भीतर जाओ।
(घ) अनुसार : गांधी जी की शिक्षा के अनुसार चलें।
(ङ) तरह : उसका मुख गुलाब की तरह खिला है।

पाठ–10

योजक

1. चार्वी और मेधावी दोनों बहनें हैं।
2. आप चाय पीयेंगे अथवा कॉफी पीयेंगे।
3. खूब पढ़ो ताकि पास हो जाओ।
4. वह पढ़ता तो था परंतु पास नहीं हुआ।

उपर्युक्त वाक्यों में '' और '', '' अथवा '', '' ताकि '' तथा '' परंतु '' शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं अत: ये योजक हैं।

अतएव जो शब्द दो शब्दों, दो शब्दांशों या दो वाक्यों को जोड़ते है, उन्हें योजक कहते हैं। इन्हें समुच्चयबोधक भी कहते है।

योजक के भेद

(क)	(ख)
1. सीता पढ़ रही थी और सुमित्रा सो रही थी।	1. उसे मैच देखना था इसलिए वह स्टेडियम गया है।
2. आप हिन्दी विषय रखेंगे या पंजाबी।	2. अगर वह आ जाता तो उसे नौकरी भी मिल जाती।
3. मोहनीश इस गाड़ी से आने वाला था परंतु वह नहीं आया।	3. उसने ठीक किया जो वहां चला गया।
4. बारिश बहुत थी अतएव वह घर से नहीं निकला।	4. अध्यापक मेहनत से पढ़ाते हैं जिससे कि विद्यार्थी पास हो सके।

उपर्युक्त '' क '' भाग के वाक्यों में जो समान स्थिति वाले अर्थात स्वतंत्र शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, वे समानाधिकरण योजक हैं।

जैसे '' क '' भाग के पहले वाक्य में आया योजक शब्द – और
दूसरे वाक्य में आया योजक शब्द – या
तीसरे वाक्य में आया योजक शब्द – परंतु
चौथे वाक्य में आया योतक शब्द – अतएव

अतएव '' और '', '' या '', '' परंतु '' तथा '' अतएव '' समानाधिकरण योजक हैं।

इसी तरह '' ख '' भाग के वाक्यों में जो शब्द एक या अधिक आश्रित वाक्यों को मुख्य वाक्य से जोड़ते हैं, उन्हें व्यधिकरण योजक कहते हैं।

'' ख '' से पहले वाक्य में आए योजक शब्द – '' इसलिए''

दूसरे वाक्य में आए योजक शब्द – '' अगर.....तो ''

तीसरे वाक्य में आया योजक शब्द – '' जो ''

चौथे वाक्य में आया योजक शब्द – '' जिससे कि ''

अतएव '' इसलिए '', '' अगर....तो '', '' जो '' तथा '' जिससे कि '' व्यणिकरण योजक है।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर समानाधिकरण तथा व्यधिकरण योजकों के चार-चार उपभेद हैं-

समानाधिकरण के प्रकार

1. संयोजक : मुनीश ने रोटी खाई और सो गया।

इसमें ''और '' शब्द वाक्य में जोड़ने का कार्य कर रहा है अत: ''और'' संयोजक है।

अन्य संयोजक शब्द : एवं, व, तथा आदि । इनका वाक्यों में प्रयोग देखिए:

1. राम, लक्ष्मण एवं सीता वन को गए।
2. सीता पढ़ रही थी व सुनीता सो रही थी।
3. वह लिख रहा था तथा मैं पढ़ रहा था।

2. विकल्प सूचक : आप चाय पीएंगे अथवा कॉफी पीऐंगे।

उपर्युक्त वाक्य में आए ''अथवा '' शब्द से विकल्प का बोध हो रहा है। अतएव यह विकल्पसूचक योजक है। अतएव ऐसे शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों में विकल्प प्रकट करें, वे विकल्पसूचक योजक कहलाते हैं।

अन्य विकल्पसूचक शब्द : चाहे, या आदि।

वाक्यों में प्रयोग देखिए :

1. यहां बैठकर पढ़ो चाहे वहां बैठ कर पढ़ो।
2. आप कल आएंगे या नहीं आएंगे।

3. विरोध सूचक : उसने कल आना था पर नहीं आया।

उपर्युक्त वाक्य में आए '' पर'' शब्द से पहले वाक्यांश (उसने कल आना था) से विरोध प्रकट हो रहा है। अत: यहां '' पर'' विरोधसूचक योजक है।

अतएव ऐसे शब्द जो पहले वाक्याशों /वाक्यों का दूसरे वाक्यांशों / वाक्यों से विरोध प्रकट करें वे विरोधसूचक योजक कहलाते हैं।

अन्य विरोधसूचक शब्द :-

परंतु, लेकिन, मगर, किन्तु आदि ।

वाक्यों में इनका प्रयोग देखिए :-

1. वह आपकी प्रतीक्षा करता था परंतु आप नहीं आए।
2. वह आया तो था लेकिन जल्दी ही चला गया।
3. उसने प्रतियोगिता में भाग तो लिया मगर इनाम नहीं मिला।
4. पक्का रास्ता है तो लम्बा, किन्तु इधर से जाने में आसानी थी।

4. परिणाम सूचक :उसने मेहनत की थी अत: प्रथम आया।

उपर्युक्त वाक्य में अत: योजक शब्द पहले वाक्यांश का परिणाम का बोध करा है। इसलिए यहां '' अत: '' परिणामसूचक शब्द है।

अतएव जो शब्द पहले वाक्य का परिणाम या फल दूसरे वाक्य में बताएं, वह परिणामसूचक योजक होता है।

अन्य परिणामसूचक शब्द : इसलिए, अतएव।

वाक्यों में प्रयोग देखिए :

1. मीरा बीमार थी इसलिए वह स्कूल नहीं गई।
2. ठण्ड बहुत थी अतएव वह घर से नहीं निकला।

व्याधिकरण योजक के भेद

1. कारणसूचक : संगीता आज स्कूल नहीं आयी, क्योंकि वह बीमार थी।

उपर्युक्त वाक्य में '' क्योंकि '' शब्द से शुरू होने वाले आश्रित उपवाक्य से पहले आए प्रधान वाक्य के कार्य (स्कूल नहीं आई) का कारण (क्योंकि वह बीमार थी) दूसरे वाक्य में प्रकट हो रहा है।

अत: 'क्योंकि' शब्द कारणसूचक योजक है।

अतएव जिन शब्दों से पहले वाक्य के कार्य का कारण दूसरे वाक्य में होता है वे कारणसूचक योजक होते हैं।

अन्य कारण सूचक योजक – इस कारण, इसलिए आदि

इन वाक्यों में प्रयोग देखिए:–

1. उसे राशन खरीदना था इसलिए वह बाजार गया है।
2. उसे अपने मित्र से मिलना है इस कारण वह जा रहा है।

2. संकेतसूचक : यदि पह पढ़ता तो पास हो जाता।

उपर्युक्त वाक्य में '' यदि '' योजक शब्द से शर्त (यदि वह पढ़ता) का पता चलता है तथा दूसरे वाक्य में उसके फल (तो पास हो जाता) का पता चलता है।

अत: ये संकेतसूचक शब्द है।

अतएव जो योजक शब्द संकेत अथवा शर्त बताकर दूसरे उपवाक्य में उसका फल संकेतित करें, उन्हें संकेतसूचक योजक कहते हैं।

अन्य संकेतसूचक शब्द :

अगर.....तो, यद्यपि.....तथापि, चाहे....फिर भी, यदि.....तो आदि।

वाक्यों में इनका प्रयोग देखिए :

1. अगर वह दादी को चिमटा दे देगा तो वह बहुत प्रसन्न होगी।
2. यद्यपि मेरी क्यूरी अस्वस्थ रहती थी तथापि उसने अपनी पढ़ाई पूरी की।
3. चाहे वह कितना जोर लगा ले फिर भी पहलवान को हरा नहीं पाएगा।
4. यदि हम प्रात:काल पांच बजे उठते हैं तो हम अपने में ताज़गी अनुभव करते हैं।

3. स्वरूप सूचक : वह अहिंसावादी अर्थात गांधी जी के सिद्धांतों का समर्थक है।

उपर्युक्त वाक्य में अर्थात शब्द दो उपवाक्यों को इस तरह जोड़ रहा है कि इससे पहले उपवाक्य (वह अहिंसावादी) का स्वरूप दूसरे उपवाक्य (गांधी जी के सिद्धांतों का समर्थक है) से स्पष्ट हो रहा है।

अत: जो शब्द दो उपवाक्यों को इस तरह जोड़ें कि पहले वाक्य का स्वरूप दूसरे वाक्य से ही स्पष्ट हो, वे स्वरूपसूचक कहलाते हैं।

अन्य स्वरूपसूचक शब्द : जो, मानो आदि।

इनका वाक्यों में प्रयोग देखिए :

1. उसने ठीक किया जो वहां चला गया।
2. ऐसा लगा मानो तेज आंधी आयेगी।
3. हामिद ने चिमटे को इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक हो।

4. उद्देश्य सूचक : वह इसलिए नहीं गया कि कहीं उसका अपमान न हो जाये।

उपर्युक्त वाक्य में '' कि '' योजक शब्द के बाद आने वाला वाक्य (कहीं उसका अपमान न हो जाए) अपने से पहले वाक्य (वह इसलिए नहीं गया) का उद्देश्य प्रकट कर रहा है। अत: '' कि '' उद्देश्य सूचक योजक है। अतएव जिन योजक शब्दों से एक वाक्य का उद्देश्य दूसरे वाक्य में प्रकट हो, उसे उद्देश्यपूर्ण योजक कहते हैं।

अन्य उद्देश्यसूचक शब्द : ताकि, जिसके कि

इनका वाक्यों में प्रयोग देखिए :

1. खूब पढ़ो ताकि प्रथम आ जाओ।
2. मजदूर दिन रात कमाता है जिससे कि उसके बच्चे भी पढ़ लिख सकें।

1. नीचे लिखे वाक्यों में योजक शब्द की पहचान करके उसे रेखांकित करो–

(क) लव और कुश भगवान राम के पुत्र थे।

(ख) यद्यपि वह परिश्रमी है तथापि वह बुद्धिमान नहीं है।

(ग) यह बेबस तथा असहाय था।

(घ) तुम व्यायाम नहीं करते, इसलिए बीमार रहते हो।

(ङ) यदि काम न करोगे तो वेतन कैसे पाओगे।

2. निम्नलिखित योजक शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाएं ।

(क) यद्यपि.....तथापि

यद्यपि दुल्ला डाकू अमीरों के प्रति क्रूर था तथापि गरीबों के प्रति दयालु था।

(ख) जो .....सो

जो करेगा सो भरेगा।

(ग) चाहे.....फिर भी

चाहे वह गरीब है फिर भी ईमानदार है।

(घ) अगर..... तो

अगर लड़के के पैरों में बेड़ी न होती तो वह दुर्घटना का शिकार न होता।

(ङ) जैसा..... वैसा

जैसा करोगे वैसा भरोगे

(च) क्योंकि ..... इसलिए

क्योंकि लेखक के मन में डर था इसलिए वह साइकिल चलाना न सीख सका।

3. निम्नलिखित शब्दों को योजक के रूप में अपने वाक्य में प्रयुक्त करो–

तथा : लंगड़ा चल नहीं सकता था तथा अंधा देख नहीं सकता था।

और : ब्रूस ने परिश्रम की महत्ता को जाना और वह अपने देश की ओर चल दिया।

अथवा : आप चाय पीएंगे अथवा कॉफी।

पर : लेखक ने साइकिल चलाना सीखने की बहुत कोशिश की पर उसे साइकिल चलाना नहीं आया।

एवं : अंधा एवं लंगड़ा दोनों मित्र थे।

या : दांतों को ब्रुश पर टूथपेस्ट लगाकर साफ करो या टूथ पाऊडर से साफ करो।

बल्कि : वह पास ही नहीं बल्कि प्रथम आकर दिखाएगा।

अर्थात : वह अहिंसावादी अर्थात गांधी जी के सिद्धांतों का समर्थक है।

पाठ–11

वाच्य

वाच्य का अर्थ है– बोलने का विषय। अत: क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्त्ता है, कर्म है अथवा भाव है उसे वाच्य कहते हैं।

उदाहरण:–

राम खेल रहा है।

इस वाक्य में खेलने का मुख्य विषय '' राम '' अर्थात कर्त्ता है। इसलिए यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

वाच्य के भेद

वाच्य के तीन भेद हैं।

1. कर्तृवाच्य (Active Voices)

श्याम लिखता है।

सीता पुस्तक पढ़ती है।

इन दोनों वाक्यों में कर्त्ता ही वाक्य का केन्द्र बिन्दु है। अत: क्रिया के जिस रूप से कर्ता के व्यापार का पता चले उसे कर्तृवाच्य कहते हैं या जिसका केन्द्र कर्ता होता है उसे कर्त्तृवाच्य कहते हैं।

2. कर्मवाच्य (Passive Voice)

जिस वाक्य में केन्द्र बिन्दु कर्त्ता न होकर कर्म हो उसे कर्म वाच्य कहते हैं। जैसे–

गीता ने गीत गाया।

पतंग उड़ रही है।

रोगी को दवाई दे दी गई।

इन तीनों वाक्यों में क्रमश: गीत, पतंग और दवाई कर्म है और यही अपने–अपने वाक्य के केन्द्र बिन्दु हैं। अत: ये कर्मवाच्य है।

3. भाववाच्य (Impersonal Voice)

जिस वाक्य में कर्त्ता या कर्म की प्रधानता न होकर क्रिया का भाव प्रमुख हो, उसे भाव वाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में क्रिया सदा एकवचन पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है।

मोहन से चला नहीं जाता।

नेहा से रोया नहीं जाता।

इन वाक्यों में चला, रोया क्रियाएं ही प्रमुख हैं। अत: ये भाव वाच्य है।

पाठ–12

विस्मयादि बोधक चिह्न

1. अहा! कैसा सुंदर दृश्य है।
2. हाय! मैं तो लुट गया।
3. वाह! क्या मधुर आवाज है।
4. शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया।

ऊपर दिए वाक्यों में '' अहा '', '' हाय '', ''शाबाश'' आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं।

अर्थात जो शब्द अचानक मुख से निकल कर, हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य, ग्लानि आदि मनोभावों को प्रकट करें उन्हें विस्मयादि बोधक कहते हैं। इन शब्दों के बाद जो चिह्न (!) लगाते हैं उसे विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

कुछ विस्मयादि बोधक शब्द निम्नलिखित हैं।

1. हर्ष बोधक विस्मयादि बोधक शब्द :- अहा ! , वाह-वाह! , शाबाश! , वाह! ।
2. शोक (दु:ख) बोधक विस्मयादि बोधक शब्द :- हाय!, उफ!, बाप रे!, राम-राम!।
3. घृणा (नफरत) बोधक विस्मयादि बोधक शब्द :- छि:!छि:!, धिक्!, धत्!, अरे हट!।
4. विस्मय (हैरानी) बोधक शब्द :- हैं!, अरे!, क्या!, ओह!।
5. स्वीकार बोधक विस्मयादि बोधक शब्द- हां! हा!, अच्छा!, जी हां, ठीक!।
6. चेतावनी बोधक विस्मयादि बोधक शब्द :- सावधान!, होशियार!, खबरदार!।

कुछ और उदाहरण

1. काश! मैं भगत सिंह जैसा देश भक्त होता।
2. खबरदार! कोई आगे कदम न बढ़ाएं।
3. सावधान! आगे खतरा है।
4. होशियार! आगे मुगल सेना छुपी है।
5. अच्छा! उस चूने वाले को बुलाओ।
6. भला! राम के सिवा और कौन यह काम कर सकता है।
7. ठीक! बेटी तुम भी पढ़ने जाओगी।
8. दुर! कितनी गंदगी फैला रखी है।
9. ऐं! तुम दोनों भाई-बहन हो।
10. अहो! तुम जरूर पास हो जाओगे।
11. बाप रे! इतनी अंधेरी गुफा।
12. उफ! इब्राहिम घायल हो गया।
13. ओहो! तुमने अश्वमेध घोड़ा पकड़ लिया।
14. हैं! यह तो अश्वमेध है।

श्रेणी–छठी

1. नीचे लिखे विस्मय बोधक चिह्नों की पहचान करें।

(क) काश! आज ज्यादा उपले अगर बिक जाए..।

(ख) हाय! मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था।

उत्तर :- **(क)** काश! **(ख)** हाय!

श्रेणी आठवीं (पाठ–27)

नीचे लिखे वाक्य में रिक्त स्थान निर्दिष्ट शब्द रूपों से भरें–

क. ..... है, उसकी बुद्धि पर।

उत्तर–धिक्कार।

पाठ–13

विराम चिह्नों

बोलते समय अपने भावों की स्पष्टता के लिए वाक्य के बीच–बीच रुकना पड़ता है। लिखते समय उन्हीं स्थानों पर विराम चिह्नों का प्रयोग होता है।

विराम चिह्नों के प्रयोग से बोलने की गति में भी परिवर्तन होता है। अत: भाषा को सुंदर व स्पष्ट बनाने हेतु भी विराम चिह्नों का प्रयोग होता है।

जैसे–

रोको, मत जाने दो।

रोको मत, जाने दो।

इन वाक्यों को ध्यान से देखें तो मात्र विराम चिन्ह के प्रयोग होने से वाक्य का पूरा अर्थ ही बदल गया। इसलिए विराम चिन्हों का बहुत महत्व है। भाषा की सुंदरता स्पष्टता के लिए इन का प्रयोग जरूरी है।

पाठ व अभ्यास में से उदाहरण

कक्षा छठी

1. अल्प विराम:–(,) इस का अर्थ है थोड़ा। पढ़ते समय जहां थोड़े समय के लिए रुकना हो उसे अल्प विराम कहते हैं।

जैसे– राम, देव और हरि जाते हैं।

लेते हैं दुर्गंध, सुगंध लुटाते हैं।

2. पूर्ण विराम:– (।) वाक्य की समाप्ति पर ठहराव प्रकट करने के लिए पूर्ण विराम चिह्न कहा जाता है।

जैसे– सदा सच बोलो।

चार लगाओ, चाहे हजार लगाओ, पेड़ लगाओ।

3. प्रश्न वाचक:– (?) जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है, वहां प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे– नहीं जानते उनकी क्यों पूजा होती है ?

शंकर को भला और क्या चाहिए था ?

गिद्दा किसका नाच है ?

प्रेमचंद हिन्दी में क्या लिखते थे ?

तुम्हारा क्या हाल है ?

4. विस्मयादि बोधक :– (!) वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय और भय आदि के भावों को प्रकट करने वाले शब्दों के बाद जिस चिह्न का प्रयोग होता है। उसे विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं। **जैसे–**

हाय! वह चल बसा।

बाप रे! कितना अंधेरा है ?

हे राम! मेरी रक्षा करो।
तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है मोहन।
अरे मोहन! इधर आकर बैठ जाओ।
वाह! तूने तो कमाल कर दिया।
गुरु जी! मैं दादा जी से सुना था।

5. निर्देशक :- (-) संवाद लिखते समय वक्ता के आगे जिस चिह्न का प्रयोग होता है, उसे निर्देशक चिन्ह कहते हैं।

जैसे-

गोवर्धवदास - क्यों भाई बनिए, आटा कितने सेर ?
बनिया - टके सेर।
फरियादी - दोहाई महाराज, दोहाई है,
राजा - बोलो, क्या हुआ ?

6. योजक :- (-) इस चिह्न का प्रयोग दो व्यक्तियों या भावों को जोड़ने के लिए 'और' शब्द के स्थान पर होता है।

जैसे-

माता-पिता की आज्ञा मानो।
दिन-रात मेहनत करो।

7. कोष्ठक चिह्न:- (()) किसी पद कर अर्थ स्पष्ट करने के लिए जिस चिह्न का प्रयोग होता है, उसे कोष्ठक चिन्ह कहते हैं।

जैसे-

प्रधानमंत्री (सरदार मनमोहन सिंह)
नेता जी (सुभाष चन्द्र बोस) की मौत विमान दुर्घटना में हुई।
मैं बिना देरी के (शीघ्र) आ जाऊंगा।

8. उद्धरण चिह्न :- (" ") वक्ता द्वारा कही गई बात को वैसे ही लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे-

झट बोला, " बाबू जी! बड़े स्वादिष्ट सेब हैं।"
गुरु तेग बहादुर ने कहा- "समय किसी महापुरुष का बलिदान चाहता है।"
"पिता जी ! आपसे बढ़कर बलिदान योग्य कौन हो सकता है ?"
उसने पूछा, "क्या चाहिए ?"

9. लाघव चिन्ह :- (.) कई बार शब्द पूरा नहीं लिखा जाता अपितु उसका एक अंश लिखकर लाघव चिह्न लगा दिया जाता है।

जैसे-

डॉ. (डॉक्टर)
गो. दा. (गोवर्धन दास)

10. विवरण चिह्न :- (:-) इसका प्रयोग निर्देशक के स्थान पर ही होता है।
जैसे-
कविता का सार लिखें :-

11. त्रुटि पूरक :- (‸) लिखते समय कोई शब्द या वाक्य का कोई अंश त्रुटि से लिखना भूल जाएं तो इस चिह्न का प्रयोग होता है।
जैसे- मैं कल   गया था।   मैं कल घर गया था।

उत्तर सहित

पाठ-20 (कक्षा-7)

विराम चिह्न लगाइए:-

नहीं रक्तदान करने वाला व्यक्ति अपने लाभ के लिए रक्तदान नहीं करता उस का ध्येय तो मानवता की सेवा करना है पर कुछ लोभी व्यक्ति अपना रक्त बेचते भी हैं कुछ लोगों ने इसे अपना व्यवसाय भी बना लिया है यह बहुत गलत काम है अध्यापक ने उत्तर दिया।

उत्तर :-

नहीं, रक्तदान करने वाला व्यक्ति, अपने लाभ के लिए रक्तदान नहीं करता। उसका ध्येय तो मानवता की सेवा करना है। पर कुछ लोभी व्यक्ति, अपना रक्त भी बेचते हैं। कुछ लोगों ने इसे अपना व्यवसाय भी बना लिया है। यह बहुत गलत काम है, अध्यापक ने उत्तर दिया।

पाठ- 22

विराम चिह्न लगाइए :-

इतने में काबुलीवाले काबुलीवाले कहते हुई मिनी घर से निकल कर आई रहमत का चेहरा क्षणभर के लिए खिल उठा मिनी ने आते ही पूछा तुम ससुराल जाओगे रहमत ने हंस कर कहा हां वहीं तो जा रहा हूं।

उत्तर:-

इतने में " काबुली वाले, काबुली वाले" कहती हुई मिनी घर से निकल कर आई। रहमत का चेहरा क्षणभर के लिए खिल उठा। मिनी ने आते ही पूछा, " तुम ससुराल जाओगे ?" रहमत ने हंसकर कहा "हां, वहीं तो जा रहा हूं।"

पाठ-29

विराम चिह्न :-

पुलिस कर्मचारी ने स्वयं इशारे करके समझाया कि कब रुकना है और कब चलना है फिर उसने पूछा क्या आपने सड़क पर लगे कुछ बोर्ड देखे हैं जिन पर कुछ संकेत बने होते हैं रमेश उठकर बोला हां सर ऐसा एक बोर्ड हमारे स्कूल के पास भी लगा है।

उत्तर:-

पुलिस कर्मचारी ने स्वयं इशारे करके समझाया कि कब रुकना है कब चलना है। फिर उसने पूछा- ''क्या आपने सड़क पर लगे कुछ बोर्ड देखे हैं, जिन पर कुछ संकेत बने होते हैं ?'' रमेश उठकर बोला- ''हां सर, ऐसा एक बोर्ड हमारे स्कूल के पास भी लगा है।''

कक्षा-आठवीं

1. अल्प विराम :- (,)

अल्प का अर्थ है थोड़ा! पढ़ते हुए जहां थोड़े समय के लिए रुकना हो वहां अल्प विराम (,) का चिन्ह लगाते हैं।

जैसे- मैंने घृणा और आश्चर्य से देखा, सचमुच उसके पैरों में बेड़ी थी।
गाड़ी, मोटर, तांगे भागे जा रहे थे।
नहीं बेटा, मैंने जो पढ़ाया है, वह झूठ नहीं है।

2. अर्ध विराम :- (;)

जहां पढ़ते समय अल्प विराम से अधिक पूर्ण विराम से कम समय के लिए रुकना पड़े, वहां अर्ध विराम (;) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- सड़कों पर इधर-उधर कूड़ा कर्कट न फैंके (;) एक ओर रखे हुए कूड़ेदानों में डालें।
आजकल शिक्षा का उद्देश्य नौकरी है; इसलिए उसका वास्तविक महत्व जाता रहा है।

3. पूर्ण विराम :- (।)

वाक्य की समाप्ति पर ठहराव प्रकट करने के लिए पूर्ण विराम चिह्न लगाया जाता है। अथवा यूं भी कह सकते हैं कि प्रश्वाचक और विस्मयादि बोधक वाक्यों को छोड़ कर सभी वाक्यों की समाप्ति होने पर किया जाता है।

जैसे- सचमुच यह तो बड़ा ही सुंदर घोड़ा है।
राम चिंता में डूबे हुए खड़े हैं।
शेर पिंजरे से बाहर आ गया है।
बात बहुत पुरानी है।
हामिद का दिल बैठ गया।

4. प्रश्न वाचक :- (?)

जिन वाक्यों में प्रश्न पूछा जाता है, वहां पूर्ण विराम के स्थान पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता हैं।

जैसे-

तुम्हारा नाम क्या है?
क्या बात है इतनी अधीर क्यों हो ?
चिंता में क्यों डूबे हो ?
यह तुम को कहां से मिल गया ?

आदमशाह अबदाली कौन था ?
पगले! इस चिमटे का क्या करेगा ?

5. विस्मयादिक बोधक :- (!)

जहां आश्चर्य, शोक, हर्ष, विस्मय आदि अनेक भाव प्रकट हों, वहां विस्मयादि बोधक का प्रयोग होता है।

जैसे-

हर्ष बोधक- आहा! कितना सुंदर नजारा है।
शाबाश! हमें तुम पर नाज है।

घृणा बोधक- धिक! महापुरुषों की निंदा करते हो।
थू-थू ! कितनी गंदगी फैला रही है।

शोक बोधक- हाय! वह चल बसा।

भय- बाप रे ! कितना अंधेरा है।

विस्मय- हैं! तुम आ गए।

अन्य उदाहरण:-

बेटी! क्या बात है इतनी अधीर क्यों हो ?
अजी! आप तो बात ऐसे कर रहे हैं, जैसे हम बिना टिकट सफर कर रहे हैं।
महाराज! मैंने सुना है कि आप पारस हैं।

6. योजक:- (-)

इस चिह्न का प्रयोग वाक्य अथवा दो व्यक्तियों के भावों को जोड़ने के लिए किया जाता है।

जैसे-

माता-पिता की आज्ञा मानो।
मैंने मन-ही-मन में कहा।
दाता जुग-जुग जियो।
हम से गुलाब-जामुन ले जा।

7. निर्देशक:- (-)

किसी कथन का विवरण देने के लिए, संवाद लिखते समय वक्ता के आगे इस चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे-

दशरथ के चार पुत्र थे- राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न
राम- मैं अनुयायी हूं।
लव- हां, हां, आप अनुयायी हैं।

8. उद्धरण चिह्न:- (" ")

वक्ता की कही हुई बात को ज्यों का त्यों लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे–

बुढ़िया बोली, ''महाराज! मैंने सुना है कि आप पारस हैं।''

''तुम भी शिवाजी की तरह बुद्धु हो'', उसने उत्तर दिया।

विजय ने पूछा, ''रामू! चिंता में क्यों डूबे हो ?'' मैंने उसे इकन्नी दी। बालक ने उत्साह से कहा, ''अहा! इकन्नी।''

बूढ़े ने कहा, ''दाता जुग–जुग जियो।''

मैंने पूछा, ''उसका पता नहीं लगा। कितने दिन हुए''

घुड़सवार ने कहा, ''वह राही शिवाजी ही थे।''

रास्ते में उस्ताद साहब बोले, ''मैं एक गिलास लस्सी पी लूं।''

किसान की पत्नी बोली, ''भैया! अंदर आ जाओ। बहुत भीग गए हो।''

9. लाघव चिन्ह:– (.)

किसी बड़े अंश का संक्षिप्त रूप दिखाने के लिए इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

जैसे–

डॉक्टर – डॉ.

पंडित – प.

10. त्रुटि सूचक :– (ˇ)

लिखते समय जब कोई शब्द या अंश त्रुटि से लिखना भूल जाएं और याद आने पर लिखना भूल जाएं और याद आने पर लिखना हो तो इस चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे–

वह बोला, **''**बाबू जी! नौकरी खोजने गया था।**''**

11. विवरण चिह्न:– (:–)

जब वाक्यांश के बारे में कुछ सूचना देनी हो तो इस चिह्न का प्रयोग होता है।

जैसे–

कविता का सार लिखें :–

आदि।

12. तुल्यतासूचक चिह्न :– (=)

इस चिह्न का प्रयोग समानता अथवा अर्थ स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।

विद्या + आलय = विद्यालय

10+10+10 = 30

13. समाप्ति सूचक चिह्न :– -----x-----o------

इस चिन्ह का प्रयोग किसी निबंध की समाप्ति पर किया जाता है।

जैसे– भारतीय त्योहारों में दिवाली------- चाहिए।

-----x-----o------

पाठ–14

व्यावहारिक व्याकरण

लिंग बदलो

छठी

कवयित्री	=	कवि
श्री	=	श्रीमती
स्त्री	=	पुरुष
नौकर	=	नौकरानी

सातवीं

साधू	=	साध्वी
भगवान	=	भगवती
शिष्य	=	शिष्या
पंजाबिन	=	पंजाबी
ननद	=	ननदोई
जेठानी	=	जेठ
दोहती	=	दोहता
ललारी	=	ललारिन
देवता	=	देवी
विद्वान	=	विदुषी
पहाड़	=	पहाड़ी
घाट	=	घाटी
अपराधिनी	=	अपराधी
भौजी	=	भैया
बुढ़िया	=	बूढ़ा
पड़ोसी	=	पड़ोसिन
कुत्ता	=	कुतिया
औरत	=	आदमी
अध्यापक	=	अध्यापिका
बच्चा	=	बच्ची

वचन बदलो

छठी

वस्तु	=	वस्तुएं	गर्मियों	=	गर्मी
विक्रेता	=	विक्रेताओं	छुट्टियां	=	छुट्टी
दुकान	=	दुकानें	मूर्ति	=	मूर्तियां
फल	=	फल/फलों	बूटी	=	बूटियां
पैसा	=	पैसे	टोपी	=	टोपियां
प्राणी	=	प्राणियों	बरसाती	=	बरसातियां
पशु	=	पशुओं	लड़कियों	=	लड़की
प्रान्त	=	प्रान्तों	हवेली	=	हवेलियां
शक्ति	=	शक्तियां	स्त्रियां	=	स्त्री
कला	=	कलाएं	शादी	=	शादियां
विद्या	=	विद्याएं	बहुओं	=	बहू
कान	=	कानों	रात	=	रातें
दलित	=	दलितों	पिछला	=	पिछले
आदमी	=	आदमियों	वृक्षों	=	वृक्ष
आंखे	=	आंख	आदत	=	आदतें
पैरों	=	पैर	गुरु	=	गुरुओं
पीढ़ियों	=	पीढ़ी	हिन्दु	=	हिन्दुओं
घंटी	=	घंटियां	दवाई	=	दवाइयां
बीमारी	=	बीमारियां	सावधानी	=	सावधानियां
पड़ोसी	=	पड़ोसियों	मुट्ठी	=	मुट्ठियां
मुकद्दमा	=	मुकद्दमें	पौधों	=	पौधा
कलियां	=	कली	पत्तों	=	पत्ता
प्राणों	=	प्राण	पिंजरा	=	पिंजरे
सभा	=	सभाएं	मूर्ति	=	मूर्तियां
यह	=	ये	बूंद	=	बूंदें
मंदिर	=	मंदिरों			

सातवीं

उमंग	=	उमंगे	आशा	=	आशाएं
किरण	=	किरणें	खिलौना	=	खिलौने
बिल्ली	=	बिल्लियां	पकौड़ी	=	पकौड़ियां
सड़क	=	सड़कें	घड़ी	=	घड़ियां
मिठाई	=	मिठाइयां	मसाले	=	मसाला

तिनका	=	तिनके	टांग	=	टांगें
दालें	=	दाल	मुरलियां	=	मुरली
गोलियां	=	गोली	टोपी	=	टोपियां
उंगलियां	=	उंगली			

विपरीत शब्द/ विलोम शब्द

(कक्षा छठी)

सुखी	=	दु:खी	गरीब	=	अमीर
बुद्धिमान	=	मूर्ख	अस्वस्थ	=	स्वस्थ
आनंद	=	शोक/ मातम/ उदासी	बोदा	=	तीव्र बुद्धि
मोटा	=	पतला/ छरहरा	अच्छा	=	बुरा
अपना	=	पराया	उधार	=	नकद
गर्मी	=	सर्दी	जीत	=	हार
राजा	=	रंक	अधिक	=	कम
उदय	=	अस्त	एक	=	अनेक
उत्तर	=	प्रश्न	आता	=	जाता
कायर	=	साहसी	अन्त	=	आदि
आलसी	=	उद्यमी	दानी	=	कृपण
जंगली	=	सभ्य	दयालु	=	निर्दय
वर्षा	=	सूखा			

कक्षा- सातवीं

अस्त	=	उदय	कृतघ्न	=	कृतज्ञ
रोगहीन	=	रोगी	स्वामी	=	सेवक
भलाई	=	बुराई	दोष	=	गुण
प्रकाश	=	अंधकार	स्वतंत्र	=	परतंत्र
कठिन	=	आसान	विशाल	=	संकीर्ण
स्वर्ग	=	नरक	उन्नति	=	अवनति
स्वतंत्रता	=	परतन्त्रता	मरण	=	जीवन
कालकूट	=	अमृत	विजय	=	हार
आशा	=	निराशा	उदार	=	अनुदार
विस्तार	=	संक्षेप	कठिन	=	आसान
मुक्ति	=	बंधन	जन्म	=	मरण
शौर्य	=	कायरता	प्रारंभ	=	अन्त
विदेशी	=	देशी	प्रधान	=	गौण
संगठन	=	विघटन	वियोग	=	संयोग
ग्रहण	=	अर्पण	अंधकार	=	निराशा
दासता	=	आज़ादी			

कक्षा- आठवीं

भीतर	=	बाहर	धरती	=	आकाश
ज्ञात	=	अज्ञात	आज	=	कल
रात	=	दिन	व्यवस्था	=	अव्यवस्था
छाया	=	धूप	सांझ	=	सवेर
जिंदगी	=	मौत	दिवस	=	रात्रि

समानार्थक शब्द

छठी-श्रेणी

मार्ग	=	राह	बेटा	=	पुत्र
मेहनत	=	परिश्रम	वृक्ष	=	पेड़
बच्चा	=	शिशु	भरोसा	=	यकीन
भीख	=	भिक्षा	शिष्य	=	शार्गिद
तरफ	=	ओर			

सातवीं-श्रेणी

पंक	=	कीचड़	पंथी	=	मुसाफिर
पिक	=	कोयल	पवन	=	हवा
स्वभाव	=	प्रकृति	शत्रु	=	दुश्मन
प्यास	=	तृष्णा	मेहर	=	दया
युद्ध	=	जंग	नूर	=	तेज़
बेगाना	=	पराया			

आठवीं-श्रेणी

खिलाफ	=	विरुद्ध	बुत	=	मूर्ति
मुल्क	=	देश	ईमान	=	धर्म विश्वास, धर्म, सच्चाई, नियत, दयानत, खरापन, विश्वास
नियाज़	=	अभ्यास	वक्त	=	समय
रवैया	=	प्रथा, चलन, तौर, तरीका	ज़बान	=	वाणी, जीभ
यकीन	=	भरोसा	फतह	=	जीत
बुतपरस्ती	=	मूर्तिपूजा, प्रार्थना, भेंट, दर्शन चढ़ावा, प्रसाद	कष्ट	=	दु:ख
लड़का	=	बेटा, बालक	बाप	=	पिता

आंख	=	नयन	तड़ित	=	बिजली
घन	=	बादल	गगन	=	आकाश
पुष्प	=	फूल	खुशी	=	हर्ष
भाई	=	भ्राता	शिक्षा	=	पढ़ाई
धन	=	माया	मां	=	माता
अंधकार	=	अंधेरा	भगवान	=	ईश्वर
आंख	=	नयन	वीर	=	योद्धा, बहादुर
घोड़ा	=	अश्व	जिंदगी	=	जीवन
धूप	=	अतप, घाम, सूर्य की गर्मी	लहर	=	हिलोरा, पानी का उतार-चढ़ाव, हिलकोर
नदी	=	दरिया, जलकी	सांझ	=	शाम, सांय
पेड़	=	वृक्ष	सचेत	=	चेतना, सावधान, होशियार
प्रण	=	वायदा	पानी	=	वारि, जल
हवा	=	अनिल			

पर्यायवाची शब्द

1. हम मंदिर के द्वार पर पहुंचे।
अ. दर्शनी दरवाजे से चक्कर हम त्रिकुट पर्वत के आंचल में पहुंचे।
आ. कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

2. प्रसेनजित कौशल का राजा था।
अ. महाराजा शिवाजी ने आपको बुलाया है।
आ. '' अयोध्या नरेश! किस चिंता में डूबे हो।''

3. '' विद्यालय है शिक्षा मंदिर ''
अ. गंगा प्रसाद प्राइमरी पाठशाला में मास्टर के उम्मदवार थे।
आ. आज स्कूल में सुरक्षा सप्ताह मनाया जाएगा।

4. हामिद के पिता अल्लाह को प्यारे हो गए थे।
अ. कहती है, '' तुम्हारे बाप का खाती हूं क्या! ''
आ. ''बापू ने खर्चने के लिए पैसे नहीं दिए क्या!''

5. '' वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे.....''
अ. '' कहीं बूंद है, पुष्प प्यारे खिले हैं....''
आ. '' दूर-दूर से लोग मुझे श्रद्धा सुमन अर्पित करने आते हैं। ''

उपर्युक्त वाक्यों में हम देखते हैं रेखांकित शब्द अलग-अलग होने पर भी उनका अर्थ एक ही है। इस प्रकार के शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है। किसी विशेष शब्द के लिए प्रयोग में लाए गए समानार्थक शब्द ही पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

इसी प्रकार के पर्यायवाची शब्द निम्न दिए जा रहे हैं। विद्यार्थी इनका प्रयोग कर अपने लेखन में कुशलता ला सकते है। कवि व लेखक प्राय: इनका प्रयोग कर अपनी रचना को रोचक बनाते हैं।

शब्द	=	**प्रचलित पर्यायवाची शब्द**
फूल	=	कुसुम, पुष्प, सुमन, प्रसून
पृथ्वी	=	भू, भूमि, धरती, धरा, जमीन
गगन	=	आकाश, अंबर, नभ, आसमान
आग	=	अग्नि, अनल, पावक, दहन, ज्वाला
जल	=	पानी, नीर, वारि, सलिल, तोय
रहागीर	=	राही, बटोही, यात्री
लालसा	=	इच्छा, कामना, आकांक्षा
युद्ध	=	लड़ाई, समर, संग्राम
रक्त	=	खून, रुधिर, शोणित
उपवन	=	बाग, बगीचा, बगिया, वाटिका
सरोवर	=	तालाब, सर, जलधि, ताल
पक्षी	=	खग, विहग, नभचर, अण्डज, पखेरू
मानव	=	आदम, मनुष्य, मनुज, मानस
शरीर	=	तन, गात, अंग, काया, देह
आंख	=	नेत्र, नयन, चक्षु, लोचन
हाथ	=	हस्त, कर, पाणि
तड़ित	=	बिजली, चपला, विद्युत
धन	=	बादल, वारिद, मेघ
खुशी	=	प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास
धन	=	सम्पत्ति, खजाना, पूंजी, रुपया, पैसा, लक्ष्मी
अंधकार	=	तम, अंधेरा, तिमिर,
माता	=	मां, जननी, अम्मा, मैया
पुत्र	=	सुत, बेटा, तनय, नंदन
पुत्री	=	बेटी, सुता, लड़की, तनया, तनुजा
भगवान	=	परमात्मा, ईश्वर, ईश, प्रभु, परमेश्वर
वीर	=	शूर, साहसी, बलवान
घोड़ा	=	अश्व, बाजि, तुरंग, घोटक
सूर्य	=	रवि, दिनेश, दिनकर, दिवाकर, भान, सूर
धूप	=	घाम, रोशनी, आतप

लहर	=	हिलोर, तरंग, ऊर्मि
नदी	=	सरिता, तटिनी, तरंगिनी, नद
वृक्ष	=	तरु, पेड़, विटप
प्रण	=	सौगंध, शपथ, वचन
हवा	=	पवन, वायु, अनिल, समीर, मारुत
शिष्य	=	चेला, अनुयायी, दास
सांप	=	सर्प, भुजंग, नाग, विषधर
कपड़ा	=	चीर, वस्त्र, वसन, पट
दिन	=	दिवस, दिवा, वासर, वार
दूध	=	दुग्ध, पय, क्षीर, गोरस
पर्वत	=	पहाड़, गिरी, शैल, अचल, नभ
चंद्रमा	=	चांद, इंदु, शशि, चंद्र, सुधांशु, हिमांशु
घर	=	गृह, भवन, निकेतन, आलय
शक्ति	=	ताकत, बल, पराक्रम, हिम्मत
सचेत	=	सजग, जागृत, चेतन
चेष्ठा	=	कोशिश, प्रयास, प्रयत्न, उद्योग
कृषि	=	खेती, किसानी
क्रोध	=	कोप, गुस्सा, रोष, अमर्ष
प्रतिदिन	=	रोज-रोज, नित्य-प्रति, दैनिक
राजा	=	नरेश, भूपति, सम्राट, महाराजा, नृप
मित्र	=	सखा, दोस्त, बंधु, साथी, मीत
भाई	=	भ्राता, बंधु, आत्मज
समुद्र	=	उदधि, सागर, सिंधु, मीत
स्त्री	=	नारी, वनिता, रमणी, कामिनी, कान्ता
सोना	=	स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम
अमृत	=	अभी, सोम, सुधा, पीयूष
कष्ट	=	दु:ख, तकलीफ, पीड़ा
बाल	=	बालक, बच्चा, शिशु, लड़का
पुस्तक	=	किताब, पोथी, पुस्तिका
सांझ	=	संध्या, शाम, सांयकाल
संसार	=	दुनिया, जगत, विश्व, लोक
शत्रु	=	दुश्मन, वैरी, अरि
शिक्षा	=	विद्या, पढ़ाई, ज्ञान
सचेत	=	सजग, चुस्त, चौकन्ना, चौकर
सूर्य	=	रवि, दिनकर, भास्कर, दिवाकर
रात्रि	=	निशा, रात, तमसा, रैन, रजनी
राक्षस	=	दैत्य, दानव, दनुज, असुर
हाथी	=	कुंजर, गज, मतंग, दंती
जिंदगी	=	जीवन, वृत्ति, आयु

कोकिल = कोयल, पिक, बसंत दूत
कमल = पंकज, जलज, वारिज, सरोज, नलिन
गणेश = गजानन, गणपति, एकदन्त, विनायक
देवता = सुर, देव, अमर, निर्जर

पाठ व पाठ के पीछे दिए अभ्यास में मुहावरों व लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग

कक्षा - छठी

मुहावरे

परिभाषा:-जब कोई वाक्य अथवा वाक्यांश अपने प्रचलित साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, वह मुहावरा कहलाता है।

पाठ-2

1. जी ललचा उठा = बहुत इच्छा होना/हुई।
वाक्य:- सेब देख कर मेरा जी ललचा उठा।
2. मोल-तोल करना = कीमत तय करना।
वाक्य:- बाजार से हर वस्तु मोल-तोल करके ही खरीदनी चाहिए।
3. धोखा-धड़ी करना = कहना कुछ और करना कुछ।
वाक्य:- सीधे-सादे लोगों के साथ धोखा-धड़ी करना पाप है।

पाठ-6

4. अपनी जान तक लड़ा देना = मरने मारने से न डरना।
वाक्य:- सैनिक देश की रक्षा के लिए अपनी जान तक लड़ा देते हैं।
5. सुगंधि आना= मन को अच्छा लगना।
वाक्य:- चीज़ लेकर 'धन्यवाद' कह दें तो शिष्टाचार की सुगंधि आती है।
6. मन जीत लेना = अपना बना लेना।
वाक्य:- 'भाई साबह' पुकार कर हम चपड़ासी का मन जीत सकते हैं।

पाठ-10

7. जीवन लीला समाप्त होना = मर जाना।
वाक्य:- शास्त्री जी के घर पहुंचने से पहले ही उनकी पुत्री की जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी।
8. अटल रहना = टिके रहना।

वाक्य:- शास्त्री जी अपने सिद्धांतों पर अटल रहे।
9. जिगर का टुकड़ा = प्यारा बेटा।
वाक्य:- जिगर का टुकड़ा मृत्यु से जूझ रहा है।
10. विदा लेना = किसी जगह को छोड़कर चले जाना।
वाक्य:- समरोह की समाप्ति पर मेहमान ने विदा ली।

पाठ- 15

11. आंख की किरकिरी = आंखों में खटकना।
वाक्य:- मुगल राजपूतों को आंख की किरकिरी समझते थे।
12. कोई कसर न छोड़ना = प्रयास में कमी न रखना।
वाक्य:- मैंने कक्षा में प्रथम आने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी।
13. आनंद के समुद्र में डूबना = बहुत ज्यादा सुख मिलना।
वाक्य:- अजीत सिंह को राजगद्दी पर बैठा देख दुर्गादास आनंद के समुद्र में डूब गया।
14. सन्नाटा छाना = खामोशी छाना।
वाक्य:- अजीत सिंह की आवाज़ सुन कर सभा में सन्नाटा छा गया।
15. ठाठ का जीवन व्यतीत करना = बहुत मज़े से रहना।
वाक्य:- अजीत सिंह राजा बन कर ठाठ का जीवन व्यतीत करने लगा।

पाठ-18

16. हिरन की तरह चौकड़ी भरना = खूब उछलते हुए आगे बढ़ना।
वाक्य:- अखिल एक खिलाड़ी को छूकर हिरन की तरह चौकड़ी भरता हुआ वापस आ गया।
17. नौ दो ग्यारह होना = जल्दी से भाग जाना।
वाक्य:- चोर पुलिस को देखकर नौ दो ग्यारह हो गया।
18. पलक झपकते ही = एक दम थोड़ी सी देर में।
वाक्य:- पलक झपकते ही उसने विरोधी खिलाड़ी को छू लिया।
19. जाल में फंसी मछली की तरह = मुसीबत में पड़ा आदमी।
वाक्य:- चारो ओर से घिरे खिलाड़ी की दशा जाल में फंसी मछली की तरह हो जाती है।
20. हाथ-पांव मारना = कोशिश करना।
वाक्य:- कबड्डी के खेल में खिलाड़ी ने मुक्त होने के लिए बहुत हाथ-पांव मारे।
21. प्रसन्नता की लहर दौड़ना = सभी का बहुत खुश होना।
वाक्य:- स्कूल की टीम जीतने पर सब में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

पाठ-19

22. डट जाना = अड़े रहना।
वाक्य:- लड़ाई के समय भारतीय सैनिक सीमा पर डट जाते हैं।
23. मिट्टी में मिलना = नष्ट होना।
वाक्य:-चीनियों ने मशीनगन चलाकर 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा मिट्टी में मिला दिया।
24. दाल न गलना = मनचाहा काम न होना।
वाक्य :- हम अपने देश में किसी शत्रु की दाल नहीं गलने देंगे।

पाठ–20

25. मैदान साफ नजर आना = कोई चीज़ बाकी न रहना।
वाक्य:– गोपू टोकरी हाथ में लिए उपले बटोरने पिछवाड़े गया तो मैदान साफ नज़र आया।
26. नयनों से गंगा–यमुना बहना = रोने के कारण आंखों से खूब आंसू बहना।
वाक्य:– उपले न देखकर गोपू के नयनों से गंगा–यमुना बहने लगी।
27. दिमाग दौड़ाना = गहराई से सोचना।
वाक्य:– घर जाने के बाद मुखिया ने दिमाग दौड़ाया।
28. आंसुओं से हाथ भिगोना = किसी को बिना कारण दु:ख देकर खुश होना।
वाक्य:– किसी के आंसुओं से हाथ भिगो कर हम होली नहीं मनाना चाहते।
29. जुट जाना = लग जाना
परीक्षा पास देखकर सभी छात्र पढ़ाई में जुट गए।
30. पसीना बहाना = कड़ी मेहनत करना।
वाक्य:– परीक्षा में प्रथम आने के लिए मैं पसीना बहा दूंगा।
31. चेहरा प्रसन्नता से खिल उठना = बहुत खुश होना।
वाक्य:– मुखिया का न्याय देखकर गोपू का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

पाठ– 23

32. मोल–तोल न करना = एक कीमत बता कर, वही वसूल करना।
वाक्य:– भक्त जीवन लाल कभी मोल–तोल नहीं करते।
33. नौ नकद न तेरह उधार = तुरंत उचित कीमत ले लेना।
वाक्य:– मैंने एक हजार रुपया उधार में बेचने के स्थान पर साइकल नौ सौ रुपये में बेच दिया। क्योंकि मैं जानता हूं नौ नकद न तेरह उधार।
34. धूम मचाना = मशहूर हो जाना।
वाक्य:– बोर्ड की परीक्षा में प्रथम आने पर अखिल की शहर में धूम मच गई।
35. व्यवसाय चमक उठा = व्यापार खूब बढ़ गया।
वाक्य:– जीवन लाल का व्यवसाय शहर में चमक उठा।
36. दो हाथ से दस हाथ हो जाना = बहुत से सहायता करने वाले मिल जाना।
वाक्य:– भक्त जीवन लाल ने अपने भाई और तीन बेटों को भी दुकान पर बैठा लिया उस के तो दो हाथ से दस हाथ हो गए।
37. हालत पतली होना = पैसे की कमी होना।
वाक्य:– जब से राम के पिता अस्पताल में हैं उन की तो हालत पतली हो गई है।
38. काम काज में हाथ बंटाना = मदद करना।
वाक्य:– देव के दोनों बेटे पिता के काम काज में हाथ बंटाने लगे हैं।
39. नाक होना = सिर ऊंचा करने वाला होना।
वाक्य:– परीक्षा में प्रथम आकर पुत्र ने समाज में पिता की नाक रख ली।
40. दाईं–बाईं आंखें होना = पूरे सहायक होना।
वाक्य :– मेरे दोनों किराएदार मेरी दाईं–बाईं आंखें हैं।

41. आड़े समय में पल्ला पकड़ना = मुसीबत के समय सहारा ढूंढना।
वाक्य:- आई बारात के खर्च के लिए कमी महसूस होने पर राम ने मालिक मकान का आड़े समय में पल्ला पकड़ लिया।
42. जीव आत्मा परमात्मा में लीन होना = मर जाना।
वाक्य:- कल सवेरे देव के पिता की आत्मा परमात्मा में लीन हो गई।
43. फूला न समाना = बहुत खुश होना।
वाक्य:- परीक्षा में प्रथम आने पर देव फूला न समाया।
44. विचित्र भूमिका निभाना = बिना बताए कोई काम करना।
वाक्य:- कदम-कदम पर गरीबों की सहायता करके द्वारका ने विचित्र भूमिका निभाई।

पाठ- 25

45. लाज बचाना = इज्जत कायम करना।
वाक्य:- अखिल ने समय पर रुपये देकर मेरी लाज बचा ली।
46. खून बहाना = अंतिम सांस तक लड़ना।
वाक्य:- भारतवासी अपने देश की रक्षा के लिए खून बहाना जानते हैं।
47. गर्व से सीना फूलना = गौरवशाली होना।
वाक्य:- पुत्र की अनोखी सफलता पर पिता का गर्व से सीना फूल उठा।

पुस्तकांत मुहावरे (पृष्ठ नं. 99)

48. अटल रहना = टिके रहना।
वाक्य:- हमें अपने धर्म पर अटल रहना चाहिए।
49. अपनी जान तक लड़ा देना = मरने मारने से न डरना।
वाक्य:- भारतीय सैनिक विजयप्राप्त करने हेतु अपनी जान तक लड़ा देते हैं।
50. आनंद के समुद्र में डूबना = बहुत खुश होना।
वाक्य:- अखिल कक्षा में प्रथम आने पर आनंद में डूब गया।
51. आड़े समय में पल्ला पकड़ना = मुसीबत के समय सहारा ढूंढना।
वाक्य:- आड़े समय में पल्ला पकड़ने वाला ही असली मित्र होता है।
52. आंसुओ से हाथ भिगोना = किसी को बिना करण दु:ख देकर खुश होना।
वाक्य:- नीच लोग दूसरों के आंसुओं से हाथ-भिगोना मामूली सी बात समझते हैं।
53. कोई कसर न छोड़ना = कोई कमी न रहने देना।
वाक्य:- मैं इस वर्ष परीक्षा में प्रथम आने के लिए कोई कसर नहीं छोडूंगा।
54. चिंता में डूब जाना = बहुत फिक्र करना।
वाक्य:- बेटी के स्कूल से न आने पर मां चिंता में डूब गई।
55. चेहरा खिल उठना = खुश हो जाना।
वाक्य:- विदेश से लौटे पिता को देखकर बेटे का चेहरा खिल गया।
56. जीवन फूंक देना = नई जान डालना।
वाक्य:- स्वामी विवेकानंद ने लोगों में जीवन फूंक दिया।

57. दंग रह जाना = हैरान होना।
वाक्य:- मदारी का तमाशा देखकर बच्चे दंग रह जाते हैं।
58. दाल न गलना = मनचाहा काम न होना।
वाक्य:- चले जाओ, हमारे साथ तुम्हारी दाल नहीं गलेगी।
59. तलवार संभालना = लड़ने के लिए तैयार होना।
वाक्य:- देश की रक्षा के लिए नवयुवकों ने तलवार संभाल ली।
60. नयनों से गंगा-यमुना बहना = खूब आंसू बहना।
वाक्य:- बेटे की मृत्यु पर माता-पिता के नयनों से गंगा-यमुना बहने लगी।
61. पलक झपकते ही = एक दम, थोड़ी सी देर में।
वाक्य:- पलक झपकते ही घोड़ा दीवार कूद गया।
62. परमात्मा में लीन होना = परलोक सिधार जाना।
वाक्य:- महात्मा हमेशा परमात्मा में लीन होना चाहते हैं।
63. प्राण पखेरू उड़ना = मर जाना।
वाक्य:- लम्बी बीमारी के बाद बुढ़िया के प्राण पखेरू उड़ गए।
64. प्रसन्नता की लहर दौड़ना = बहुत खुश होना।
वाक्य:-अपने स्कूल की जीत पर सब छात्रों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।
65. मौत के घाट उतारना = मार डालना।
वाक्य:- गुरु गोविंद सिंह जी ने दोनों पठानों को मौत के घाट उतार दिया।
66. विचित्र भूमिका निभाना = अद्‌भुत कार्य करना।
वाक्य:- लड़ाई में सेनापति ने शत्रुओं पर विजय दिलाने में विचित्र भूमिका निभाई।
67. हाथ बांटना = मदद करना।
वाक्य:- हमें हमेशा दूसरों का हाथ बंटाना चाहिए।

कक्षा-सातवीं

पाठ-2

1. मौत के घाट उतारना = मार देना।
वाक्य:- लड़ाई में भारतीय सैनिकों ने पाक सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
2. प्राणों की खैर मनना = अपना बचाव करना।
वाक्य:- भारतीय सैनिकों ने शत्रुओं से ललकार कर कहा, प्राणों की खैर मनानी है तो हथियार डाल दो।
3. मृत्यु तुल्य जीवन बिताना = मरे हुए के समान रहना।
वाक्य:- मंत्री सुमति कुएं में मृत्यु तुल्य जीवन बिता रहा था।
4. हाथ लगाना = अधिकार में होना।
वाक्य:- युद्ध में कई पाकिस्तानी टैंक भारतीय सेना के हाथ लगे।

पाठ–6

5. आंख में खटकना = बुरा लगना।
वाक्य:– शरारती बच्चे अध्यापकों की आखों में खटकते हैं।
6. जी की कली खिलना = मन खुश होना।
वाक्य:– परीक्षा परिणाम देखकर मेरी तो जी की कली खिल गई।

पाठ–7

7. नौ–दो ग्यारह होना = भाग जाना
वाक्य:– सिपाही को देखते ही चोर नौ–दो ग्यारह हो गया।
8. आंख बदलना = मुंह फेर लेना।
वाक्य:– मुसीबत के समय अपने भी आंख फेर लेते हैं।
9. हंसते–हंसते लोट–पोट होना = बहुत हंसना।
वाक्य:– छोटे जादूगर की बातें सुनकर सभी हंसते–हंसते लोट–पोट हो गए।
10. पीठ थपथपाना = शाबाशी देना।
वाक्य:– कक्षा में प्रथम आने पर मुख्याध्यापक ने अखिल की पीठ थपथपाई।
11. घड़ी समीप होना = मृत्यु निकट होना।
वाक्य:– रोगी की सांसे धीरे–धीरे चल रही थी जैसे उसकी घड़ी समीप हो।

पाठ–9

12. फूला न समाना = बहुत खुश होना।
वाक्य:– बोर्ड की परीक्षा में प्रथम आकर रवि फूला नहीं समा रहा था।
13. कान भरना = चुगली करना।
वाक्य:– मुझे कान भरने वाले विद्यार्थी अच्छे नहीं लगते।
14. कानों का कच्चा होना = किसी की झूठी–सच्ची बात पर यकीन कर लेना।
वाक्य:– कई अधिकारी कानों के कच्चे होते हैं।
15. झांसा देना = धोखा देना।
वाक्य:– अपराधी सिपाही को झांसा देकर भाग निकला।
16. बेसिर की बातें करना = सारहीन बातें करना।
वाक्य:– अरे गगन! बेसिर–पैर की बातें करना अच्छा नहीं होता।

पाठ–12

17. हृदय पर सांप लोटना = बहुत ईर्ष्या होना।
वाक्य:– बावा भारती के घोड़े को देखकर डाकू के हृदय पर सांप लोटने लगा।
18. दिल टूट जाना = हताश हो जाना।
वाक्य:– इकलौते बेटे की मृत्यु से माता–पिता का दिल टूट गया।
19. मन मोह लेना = मन को आकर्षित करना।
वाक्य:– राधा के नृत्य ने सब का मन मोह लिया।

20. मुंह मोड़ना = रूठ जाना।
वाक्य:- मुसीबत में अपने भी मुंह मोड़ लेते हैं।

पाठ-13

21. नाक में दम करना = बहुत तंग करना।
वाक्य:- गर्मी ने सभी के नाक में दम कर दिया।
22. अंग-अंग हिल जाना = थक जाना
वाक्य:- सुबह से काम करते-करते मेरा अंग-अंग हिल रहा है।
23. आनाकानी करना = टाल-मटोल करना।
वाक्य:- मैंने पचास रुपये मांगे, तो चौधरी आना कानी करने लगा।
24. दिल बल्लियों उछलना = खुश होना।
वाक्य:- लाटरी निकलने पर अखिल का दिल बल्लियों उछल पड़ा।
25. गहरी नींद सो जाना = मर जाना।
वाक्य:- लगता है बुढ़िया गहरी नींद सो गई।

पाठ-14

26. तलवारों का खिंची की खिंची रहना = हतप्रभ हो जाना।
वाक्य:- नारियों की सेना देखकर अशोक की तलवार खिंची की खिंची रह गई।
27. साक्षात चण्डी सी दिखाई देना = बहुत बड़ी वीरांगना।
वाक्य:- युद्ध में लक्ष्मीबाई साक्षात चण्डी जैसी दिखाई देती थी।
28. मृत्यु की गोद में सो जाना = मर जाना।
वाक्य:- लम्बी बीमारी के बाद बेचारी बुढ़िया मृत्यु की गोद में सो गई।
29. लोहा लेना = युद्ध करना।
वाक्य:- भारतीय सेना किसी भी दुश्मन से लोहा लेने को तैयार है।

पाठ-24

30. गुम सुम रहना = चुप-चाप रहना।
वाक्य:- शिखी आज प्रात: से ही गुम-सुम बैठी है।
31. कान पकड़ कर निकाल देना = बुरा समझ कर निकाल देना।
वाक्य:- रमन ने अपने चोर बेटे को कान पकड़ कर बाहर निकाल दिया।
32. बातों में आ जाना = विश्वास करना।
वाक्य:- किसी भी व्यक्ति की बातों में आ जाना अच्छा नहीं होता।
33. पैरों पर खड़ा होना = आत्म निर्भर होना।
वाक्य:- मेरे भाई, पैरों पर खड़े होना सीखें।
34. कानी कौड़ी = तुच्छ सी चीज़।
वाक्य:- उससे कानी कौड़ी मिलना भी कठिन है।
35. हाथ फैलाना = मांगना
वाक्य:- किसी के आगे हाथ फैलाना बुरी बात है।

पाठ- 27

36. पानी उतारना = बेइज्जत करना
वाक्य:- बड़े-बड़ों का पानी उतारना कोई तुमसे सीखे।
37. नस-नस पहचानना = पूरी-पूरी जानकारी।
वाक्य:- अखिल अब मत बोलो, मैं तुम्हारी नस-नस पहचानता हूं।
38. मखमल में लपेटकर कहना = बनावटी बात।
वाक्य:- साफ-साफ कहो मखमल में लपेट कर कहना अच्छा नहीं होता।
39. टका सा जवाब देना = साफ इंकार।
वाक्य:- मैंने जब अखिल से पुस्तक मांगी तो उसने टका सा जवाब दे दिया।
40. फूट-फट कर रोना = बहुत रोना।
वाक्य:- इकलौते बेटे की मृत्यु पर मां-बाप फूट-फूट कर रो रहे थे।
41. पैसों को दांत तले दबाना = खर्च न करना।
वाक्य:- कई धनी भी पैसों को दातों तले दबा लेते हैं।
42. जीभ घिस जाना = बार-बार कहना।
वाक्य:- आपसे कोई भी वस्तु लेनी हो तो मांग-मांग के जीभ घिस जाती है।

पाठ-2

1. छक्के छुड़ाना = हराना।
वाक्य:- युद्ध में मेजर भूपेन्द्र सिंह ने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए।
2. ठाठें मारना = लहरें उठना।
वाक्य:- भूपेन्द्र सिंह में देश रक्षा की भावना ठाठें मार रही थी।
3. वीर गति पाना = शहीद होना।
वाक्य:- अंत में मेजर भूपेन्द्र सिंह भी वीर गति को प्राप्त हुए।
4. आंखे भर आना = मन दु:खी होना।
वाक्य:- मेजर भूपेन्द्र सिंह को घायल देख की शास्त्री जी की आंखें भर आईं।
5. गला भारी होना = दु:खी होना।
वाक्य:- मेजर भूपेन्द्र सिंह की मौत की खबर सुन कर सब का गला भारी हो गया।

पाठ-4

6. टूट पड़ना = झपट पड़ना।
वाक्य:- महाराणा रणजीत सिंह मुसलमानों पर टूट पड़े।
7. ताक में रहना = मौके की तलाश में।
वाक्य:- डाकू सदैव डाका मारने की ताक में रहते हैं।
8. आंख से आंख न मिलाना = आंख चुराना।
वाक्य:- महाराजा रणजीत सिंह से कोई भी आंख से आंख मिलाकर बात नहीं करता था।
9. खदेड़ देना = मार भगाना।
वाक्य:- भंगी मिसल के सरदार की सेना को रणजीत सिंह ने खदेड़ दिया।
10. चल बसना = मर जाना।

वाक्य:- जब रणजीत सिंह लौटा तब तक उनके पिता चल बसे थे।

11. दांत खट्टे करना = बुरी तरह हराना।

वाक्य:- महाराजा रणजीत सिंह ने अटक की नदी पार कर दुश्मनों के दांत खट्टे किए।

पाठ-5

12. टकटकी बांधना = लगातार देखना।

वाक्य:- बच्चे टकटकी बांधकर मदारी का तमाशा देखते हैं।

13. नानी याद आना = कठिनाई का आना।

वाक्य:- सब्जियों के भाव सुनकर मुझे तो नानी याद आ गई।

14. पीपनी बजाना = व्यर्थ की बातें करना।

वाक्य:- बस कर यार, अपनी ही पीपनी न बजाते जाओ।

पाठ-8

15. अंगूठा दिखाना = चीज़ देने से इंकार करना।

वाक्य:- मैंने जब अखिल से पुस्तक मांगी तो उसने अंगूठा दिखा दिया।

16. आंखों का तारा= बहुत प्यारा।

वाक्य:- अखिल अपने माता-पिता की आंखों का तारा है।

17. चार चांद लगाना = शोभा बढ़ाना।

वाक्य:- रमन ने विदेशों में भारतीय इज्जत को चार चांद लगा दिए।

18. मुंह उतर जाना = निराश होना।

वाक्य:- परीक्षा में असफल होने पर राधा का मुंह उतर गया।

पाठ-11

19. फूले न समाना = प्रसन्न होना।

वाक्य:- जब देश स्वतंत्र हुआ तो भारतवासी फूला न समा रहे थे।

20. धूनी तपना = कष्ट सहना।

वाक्य:- देश की स्वतंत्रता के लिए लाखों भारतवासियों को धूनी तपनी पड़ी।

पाठ-12

21. श्री गणेश करना = आरंभ करना।

वाक्य:- राम प्रसाद ने आज अपने घर का श्री गणेश किया।

22. मस्तक ऊंचा उठाना = गौरव बढ़ाना।

वाक्य:- आर्यभट्ट नामक उपग्रह ने भारत का मस्तक ऊंचा कर दिया।

पाठ-14

23. कलेजा मुंह को आना = दिल पर गहरी चोट लगना।

वाक्य:- बाघ को देखकर रामू का कलेजा मुंह को आ गया।

24. क्रोध पी जाना = गुस्सा सह लेना।

वाक्य:- सास की जली-कटी बातें सुनकर भी बहू क्रोध पी गई।

25. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता = अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

वाक्य:- इस पानी की टैंकी को मैं बिना किसी की सहायता के साफ नहीं कर सकता। आपको तो पता ही है अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

26. फूला न समाना = अधिक प्रसन्न होना।

वाक्य:- परीक्षा में प्रथम आने पर मैं फूला न समाया।

27. मन बांसों उछलना = अत्यधिक खुश होना।

वाक्य:- बाघ के मारे जाने पर राम के गांव के लोगों के मन में बांसों उछलने लगे।

28. घात लगाकर बैठना = किसी को हानि पहुंचाने की ताक में रहना।

वाक्य:- रामू और विजय घास-फूस की झोंपड़ी में बाघ का शिकार करने के लिए घात लगाकर बैठ गए थे।

पाठ-17

29. पहाड़ टूट पड़ना = मुसीबतें आना।

वाक्य:- मार्या की माता की मृत्यु के बाद परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

30. हाथ धो बैठना = किसी चीज़ को खो बैठना।

वाक्य:- मार्या बीमारी के कारण स्वास्थ्य से हाथ धो बैठी है।

31. तंदरुस्ती हजार नियामत है = स्वास्थ्य एक अमूल्य धन है।

वाक्य:- मार्या के पिता ने स्वास्थ्य के बारे में समझाया कि तंदरुस्ती हजार नियामत है। इसलिए एक वर्ष आराम करो, पढ़ाई बाद में हो जाएगी।

32. पराधीन सपने हूं सुख नाहिं = दूसरों के अधीन रहकर कभी भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

वाक्य:- जब भारत अंग्रेजों के अधीन था तो प्रजा दु:खी थी। सच ही कहा है कि 'पराधीन सपने हूं सुख नाहिं।'

पाठ-18

33. आंखे मलमल कर देखना = आश्चर्य से देखना।

वाक्य:- सर्कस में लोग शेर के पिंजरे को आंखें मलमल कर देख रहे थे।

34. बेल मेढ़ न चढ़ना = काम सम्पन्न न होना।

वाक्य:- लेखक की पत्नी ने लेखक को कहा, इस आयु में साइकिल कैसे सीख पाओगे। ये बेल मेढ़ न चढ़ सकेगी।

35. उधेड़-बुन में होना= दुविधा में होना।

वाक्य:- लेखक इसी उधेड़-बुन में था कि अपना उस्ताद किसे बनाए।

36. जान में जान आना = चैन आना।

वाक्य:- मैं आज कार्यालय में बहुत थक गया। मुझे घर पहुंच कर जान में जान आई।

37. लानत भेजना = धिक्कारना।

वाक्य:- हमारा पड़ोसी चोरी करते पकड़ा गया, हम सब ने लानत भेजी और कहा, चोरी करना पाप है।

38. हंसी खेल = साधारण खेल।

वाक्य:- गणित में अखिल ने बहुत अच्छे अंक लिए हैं जैसे उसके लिए हंसी का खेल हो।
39. सिर मुंडाते ही ओले पड़े = एकदम से मुसीबत आ जाना।
वाक्य:- लेखक साइकिल चलाने के लिए घर से निकला तो पहले बिल्ली ने रास्ता काट दिया, फिर लेखक को पता चला कि पजामा उल्टा है। वह घर वापिस आ गया। यह तो वही बात हुई कि सिर मुंडाते ही ओले पड़ गए।
40. प्राण सूख जाना = व्याकुल होना।
वाक्य:- मैं सैर कर रही थी कि अचानक वहां सांप देखकर मेरे तो प्राण सूख गए।

पाठ-20

41. हाथों के तोते उड़ना = घबरा जाना।
वाक्य:- शिवाजी के बुलाने पर किसान परिवार के तो हाथों के तोते उड़ गए।
42. पसीना-पसीना हो जाना = डर जाना।
वाक्य:- राजा के सिपाहियों को घर के सामने खड़ा देखकर किसान पसीना-पसीना हो गया।
43. पैरों तले ज़मीन खिसक जाना = अचानक कोई अनहोनी हो जाने से डर जाना।
वाक्य:- किसान को जब घुड़सवार ने बताया कि आपको शिवाजी महाराज ने बुलाया है तो उनके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।
44. मुंह देखना = हक्का-बक्का रह जाना।
वाक्य:- जब घुड़सवार ने बताया कि एक दिन शिवाजी महाराज आपकी कुटिया में आये थे, यह तो सुनकर पति-पत्नी एक दूसरे का मुंह देखने लगे।
45. कहां राजा भोज कहां गंगू तेली = दोनों आदमियों में बहुत अंतर होना।
वाक्य:- किसान को जब घुड़सवार ने बताया कि आपको छत्रपति शिवाजी ने निमंत्रण दिया है। किसान यह सुन कर बोला कि कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली।
46. यह मुंह और मसूर की दाल = किसी काम के योग्य न होना।
वाक्य:- राधा स्वयं तो आठवीं पास है, एम.ए. पास से विवाह करना चाहती है। यह तो वही बात हुई 'यह मुंह और मसूर की दाल।'

पाठ-22

47. नीम-हकीम खतरा जान = अधूरे ज्ञान वाले व्यक्ति से काम करवाने पर हानि हो सकती है।
वाक्य:- यदि बीमार हो तो अच्छे डॉक्टर से दवाई लें। अनजान से दवाई लोगे तो नुकसान हो सकता है। इसलिए कहा भी गया है कि नीम हकीम खतरा जान।
48. नौ नकद न तेरह उधार = उधार के अधिक की अपेक्षा नकद थोड़ा अच्छा रहता है।
वाक्य:- जो व्यापारी नौ नकद न तेरह उधार की नीति पर चलते हैं वे कभी आर्थिक संकट का सामना नहीं करते।

पाठ–23

49. चकमा देना = धोखा देना।
वाक्य:– हॉकी के खिलाड़ी गेंद को बचाने के लिए विरोधी को चकमा देकर गेंद को दूसरी ओर ठेल देते हैं।
50. खोपड़ियां खुलना = मार–काट करना।
वाक्य:– गांव के दो गुटों की लड़ाई में कई लोगों की खोपड़ियां खुल गई।
51. सिक्का जमना = प्रभाव होना।
वाक्य:– कई वर्षों तक हॉकी के खेल में भारतीय हॉकी का सिक्का जमा रहा।
52. हार का स्वाद चखना = हारना।
वाक्य:– भारतीय टीम ने सन् 1928 से सन् 1956 तक कभी हॉकी में हार का स्वाद नहीं चखा।

पाठ– 28

53. पैरों में पर लगना = तेज चलना।
वाक्य:– ईदगाह को समीप देखकर मानो हामिद के पैरों में पर लग गए थे।
54. दिल बैठ जाना = घबरा जाना।
वाक्य:– जब बेटी को स्कूल से आने में देरी हो जाती है तो मां का दिल बैठने लगता है।
55. राई का पहाड़ बनाना = छोटी सी बात को बड़ा करके कहना।
वाक्य:– राम और श्याम में थोड़ी कहा सुनी हो गई। अध्यापक के आते ही उस बात का श्याम ने राई का पहाड़ बना दिया।
56. बाल भी बांका न होना = कुछ भी न बिगड़ना।
वाक्य:– आपके साथ मां का आर्शीवाद है, आप का कभी बाल भी बांका नहीं होगा।
57. रंग जमाना = प्रभाव डालना।
वाक्य:– हामिद ने अपने चिमटे के गुण बताकर सभी बालकों पर अपना रंग जमा लिया।

पाठ– 30

58. आंखें बिछाना = स्वागत करना।
वाक्य:– ग्राहक प्रात: से समाचार पत्र आने के लिए आंखें बिछाए बैठे होते हैं।
59. नजरों से गिर जाना = इज्जत गवाना।
वाक्य:– जो समाचार पत्र झूठी खबरें लाते हैं वे ग्राहकों की नजरों से गिर जाते हैं।
60. काम आना = युद्ध में मारे जाना।
वाक्य:– भारत–पाक युद्ध में अनेक भारतीय वीर काम आए।
61. मन में समा जाना = दिल में बैठ जाना।
वाक्य:– पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने अध्यापकों के मन में समा जाते हैं।
62. अंगुलियों पर नचाना = वश में करना।
वाक्य:– कई स्त्रियां अपने पतियों को अंगुलियों पर नचाती हैं।
63. दम घुटना = तंग होना।
वाक्य:– बस में इतनी भीड़ थी कि मेरा दम घुटने लगा।

पाठ–31

64. तेते पांव पसारिए जेती लम्बी सौर = आय से अधिक व्यय करना।

वाक्य:– पहले तो कर्ज लेकर घर का सामान बना लिया परंतु अब पैसे वापिस करने कितने मुश्किल लग रहे हैं। भाई तेते पांव पसारिए जेती लम्बी सौर।

65. काठ की हांडी बार–बार नहीं चढ़ती = छल कपट से एक बार काम किया जा सकता है, बार–बार नहीं।

वाक्य:– एक बार घी लेकर मैं तुम से धोखा खा गया हूं। अब मैं आपसे सौदा नहीं लूंगा। काठ की हांडी बार–बार नहीं चढ़ती।

66. होनहार बिरवान के होत चीकने पात = महान व्यक्ति के लक्षण उसके बचपन के कार्यों से ही पता चल जाते हैं।

वाक्य:– गुरु नानक के बचपन में किए कार्यों को देखकर पता चलता है कि वे कितने महान बनेंगे। कहा भी गया है कि होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

67. कौआ कैसे चल सके राज हंस की चाल = दुर्जन सज्जन की नकल नहीं उतार सकता।

वाक्य:– बिना जानाकरी के राजेश ने गाड़ियों के व्यापार में हाथ डाल दिया और नुकसान सहना पड़ा। किसी ने ठीक ही कही है कि कौआ कैसे चल सके राज हंस की चाल।

पाठ–17

1. मेरी पाठशाला

– मेरी पाठशाला का नाम..... है।
– यह.....से.....तक जाने वाली सड़क पर स्थित है।
– यहां पर कक्षा.....से.....तक शिक्षा प्रदान की जाती है।
– हमारी पाठशाला में.....सौ छात्र हैं और पचास अध्यापक हैं।
– इसकी बहुत बड़ी इमारत हैं जिसमें कुल.....खुले और हवादार कमरे हैं।
– हर कमरे में दो पंखे, दो बल्व, एक ब्लैक बोर्ड है और बच्चों के बैठने के लिए डैस्क हैं।
– पाठशाला के अंदर आते ही प्रधानाचार्य–कार्यालय है। इसके साथ ही क्लर्क–कार्यालय भी है।
– पाठशाला के बीचो बीच स्टाफ रूम (अध्यापकों के बैठने का कमरा) है।
– मेरी पाठशाला में एक पुस्तकालय है जिसमें तीन हजार के करीब सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें हैं।
– इसके ऊपर विज्ञान प्रयोगशाला और कम्प्यूटर–इंटरनेट कक्ष है।
– बिजली–पानी का यहां उचित प्रबंध है।
– पाठशाला के सामने एक वाटिका है जिसमें रंग–बिरंगे फूल खिले हैं जो इसकी शोभा को चार चांद लगाते हैं। पाठशाला की चार दिवारी के साथ–साथ अनेक प्रकार के वृक्ष लगे हैं।
– पाठशाला के पीछे खेल का एक बड़ा मैदान है जहां पर सुबह की प्रार्थना की जाती है और दिन में खेलों की घंटी में खेला जाता है। यहां आधी छुट्टी में बच्चों को खाना भी खिलाया जाता है।
– मेरी पाठशाला के मुख्याध्यापक जी एवं सभी शिक्षक योग्य, मेहनती और अनुशासन–प्रिय हैं। जो पुस्तकालय ज्ञान के साथ–साथ अन्य प्रतिभाओं का भी विकास करते हैं। यहां देश प्रेम अनुशासन और भाईचारे का व्यवहार सिखाया जाता है।
–दीवार पर महापुरुषों के चित्र और बरामदों में शिक्षाविदों सूक्तियां व मोटो लगाए गए हैं।
– हर वर्ष परिणाम बहुत अच्छा आता है इसलिए पूरे जिले भर में मेरी पाठशाला का नाम है।
– परमात्मा करे मेरी पाठशाला दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करे।

2. प्रातः काल की सैर

प्रातः का की वायु का नित्य उठ जो करता सेवन,
मनोबल, बुद्धि बढ़े और बने धनवान।
दूर भागते रोग सभी, बने यह रामबाण,
भरे ताज़गी तन–मन में होता जीवन का उत्थान।

–प्रातः काल की सैर करना मनुष्य के लिए उतना ही ज़रूरी है, जितना कि खाना, पीना, सोना आदि।

– ''यदि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो सब कुछ गया।'' अर्थात जीवन के लिए अच्छा स्वास्थ्य होना जरूरी है।
– शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अनेक तरीके हैं, जैसे–व्यायाम, योग–आसन, खेलना–कूदना तथा सैर करना। इन सभी साधनों में सैर सबसे सस्ता व सबसे उपयोगी व्यायाम है।
– सैर के लिए उत्तम समय है प्रात: काल। सुबह की सैर वैसे भी मनोरंजन करने के समान है।
– सुबह की लाली चारों ओर फैली होती है। पक्षियों के मधुर गीत, हरे–भरे पौधों पर मोतियों की बूंदें और फूलों की महक से भरी हवा तन में ताज़गी व मन में आनंद भर देती है।
– सैर खुले कपड़े पहन कर किसी उपवन, नदी किनारे या जहां नीम का या पीपल आदि के पेड़ हों वहां करनी चाहिए।
– पौधे और पेड़ ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जो हम फेफड़ों में भरते हैं तो खून शुद्ध हो जाता है। शरीर में फुर्ती आती है और शरीर निरोग होता है।
– दिमाग की ताकत बढ़ती है, छोटे–मोटे रोग तो पास नहीं फटकते।
– पैदल चलने का अभ्यास समय व धन दोनों की बचत सिखाता है।
– इससे विद्यार्थियों को पाठ जल्दी याद हो जाता है। प्रात: काल की सैर बच्चे, जवान और बूढ़ों सभी के लिए औषधि के समान है।
– आधे घंटे की नींद का मोह त्याग कर अगर हम सैर करें तो स्वस्थ और तनाव रहित जीवन जी सकते हैं।
– इसलिए हमें नियमित रूप से प्रात: काल की सैर करनी चाहिए।

किसी कवि ने ठीक कहा है:–
'' अहो! प्रभात वेला है आई,
निंद्रा त्यागो, सैर करो भाई। ''

3. हमारा राष्ट्रीय ध्वज

– हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है।
– इसमें तीन रंग की पट्टियां हैं–केसरिया, सफ़ेद और हरा। इसलिए इसे तिरंगा कहते हैं।
– इसके तीनों रंग प्रतीक रूप है:–
केसरिया रंग – वीरता और बलिदान का
सफेद रंग – शांति और सादगी का
हरा रंग – हरियाली और समृद्धि का सूचक है।

– मध्य की पट्टी के बीच में नीले रंग का अशोक चक्र है।
– यह चक्र विश्व प्रसिद्ध सम्राट अशोक के धर्म से लिया गया है, यह चौबीस तीलियों वाला चक्र हमें हमेशा विकास की ओर बढ़ते रहने की प्रेरणा देता है।
– 15 अगस्त 1947 को पहली बार अंग्रेजों के झण्डे के स्थान पर हमारे तिरंगे को स्वतन्त्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली के लाल किले पर फहराया था। तब से इसे 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्रपति द्वारा, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली में लाल किले पर फहराया जाता है।
– इसे राष्ट्रीय पर्वों पर सलामी दी जाती है।
जब जब भी झण्डा फहराया जाता है तब-तब राष्ट्रीय गान ''जन, गन, मन अधिनायक .....'' गाया जाता है या फिर इसकी धुन बजाई जाती है।
– उस समय हम सभी को सावधान खड़े होकर राष्ट्रीय झण्डे को सम्मान देना चाहिए। सभी राष्ट्रीय पर्वों और विशेष अवसरों पर स्कूलों, सरकारी कार्यालयों तथा मुख्य भवनों पर यह तिरंगा फहराया जाता है।
– 23 जनवरी 2004 में हमें यह अधिकार मिला है कि हम सार्वजनिक पार्क में, घरों पर ससम्मान यह तिरंगा फहरा सकते हैं।
– राष्ट्रीय ध्वज हमारे गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक है। इसकी रक्षा प्रत्येक भारतीय का परम कर्तव्य है।

4. आंखों देख मैच

'' आओ खेलें हॉकी का खेल
सीखें जीना हार-जीत को झेल''

भले ही आज लोग क्रिकेट के दीवाने बने हुए हैं परंतु हमारा राष्ट्रीय खेल हॉकी ही है। लगातार कई वर्षों तक भारत हॉकी के खेल में विश्वभर में सब से आगे रहा। 70 मिनट की अवधि वाला यह खेल अत्यंत रोचक और उत्साहवर्धक होता है। मुझे ऐसा ही हॉकी का एक मैच देखने का अवसर मिला।

एक तरफ जैन स्कूल तथा दूसरी तरफ हीरो स्कूल की टीम थी। दोनों टीमों के खिलाड़ी बहुत अच्छा मैच खेल रहे थे, जैन स्कूल का गोल कीपर बहुत ही होशियार और चुस्त था। वह विरोधी टीम के सभी आक्रमणों को विफल कर रहा था। उधर जैन टीम के कप्तान ने भी तेजी पकड़ी और देखते ही देखते हीरो टीम के विरुद्ध एक गोल दाग दिया। गोल होने पर हीरो टीम के सभी खिलाड़ियों ने मिलकर आक्रमण किया और गोल करने में सफल हो गए इतने में मध्यांतर (आधा समय) हो गया।

मैच फिर से शुरू हुआ हीरो टीम वाले जोश में आए। उन्हें दो पैनल्टी कॉर्नर भी मिले पर वे इसका लाभ न उठा सके। जैन टीम को भी एक पैनल्टी कॉर्नर मिला जिसे

उन्होंने बढ़िया हिट लगाकर गोल में बदल दिया। उधर हीरो स्कूल की टीम बड़ी तालमेल से आगे बढ़ी। आखिरी पांच मिनट बचे थे तभी कप्तान ने दायें कोण से हिट लगाकर गोल कर अपनी टीम को बराबरी पर ला दिया।

दर्शक खुशी के मारे नाच उठे। मैच समाप्ति की सीटी के बजते ही दर्शकों ने अपने खिलाड़ियों को मैदान में जाकर शाबाशी दी। मैच का स्तर इतना अच्छा था कि मैच देखकर आनंद आ गया।

5. मेरा पंजाब

- मेरा पंजाब ऋषियों, मुनियों और गुरुओं की धरती हैं।
- यहां पर सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, जेहलम नदियां बहती थी इसी कारण इसका नाम पंजाब पड़ा। किंतु आजकल इसमें दो नदियां ही बहती हैं (सतलुज और व्यास)।
- इसके उत्तर में जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश है, दक्षिण में राजस्थान, पूर्व में हरियाणा और पश्चिम में पाकिस्तान है।
- इसकी राजधानी चंडीगढ़ है।
- यहां पर प्रत्येक धर्म के लोग रहते हैं। यहां गुरु नानक देव जी ने अपने पावन उपदेश स्वयंकाय के लिए प्रेरित किया तो गुरु गोबिंद सिंह जी ने पंजाब के लोगों में साहस, वीरता और बलिदान की भावना पैदा की और अनेक जातियों के भेदभावों को मिटाकर एक सूत्र में पिरोया।
- यहां पर लाला लाजपत राय, भगत सिंह, करतार सिंह सराभा, ऊधम सिंह जैसे देशभक्त हुए। जिन्होंने देश के लिए अपना बलिदान दे दिया।
- यहां की धरती बहुत उपजाऊ है इसलिए यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है।
- पंजाब के लोग मेहनती व साहसी हैं। इसी कारण यह बड़ी तेजी से उन्नति की राह पर चल रहा है।
- लुधियाना साइकिल, सिलाई मशीन व हौजरी उद्योग, अमृतसर कपड़े, जालंधर खेलों के सामान, मोहाली आई.टी., मण्डी गोबिंदगढ़ लोहे के उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।
- यहां पर पांच विश्वविद्यालय-पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, गुरुनानक देव विश्व विद्यालय अमृतसर, पंजाबी विश्व विद्यालय पटियाला, कृषि विश्व विद्यालय लुधियाना तथा पंजाब तकनीकी विश्व विद्यालय जालंधर है।
- यहां मोहाली का विश्व प्रसिद्ध स्टेडियम है।
- यहां हरेक वर्ष अनेकों मेले और त्यौहार आते हैं। लोहड़ी, वैशाखी, दीवाली, तीज, माघी, बसंत, गुरुपर्व, होला-महल्ला आदि प्रसिद्ध त्योहार है।
- यहां के लोगों को संगीत, शिक्षा, खेल, कला, संस्कृति और साहित्य से बहुत प्रेम है।
- पंजाब का गिद्दा, भांगड़ा, सम्मी आदि लोक नृत्य संसार भर में प्रसिद्ध हैं। लोकगीतों

की मधुरता तथा ग्रामीणों की बोलियां सबके मन को मोह लेती हैं।
- भाखड़ा बांध, थर्मल प्लांट यहां के नव-मंदिर हैं।
- यहां स्वर्ण मंदिर, जलियां वाला बाग, दुर्ग्याना मंदिर, आनंदपुर का किला, देवी तालाब मंदिर, दमदमा साहिब, नैना देवी मंदिर आदि अनेक दर्शनीय मंदिर एवं गुरुद्वारे हैं।
- यहां का प्रसिद्ध व स्वादिष्ट खाना साग व मक्की की रोटी है।
- मुझे पंजाब केवल इसलिए प्रिय नहीं कि यह मेरी जन्मभूमि है, बल्कि इसलिए पसंद है कि पंजाब के लोगों ने देश की आजादी एवं धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर किए हैं।

6. वैशाखी

- भारत में हर साल अनेक प्रकार के उत्सव और त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं।
- वैशाखी भी ऐसा ही एक त्योहार है, जो हर वर्ष नवीन उत्साह और उमंग लेकर आता है।
- यह त्योहार वैशाखी मास (देसी महीने) की संक्रांति को मनाया जाता है। आमतौर पर यह 13 अप्रैल को ही मनाया जाता है।
- जब पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द एक चक्कर पूरा करके दूसरा चक्कर आरंभ करती है उसी दिन वैशाखी होती है। तभी नया देसी साल शुरु होता है। स्कूलों का सत्र भी वैशाख मास से ही आरंभ होता है।
- इस दिन नए कार्य आरंभ किए जाते हैं और पुराने कामों का लेखा-जोखा किया जाता है।
- 1699 ई. को इस दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने ''खालसा पंथ '' की स्थापना करके अनेक जातियों के भेदभाव को मिटाकर एक सूत्र में पिरोया था। पांच प्यारों को अमृत छकाया और सिंघ सजाए थे।
- इसी दिन सन् 1919 ई. में अंग्रेज हाकिम जनरल डायर ने जलियांवाला बाद में निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाई थी। उन्हीं शहीदों की याद में वैशाखी के दिन श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किए जाते हैं।
- इस दिन किसान अपनी नई फसल को पककर तैयार हुई देख खुशी से झूम उठते हैं और भांगड़ा डालते हुए कह उठते हैं :-

''फसलां दी मुक गई राखी,
ओ जट्टा, आई वैशाखी।''

- वैशाखी के दिन पंजाब में कई स्थानों पर मेले लगते हैं। अमृतसर में वैशाखी का मेला पंजाब में प्रसिद्ध है।
- इस दिन पशुओं की मंडियां लगती है। जगह-जगह कुश्ती मुकाबले करवाए जाते हैं।
- लोग रंग-बिरंगे नए कपड़े पहन कर मेला देखने आते हैं।
- इस दिन हर गांव, हर शहर में चहल-पहल होती है।
- इस दिन लोग गंगा-जमुना आदि पवित्र नदियों और सरोवरों में स्नान करते हैं। लोग यथा योग्य दान-पुण्य भी करते हैं।
-मिठाइयां और खिलौनों की खरीददारी करके, खुशी से झूमते हुए लोग शाम को घरों को लौटते हैं।

7. लोहड़ी

हमारे भारत देश में सभी त्योहार बड़े उत्साह से मनाए जातें हैं। लोहड़ी देश का विशेषकर पंजाब का प्रसिद्ध त्योहार है। लोहड़ी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है- तिल-रोड़ी= तिलोड़ी। बाद में यह शब्द बिगड़ कर लोहड़ी, लोही और लोई के नाम से मशहूर हो गया। यह त्योहार माघ मास की मकर संक्रांति से एक दिन पहले रात के समय मनाया जाता है। यह त्योहार वैदिक काल से चला आ रहा है। पुराने समय में देवताओं को खुश रखने के लिए आर्य लोग हवन-यज्ञ किया करते थे। हवन से सारा वातावरण कीटाणु रहित और शुद्ध हो जाता था। यह वर्षा करने में भी सहयोग करते थे। किसानों की खेती भी भरपूर होती थी।

ऐसी धारणा है कि इस दिन लोहनी देवी ने एक भयानक राक्षस को जलाकर राख कर दिया था। बुराई पर अच्छाई की जीत को ताज़ा रखने के लिए हर वर्ष इसी दिन आग जलाकर खुशी मनाई जाती है।

''सती दहन '' की पैराणिक कथा से भी यह त्योहार इस प्रकार जुड़ा हुआ है। दक्ष प्रजापति की एक कन्या थी जिसका नाम था सती। वह भगवान शंकर (शिव जी) की पहली पत्नी थी। एक बार सती के पिता दक्ष देवताओं के सम्मेलन में गए। सभी देवताओं ने खड़े होकर उनका स्वागत किया, परंतु शिव जी बैठे रहे। दक्ष ने इसे अपना अपमान समझा। इस अपमान का बदला लेने के लिए दक्ष ने एक महान यज्ञ का आयोजन किया। शिव जी के इलावा उन्होंने सब देवताओं को बुलाया। पिता के घर यज्ञ का समाचार सुन सती जाने की जिद्द करने लगी। शिव जी के बहुत समझाने पर भी वह नहीं मानी तो उन्होंने अपने गणें के साथ सती को जाने की आज्ञा दे दी।

सती अपने पिता दक्ष के यहां पहुंची तो उन्होंने सती का तिरस्कार किया और शिव जी को भला-बुरा भी कहा। सती यह तिरस्कार सहन न कर सकी और यज्ञ की अग्नि में ही भस्म हो गई। यह समाचार पाते ही शिव जी का तीसरा नेत्र खुल गया। दक्ष शिव जी के क्रोध को देख कर उनके पैरों में गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा। सभी देवता भी उनसे क्षमा याचना करने का आग्रह करने लगे। तभी शिव जी का क्रोध शांत हुआ। शिवजी द्वारा क्षमा पाने पर दक्ष ने पूर्ण-आहुति डालकर यज्ञ को पूरा करने के बाद उन्हें यज्ञ का भाग और अनेक उपहार देकर विदा किया। यही प्रथा आज भी प्रचलित है लोहड़ी के त्योहार पर वधुपक्ष वाले वरपक्ष वालों का खूब आदर-सत्कार करके उन्हें रेवड़ी, मिठाई, कपड़े आदि उपहार रूप में देते हैं।

इस त्योहार का संबंध मुगलकाल के डाकू दुल्ला भट्टी से भी जुड़ा हुआ है। जो अमीरों के प्रति क्रूर और गरीबों के प्रति दयालु था। एक दिन जंगल में दुल्ला भट्टी ने गरीब ब्राह्मण को रोते हुए गुजरते देखा। वह डाकू होते हुए भी दीन-दुखियों का सहायक था। उसने ब्राह्मण के रोने का कारण पूछा। ब्राह्मण ने बताया, ''मेरी सुंदरी और मुंदरी नामकी दो सुंदर कन्याएं है। उनकी शादी पास के गांव में होनी तय हुई थी। सुंदर कन्याओं की भनक इलाके के राजा को लग गई। राजा दोनों कन्याओं को प्राप्त करना चाहता है। मैं लड़के वालों के यहां यह प्रार्थना करने गया था कि विवाह से पहले ही कन्याओं को अपने घर ले आओ, नहीं तो दुष्ट राजा उन्हें छोड़ेगा नहीं। परंतु राजा के डर से लड़के वालों ने मना कर दिया। इसलिए वह

निराश होकर लौट रहा था। ''

उसकी राम कहानी सुन कर डाकू का हृदय पसीज गया। उसने ब्राह्मण को धीरज बंधाया कि गांव की बेटी मेरी बेटी है। इनकी शादी वह खुद करेगा। दुल्ला भट्टी ने खुद लड़के वालों को तसल्ली देकर विवाह की तारीख पक्की की। राजा को कानों कान खबर न हो इसलिए जंगल में रात के अंधेरे में आग जलाकर गांव के सब लोग इकठ्ठा हो गए। दुल्ला भट्टी ने धर्म पिता बनकर सुंदरी और मुंदरी का कन्यादान किया। भांवर के समय उनके द्वारा ओढ़े हुए सालू (दुपट्टे) भी फटे हुए थे। गरीब ब्राह्मण के पास देने के लिए कुछ नहीं था। गांव वालों ने भरपूर सहायता की। जिनके यहां पुत्र का विवाह या पुत्र/पौत्रे पैदा हुए थे उन्होंने कन्याओं को विशेष उपहार दिए। दुल्ला भट्टी के पास उस समय केवल शक्कर थी। जिसमें से सेर शक्कर उसने शगुन के रूप में कन्याओं को दी और बारातियों को खाने में चूरी बनाकर खिलायी।

इस घटना के बाद हर वर्ष लोहड़ी आग जलाकर मनाई जाती है। इन दिनों मकई, दालें, बाजरा, तिलहन, मूंगफली आदि फसलें घर आ जाती हैं। नाई, धोबी, ग्वाला, कुम्हार, कहार आदि सेवकों और गरीबों को दान दिया जाता है। फसल का कुछ अंश अग्नि में आहुति के रूप में डाला जाता है।

इस त्योहार में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई का कोई भेदभाव नहीं होता। कई दिन पहले से ही लड़के-लड़कियां टोलियां बनाकर यह लोकगीत गाकर घर-घर लोहड़ी मांगने जाते हैं:-

सुंदर मुंदरिये, हो:
तेरा कौन विचारा, हो:
दुल्ला भट्टी वाला, हो:
दुल्ले धी ब्याही, हो:,
सेर शक्कर पाई, हो:
कुड़ी दा सालू पाटा, हो:
कुड़ी दा जीवे चाचा, हो:
चाचा चूरी कुट्टी, हो:
नम्बरदारां लुट्टी, हो:
गिन-गिन पोले लाए, हो:
इक पोल रह गया, हो :
सिपाही फड़ के लै गया, हो।

लोग लोहड़ी के रूप में पैसे, मूंगफली, रेवड़ी, उपले, लकड़ियां इत्यादि देते है। जिनके यहां उस वर्ष लड़के की नई शादी या फिर पुत्र/ पौत्र आदि पैदा हुआ होता है, उनके घरों से विशेष तौर पर बधाई मांगी जाती है। उनसे हठ करके ज्यादा पैसे और सामान की मांग की जाती है। लोहड़ी मांगते समय ये दुआएं लोकगीत के रूप में गाईं जाती हैं:-

''साडे पैरा हेठ सलाइयां, असी केहड़े वेले दीया आईयां।

साडे पैरां हेठ रोड़, सानू छेती-छेती तोर।
दे माई पाथी, तेरा पोता चड़ूगा हाथी।
हाथी हेठ कटोरा, तेरे पूत जम्मूगा गोरा।
गोरे ने खादी टिक्की, तेरे पुत-पोत्रे इक्की
इक्कियां ने कीति कमाई, सानू टोकरा भर के पाईं।''

फिर रात को गोलाकार में उपले और लकड़ियां लगाकर उन्हें जलाया जाता है। फिर उसमें आहुति के रूप में घी, तिल, चिड़वे, गुड़ आदि डालते हुए गाते हैं:-

'' ईश्वर आ दलिद्र जा, दलिद्र दी जड़, चुल्हे पा।''

फिर गली-मुहल्ले वाले सब मिलकर, रेवड़ी, भुग्गा, मूंगफली, गज्जक, खीलें और पकवान खाते हैं। यह त्योहार आमतौर पर 13 जनवरी के आस-पास होता है। इन दिनों सर्दी जोरों पर होती है। इससे बच्चों को लिए तिल-गुड़ आदि से बनी चीजें खाना जरूरी होता है। **'' लोहड़ी पाला खोड़ी ''** कहा जाता है।

आजकल जलती हुई आग के निकट बैठकर लोग लोकगीत गाते हैं और गिद्दा, भांगड़ा आदि लोकनृत्य करते हैं, जिससे इस त्योहार का आनंद और बढ़ जाता है।

जलती हुई आग की शिखा भेदभाव से ऊपर उठने की प्रेरणा देती है। लोहड़ी का त्योहार गुड़ और तिल की तरह एक हो जाने, प्यार, हंसी और खुशी से एकता को बढ़ाने का संदेश देता है।

8. स्वतंत्रता दिवस

'' आजादी मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार है। ''

अगस्त 1947 की सुबह भारतवासियों के लिए सुखद समाचार लेकर आई। लगभग दो सदियों से भारत माता की गुलामी के बंधन टूक-टूक हुए।

'' आपसी फूट ने भारत के सूर्य को किया था अस्त,
उसे आलोकित करने को आया ये पन्द्रह अगस्त।''

सब ने सुख शांति की सांस ली। यह पर्व हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है इसलिए स्वतंत्रता का यह पर्व पूरे भारत में धूमधाम और गर्व से मनाया जाता है। इस दिन पूरे भारत में राजकीय अवकाश होता है।

'' ऐ देश! आज तुझको, शत-शत नमन कर लें। जो मिटे तेरे लिए, उन्हें आज स्मरण कर लें। ''

भारत की इस आजादी के लिए महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, सुभाष चन्द्र बोस, लाल बहादुर शास्त्रि, पं. जवाहर लाल नेहरू, भगत सिंह, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे तथा नाना साहेब आदि ने जनता के साथ मिलकर संघर्ष किया। ये लोग, अनेकों बार जेल गए, घोर यातनाएं सहीं, गोलियां खाई और फांसी के फंदों को चूमा। सभी अत्याचार सहने पर भी यह भारतीय चुप न बैठे और अंग्रेजों को भारत

छोड़ने पर मजबूर कर दिया। किन्तु फिरंगी '' बांटो और राज करो '' की नीति पर चलते हुए भारत को दो खण्डों में बांट गए। यह बड़ी दुखद घटना थी। भारतीयों ने यह वज्रपात भी सहा। इतने बलिदानों के बाद मिली स्वतंत्रता का दिवस हर वर्ष बहुत धूम-धाम से मनाया जाता है और उन स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए जाते हैं। भारत के प्रत्येक नगर और गांव में सभाएं होती हैं। यह राष्ट्रीय पर्व बड़े गर्व उत्साह तथा खुशी के साथ मनाया जाता है, झण्डे फहराए जाते हैं। राजधानी दिल्ली के लाल किले की दीवार पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वजारोहण करते हैं, राष्ट्रगान होता है तथा तिरंगे को इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती है।

इस दिन लाल किले के सामने विशाल जनसमूह इस शोभा को देखता है। प्रधानमंत्री गत वर्ष में हुए देश के विकास कार्यों व घटनाओं एवं देश की नीतियों संबंधी भाषण देते हैं।

सभी राज्यों की राजधानियों में भी मुख्यमंत्री या राज्यपाल अपने-अपने राज्यों की जनता को संदेश देते हैं। रात के समय पूरे देश के सरकारी भवनों पर दीपमाला की जाती है।

हमें आजादी तो मिल गई है परंतु हमें अपने देश के प्रति कर्त्तव्यों को निभाना चाहिए। कितने ही देशप्रेमियों ने अपनी शहादत देकर हमें ये आजादी दिलवाई है, उसकी रक्षा हमें तन, मन, धन से करनी होगी। आजादी की रक्षा के लिए किसी भी प्रकार की कुर्बानी देने का प्रण करना चाहिए।

यह पर्व शांति, प्रेम और राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है।

किसी कवि ने कहा है-

'' दिल दिया है जान भी देंगे ऐ वतन तेरे लिए। ''

9. गणतंत्र दिवस

जो भरा नहीं भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं, पत्थर है जिसमें देश का प्यार नहीं।

- हमारे देश में अपेक पर्व और उत्सव मनाए जाते हैं। उनमें से कुछ त्योहार जाति-विशेष तक ही सीमित होते हैं। लेकिन राष्ट्रीय पर्व तो प्रत्येक नागरिक के मन में उत्साह पैदा करते हैं।
- 26 जनवरी इन्ही में से एक है। इसे हम गणतंत्र दिवस कहते हैं।
- 26 जनवरी 1929 में जब लाहौर में रावी नदी के किनारे एक अधिवेशन हुआ तो उसमें भारतवासियों ने राष्ट्रीय झण्डे के नीचे खड़े होकर प्रतिज्ञा की कि हम भारत की आजादी की मांग करेंगे और उसके लिए अंतिम सांस तक संघर्ष करेंगे। तब से प्रति वर्ष 26 जनवरी को यह पर्व मनाने की परंपरा चली आ रही है।
- 15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्र होने के बाद 26 जनवरी 1950 को भारत का नया

संविधान लागू हुआ था। भारत गणतंत्र राज्य घोषित किया गया था।
- डा. राजेन्द्र प्रसाद गणतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति और पं. जवाहर लाल नेहरू पहले प्रधानमंत्री बने थे।
- वैसे तो यह पर्व पूरे भारत में धूमधाम से मनाया जाता है। परंतु भारत की राजधानी दिल्ली में तो गणतंत्र समारोह की शोभा ही निराली होती है।
- राष्ट्रपति भवन से राष्ट्रपति की सवारी निकलती है। सलामी देने के लिए थल सेना, जल सेना, वायु सेना की चुनी हुई टुकड़ियां सवारी के साथ-साथ चलती है। इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती है। वायुयानों द्वारा करतब दिखाते हुए राष्ट्रपति को सलामी दी जाती है। हैलीकॉप्टर से फूल बरसाए जाते हैं। यहां से जलूस राजपथ, जनपथ, कनॉट प्लेस ,अजमेरी गेट, चांदनी चौक से होता हुआ लाल किले तक पहुंचता है।
- इंडिया गेट के पास विजय चौक पर राष्ट्रति तिरंगा झण्डा लहराते हैं।
- हर प्रदेश द्वारा लोक-नृत्य, शिल्प कला एवं विकास कार्यों की झांकियां प्रस्तुत की जाती है। इस समारोह को देश-विदेश के लोग देखने आते हैं।
- इस दिन विद्यालयों और कार्यालयों में कार्यक्रम आयोजित कर ध्वजारोहण किए जाते हैं।
- रात को सरकारी भवनों में रोशनी की जाती है।
- यह पर्व हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। इसलिए हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि-

तेरी रक्षा तन, मन, धन से,
हम सब सदा करेंगे मिलकर।
तेरे लिए जीएंगे हम सब,
तेरे लिए मरेंगे मिलकर।

तभी हम उन वीरों का कर्ज़ चुकता कर सकेंगे और अपनी आज़ादी को कायम रख सकेंगे।

10. विज्ञान के लाभ-हानियां

आधुनिक युग को विज्ञान का युग कहा जाए तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। विज्ञान की अपार उपलब्धियों ने जल, थल, आकाश-सब जगह जीवन के रूप रंग को चमत्कृत कर दिया है।

19वीं और 20वीं शताब्दी में विज्ञान का एक नया रंग देखने को मिलता है। इसने मानव-जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। आजकल विज्ञान में असीम शक्ति है। भाप, बिजली और अणुशक्ति को वश में करके मनुष्य ने मानव समाज को तरक्की के ऊंचे शिखर पर पहुंचा दिया है। विज्ञान के आविष्कारों ने अलादीन के चिराग की तरह मनुष्य को असीमित सुविधाएं एवं शक्तियां प्रदान की हैं। विज्ञान का जादुई चमत्कार है-बिजली। आज बिजली के बिना जीवन की कल्पना ही असंभव

है। बिजली से चलित प्रकाश-साधन, पंखे, कूलर, टी.वी., फ्रिज आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण विशाल मात्रा में वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा करते हैं।

'' देश जो है आज उन्नत सब संसार से,
चौंका रहे हैं नित्य सबको नवाष्किार से।। ''

यातायात के साधनों से कम समय में मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा दिया जाता है। साइकिल, मोटर साइकिल, कार, बस, रेल, मैट्रो, वायुयान, जलयान आदि बहुत लाभकारी सिद्ध हुए हैं। वहीं इंटरनेट, टेलीफोन, मोबाइल आदि ने हमारे संबंधों में निकटता ला दी है। रॉकेटों, विमानों तथा जलयानों ने समय को बांध दिया है। वैज्ञानिक चांद तक पहुंच गए हैं और वहां भी दुनिया बसाने की योजनाएं सफल होने वाली हैं। कृषि प्रधान भारत का कृषक आज विज्ञान से बनाई और विकसित बीजों, खादों, उर्वरकों, कीटनाशकों, हारवेस्ट, ट्रेक्टर, ट्यूबवैल आदि का सफल प्रयोगकर अपनी उपज बढ़ा रहा है। इस क्षेत्र में नई-नई खोजें जारी हैं। विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने बड़े-बड़े पहाड़ों को काट कर सुरंग बनाई। कृत्रिम बादलों से पानी तक बरसा लिया। रूस ने तो विज्ञान के आविष्कारों से मौसम को भी बदल दिया है।

अंतरिक्ष विज्ञान ने सृष्टि के रहस्यों का उद्घाटन किया है। परमाणु ऊर्जा का प्रयोग अनेक निर्माणकारी परियोजनाओं में किया जा रहा है।

चिकित्सा क्षेत्र में विज्ञान आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ है। इंजेक्शन, एक्स-रे, रेडियम एवं विद्युत चिकित्सा द्वारा शरीर के अंदर झांका जा सकता है। मृतक समान मानव को प्राणदान दिया जा सकता है। आज कैंसर तक का इलाज सरलता से होने लगा है, अंधों को खोई दृष्टि मिलने लगी है व हृदय बदले जा रहे हैं। मृत्यु-दर घट रही है, औसत आयु बढ़ी हैं। दूरदर्शन के आविष्कार से विश्व में घटी किसी भी घटना की सचित्र झांकी तभी हम तक पहुंच जाती है।

मनुष्य को विज्ञान एक अद्भुत वरदान के रूप में प्राप्त हुआ है। यह मनुष्य का दास बन गया है। विज्ञान के चमत्कारों ने मनुष्य को मानों सर्वशक्तिमान बना दिया है। यदि विज्ञान का दुरुपयोग हुआ तो इसे अभिशाप बनने में भी समय न लगेगा। उदाहरण सामने है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में जन और धन का जितना विनाश हुआ उतना शायद सौ वर्षों में भी पूरा न कर सके। विज्ञान का जो भयावह रूप हीरोशिमा और नागासाकी में सामने आया उस अणु-बम्ब के दृष्य आंखों के सामने आते ही दिल कांप उठता हैं। भोपाल गैस-कांड में गैस के रिसने मात्र से भयंकर विनाश हुआ।

बिजली जीवन में उजाला भरती है, वहीं इसके
स्पर्श-मात्र से जीवन मौत में बदल जाता है।

विज्ञान का वरदान या अभिशाप होना सिर्फ व सिर्फ मानव के ऊपर निर्भर है। यदि वह इसका प्रयोग अपने व दूसरों के हित के लिए करे तो विज्ञान परम लाभकारी है अन्यथा विनाश के इलावा कुछ नहीं। यह सब मानव समाज के ऊपर निर्भर करता है।

11. समाचार-पत्र

आज के युग में समाचार-पत्र का विशेष महत्व है। विज्ञान ने मानव को जो सुविधाएं प्रदान की हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण सुविधा समाचार-पत्र की है। इसमें सारे संसार की खबरें छपती हैं। इसलिए आज का पढ़ा-लिखा मनुष्य प्रात: उठने के बाद सर्वप्रथम समाचार-पत्र को ही पढ़ता है। उसके बिना मानव-जीवन अधूरा है। समाचार-पत्र ज्ञान बढ़ाने का सबसे सस्ता, सरल और प्रमुख साधन है।

'' समाचार-पत्र पढ़ो, पढ़ाओ,
अज्ञान का अंधेरा मिटाओ। ''

वर्तमान युग में समाचार पत्र प्रजातंत्र शासित देश की रीढ़ की हड्डी होते हैं।

'' मूक दूत बना खबरें लाता, ज्ञान बढ़ाता मन बहलाता।
हमें जो उत्तम पथ दिखलाता, उसके जागरुक प्रहरी हैं,
वह समाचार-पत्र कहलाता।''

जीवन की गतिविधियों का दर्पण है समाचार-पत्र। अंग्रेजों के आगमन के बाद मुद्रण कला के विकास के साथ-साथ भारत में भी समाचार पत्र का आरंभ हुआ। भारत में सर्वप्रथम 1780 में कलकत्ता में एक पत्र प्रकाशित हुआ '' इंडिया गजट '' जोकि पूर्ण सरकारी अखबार था। इसके पश्चात राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ भारत में पत्रकारिता का भी प्रचार होता गया। हिन्दी भाषा में सबसे पहला समाचार-पत्र 1854 ई. में '' सुधा वर्षक '' प्रकाशित हुआ। समाचार-पत्र मदारी की पिटारी की तरह है जिसमें देश भर के महत्वपूर्ण और मनोरंजक समाचार, संपादकीय लेख, विद्वानों के लेख, नेताओं के भाषणों की रिपोर्ट, व्यापार व मेले की सूचनाएं और विशेष संस्करणों में स्त्रियों व बच्चों के उपयोग की सामग्री, पुस्तकों की समीक्षा, नाटक, कहानी, धारावाहिक, उपन्यास, कार्टून, हास्य-व्यंगात्मक लेख आदि सामग्री होती है। समाचार-पत्रों में केवल घटनाएं ही हों, ऐसी बात नहीं है। आज-कल इसमें खेल-कूद, व्यापार, बाजार भाव, चलचित्र, रेडियो तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों की जानकारी तथा अनेक प्रकार के विज्ञापन भी होते हैं तथा वर-वधू भी ढूंढे जाते हैं। व्यापार मंडियों के भाव, शेयरों आदि के उतार चढ़ाव की जानकारी भी मनुष्य को समाचार पत्रों से मिलती है। समाचार-पत्र लाखों, करोड़ों के हाथों में पहुंचते है और वस्तु के बिकने में सहायता करते हैं। व्यापारी लोग विज्ञापन छपवाकर अपना माल बेचते हैं।

भारत की आजादी की लड़ाई में समाचार-पत्रों और उनके सम्पादकों का विशेष योगदान रहा है। जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

किसी कवि ने समाचार-पत्रों के महत्व और उपयोगिता को सुंदर शब्दों में प्रस्तुत किया है-

'' इस अंधियारे विश्व में दीपक है अखबार,
सुपथ दिखाने आपको, आंख करता है चार। ''

पहले समाचार पत्र कार्यालय में समाचार इकठ्ठे किए जाते हैं, फिर उन्हें एक निश्चित रूप दिया जाता है। इसके बाद उन्हें कंपोज करके शुद्ध किया जाता है। विज्ञापन आदि को जोड़कर समाचार-पत्रों को प्रेस में छापा जाता है। उसके बाद बांटने वाले इन्हें हमारे घरों तक पहुंचाते हैं। इस तरह समाचार-पत्र कई लोगों की रोजी-रोटी का साधन है।

समाचार-पत्र ही सरकार की गलत नीतियों की आलोचना करके सरकार पर अंकुश लगाने का काम करते हैं। इनके द्वारा शासन में सुधार भी किया जा सकता है। ये प्रजातंत्र का आधार-स्तंभ हैं। धनी लोगों की वस्तु न होकर जनता की वाणी है। किसी ने इसे **जनता की सदा चलती रहने वाली संसद** कहा है।

समाचार-पत्र में लाभ हानि का चोली-दामन का साथ है। समाचार-पत्रों के लाभ अधिक किंतु हानियां भी हैं। सबसे बड़ी हानि तब होती है जब समाचार-पत्र राजनैतिक भेद-भाव उतपन्न कर जनता में मन-मुटाव बढ़ाते हैं। फीकी पत्रकारिता, मन गढ़ंत और झूठे अंधविश्वासों से भरे समाचार देश को विनाश की ओर ले जाते हैं। अश्लील विज्ञापन एवं नग्न चित्र बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव डालते हैं। कुछ पत्र सरकारी नीति की भी पक्षपातपूर्ण प्रशंसा करते हैं।

संपादकों को अपना दायित्व भली प्रकार से समझना चाहिए। किसी विशेष पार्टी या पूंजीपति के स्वार्थ का साधन न बनें। जनता की वाणी का गलत इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। समाज में जागृति लाने, नारी की स्थिति सुधारने, युवा पीढ़ी में देशभक्ति की भावना जगाने की कोशिश करनी चाहिए। सबसे बढ़कर समाचार पत्र अगर सही मार्ग दर्शक की भूमिका निभाएं तो देश, जाति तथा समाज शीघ्र ही उन्नति कर सकते हैं।

12. दूरदर्शन

पुराने जमाने में नाटक, रामलीला आदि मनुष्य के मनोरंजन के साधन थे। दूरदर्शन आधुनिक विज्ञान का चमत्कार है जोकि शिक्षा के प्रसार-प्रचार एवं मनोरंजन की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। मनोरंजन के क्षेत्र में रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा, ग्रामोफोन आदि तकनीकों का आविष्कार हुआ है किंतु दूरदर्शन बढ़िया और सस्ता साधन है। शुरू में इसका प्रयोग केवल अमीर लोग ही करते थे। आज दूरदर्शन झुग्गी-झोंपड़ी तक भी आ पहुंचा है। पहले केवल श्वेत-श्याम दूरदर्शन था लेकिन अब रंगीन कार्यक्रमों का प्रसारण होने लगा है।

दूरदर्शन टेलीविजन का समानार्थक (पर्याय) शब्द है। टेली + विज़न दो शब्दों के मेल से बना है टेलीविज़न। टेली का अर्थ है दूर और विज़न का अर्थ है देखना। रेडियो में तो प्राणी को मात्र बोलते हुए ही सुन सकते हैं किंतु दूरदर्शन में दूर बैठे ही प्राणी के दर्शन भी कर सकते हैं। इसको घर का सिनेमा भी कह सकते हैं। इसका आविष्कार हमें महाभारत के उस प्रसंग की याद दिला देता है, जिससे संजय धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र की घटनाओं की जानकारी, अपनी दिव्य दृष्टि से हस्तिनापुर में राजभवन में ही सुना देते थे। आज का दूरदर्शन निश्चय ही वह दिव्य दृष्टि है जिससे हू-ब-हू देखने व सुनने को मिलता है।

टेलीविज़न/दूरदर्शन का आविष्कार स्कॉटलैंड के इंजीनियर जॉन एल. बेअर्ड ने सन् 1926 ई. में एक '' टेली-कैमरा '' बनाकर किया था। सन् 1936 ई. में इसका पहला प्रसारण बी.बी.सी लंदन ने किया। भारत में दूरदर्शन का उद्घाटन 1959 अक्टूबर में पहले राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने दिल्ली में किया। 1972 ई. में बम्बई, श्रीनगर, मद्रास, जालंधर, कलकत्ता, लखनऊ आदि दूरदर्शन केन्द्रों की स्थापना हुई। 31 मार्च 1976 तक भारतीय दूरदर्शन आकाशवाणी का ही अंग था। उसके बाद इसे आकाशवाणी से अलग पहचान दे दी गई। शक्तिशाली ट्रांसमीटरों तथा सैटेलाइट्स ने सारे देशवासियों को दूरदर्शन से जोड़ दिया है। जिस कारण विश्व में कहीं भी घटित होने वाली सभी खबरें शीघ्र ही सब जगह पहुंच जाती हैं।

आज देशीय और विदेशी- अनेकों चैनल आ गए हैं। दूरदर्शन से प्रसारण दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। फिल्मी-गीत, खबरें, नृत्य आदि के साथ मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों की उपयोगिता भी समझी जाने लगी है। बच्चों को आकर्षित करने के लिए मनोरंजन और शिक्षा से भरपूर कार्टून कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इससे मौसम, राजनीति, भारतीय संस्कृति, कृषि दर्शन आदि की जानकारी मिलती है।

दूरदर्शन पर कवि-सम्मेलन, गीत-संगीत, नाटक (धारावाहिक), वैज्ञानिक प्रयोग, स्वागत-समारोह, चुनाव दृश्य आदि देखे व सुने जा सकते हैं। खेल प्रतियोगिताओं जैसे- क्रिकेट, हॉकी आदि के मैच जिस भी देश में हो रहे हों, का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। धर्म में आस्था रखने वालों के लिए भी 24 घण्टे कार्यक्रम देखने को मिलते हैं। संसद अधिवेशन राष्ट्रीय कार्यक्रमों का भी सीधा प्रसारण दूरदर्शन द्वारा किया जाता है।

डिस्कवरी, नेशनल जॉगराफिकल जैसे ज्ञानवर्धक चैनलों पर डॉक्टरों के लिए सर्जरी ज्ञान, समुद्र ज्ञान के लिए भूमि में डूबे जहाजों तथा अनेकों वनस्पतियों के बारे में कैमरे द्वारा जानकारी दी जाती है। अंतरिक्ष का ज्ञान प्राप्त करने में तथा किसानों के हित की बातों के बारे में भी दूरदर्शन द्वारा ही कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

अनेक उद्योगपति अपनी उत्पादन की हुई वस्तुओं का दूरदर्शन के माध्यम से विज्ञापन देकर व्यापार में बढ़ोत्तरी करते हैं। जिससे दूरदर्शन की आय का साधन भी बन गया है। विज्ञापनों से होने वाली आय को देखकर तो प्राइवेट चैनलों की भरमार हो रही है।

दूरदर्शन द्वारा शैक्षिक, गीतों, कॉमेडी, ज्ञान परीक्षण आदि के आधार पर अनेकों मुकाबले करवाए जाते हैं। जिनसे बच्चों व बड़ों की प्रतिभाएं व बौद्धिक विकास निखर कर सामने आता है। भविष्य का कलाकार भी इन प्रतियोगिताओं द्वारा उभर आते हैं।

जहां फूल होते हैं वहां कांटे भी होते हैं। सबसे बड़ी हानि छात्र-वर्ग की हुई है। छात्र टेलीविजन के दीवाने हो गए हैं। वह दिन-रात, खाते-पीते हर समय टी.वी. के सामने बैठना पसंद करते हैं। जिससे न केवल उनकी पढ़ाई में बाधा पड़ी है बल्कि खेलों की तरफ, अतिरिक्त पुस्तकों की पढ़ाई की तरफ, मां-बाप की आज्ञा पालन से रूचि घटती जा रही है। वह किसी भी काम और बात की तरफ ध्यान ही नहीं दे पाते

क्योंकि उनका तारतम्य दूरदर्शन के प्रसारणों से ही नहीं हटता। जरूरत से ज्यादा चैनलों के कारण दिन-रात प्रसारण चलता रहता है। जिससे उनका कीमती समय नष्ट हो जाता है। कई घण्टे टी.वी. देखने से आखों की ज्योति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सिरदर्द की शिकायत बच्चों को आमतौर पर रहती है जिससे बड़ी छोटी आयु में भी बच्चों के चश्में लग जाते हैं। कुछ कार्यक्रम बच्चों के स्तर के नहीं होते जिनको देखने से उनके शैशव मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

दूसरी हानि युवा-वर्ग की हुई है। वह पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण कर रहे हैं। उनकी पोशाकें, खान-पान, रहन-सहन का ढंग खर्चीला होता जा रहा है जिससे चोरी, डकैती, छीना-झपटी में बढ़ावा हुआ है। माता-पिता की अनुपस्थिति में बच्चे विदेशी अश्लील चैनल भी देखते है जिससे समाज में युवा वर्ग का चरित्र पतन की ओर जा रहा है।

तीसरी हानि विज्ञापनों से प्रोत्साहित होकर लोग कई बार अनावश्यक चीजें खरीद लेते हैं। जिससे खर्च को बढ़ावा मिलता है।

चौथी हानि लोगों का आपसी मेल-जोल कम हो गया है। पहले लोग खाली समय में मिल जुलकर बैठते थे और एक दूसरे के सुख-दु:ख में काम आते थे। आज प्रत्येक व्यक्ति के घर में टीवी है वह उसी में मस्त रहता है। यहां तक की बड़े शहरों में लोग अपनी पड़ोसी तक को नहीं जानते। आपस में भाईचारा न होना देश की एकता के लिए खतरा बनता जा रहा है।

पांचवी हानि समय की है। आज के युग में समय सबसे कीमती है। मुकाबले का जमाना है आगे आने की होड़ है। अगर बच्चे टी.वी. के सामने बैठे रहेंगे तो वह कीमती समय और अवसरों से हाथ धो बैठेंगे।

दूरदर्शन विभाग को चाहिए कि वे ज्ञानवर्धक और मनोरंजन चैनल बढ़ाएं। सरकार भी अश्लील और ऐसे कार्यक्रमों पर रोक लगाए जिन्हें घर के सभी सदस्यों के साथ बैठकर देखा न जा सके। दर्शकों को भी स्वयं पर नियंत्रण रखकर चरित्र निर्माण, खुशी, आनंद देने वाले सीमित कार्यक्रम देखने चाहिए। हालांकि दूरदर्शन के आविष्कार ने संसार को छोटा कर दिया है किंतु कहीं आपसी एकता की कमी से हम कमजोर न पड़ जाए। दूरदर्शन एक वरदान है, हमें इसे अभिशाप बनने से रोकना है। ताकि दूरदर्शन संचार का सर्वोत्तम साधन बन सके।

पत्र लेखन संबंधी कुछ याद रखने योग्य

तालिका

	जिसे पत्र लिखा जाएगा	संबोधन	अभिवादन	समापन
प्रार्थना-पत्र	प्रधानाचार्य मुख्याध्यापक प्रिंसिपल	श्रीमान जी, महोदय, मान्यवर	–	आपका/आपकी आज्ञाकारी शिष्य/ शिष्या
	मुख्याध्यापिका	श्रीमती जी,	–	आपका/आपकी आज्ञाकारी शिष्य/ शिष्या
व्यक्तिगत/ निजी पत्र	पिता जी, चाचा जी, मामा जी,	आदरणीय पूज्य, पूजनीय माननीय	सादर चरण-स्पर्श! सादर प्रणाम	आपकी आज्ञाकारी पुत्र/पुत्री भतीजा/भतीजी भानजा/भानजा
	मित्र/सहेली	प्रिय.....	जय हिंद! नमस्ते	तुम्हारा/तुम्हारी/ अभिन्न मित्र/सहेली
	छोटे भाई/ बहन	प्रिय अनज़.....	खुश रहो, प्रसन्न रहो	तुम्हारा बड़ा भाई, बड़ी बहन
शिकायती पत्र	किसी अधिकारी को	माननीय महोदय मान्यवर	–	भवदीय, विनीत, प्रार्थी निवेदक

पाठ–10

पत्र–लेखन

प्रार्थना–पत्र

1. बीमारी के कारण अवकाश लेने के लिए

सेवा में,

प्रिंसिपल महोदया
सरकारी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,
पटियाला

श्रीमती जी,

सविनय निवेदन है कि कल रात मुझे तेज़ बुखार हो गया है। डॉक्टर ने मुझे आराम करने को कहा है। इसलिए मैं आज स्कूल में उपस्थित नहीं हो सकती। कृपा करके मुझे एक दिन का अवकाश प्रदान करें।

धन्यवाद सहित!

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
नवदीप कौर
कक्षा छठी ''बी''

तिथि : 4 मई 2010

2. आवश्यक काम के लिए अवकाश लेने के लिए

सेवा में,

मुख्याध्यापक महोदय,
सरकारी हायर सैकेण्डरी स्कूल
जालंधर।

श्रीमान् जी,

सविनय निवेदन है कि मुझे घर पर एक अति आवश्यक काम पड़ गया है। इसलिए मैं दो दिन तक स्कूल में उपस्थित नहीं हो सकता। कृपा करके मुझे दिनांक 22–7–2010 से दिनांक 23–7–2010 का अवकाश दिया जाए। मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।

धन्यवाद सहित!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
सुनील कुमार
कक्षा आठवीं '' ए ''

तिथि : 22–7–2010

3. शिक्षा-शुल्क (फीस) माफी के लिए

सेवा में,

मुख्याध्यापिका जी,
सरकारी हाई स्कूल,
लुधियाना।

श्रीमती जी,

मैं आपके स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता हूं। मेरे पिता जी एक दुकान पर काम करते हैं। उनका मासिक वेतन मात्र 2500/- है। इतनी कम आय में हमारे घर का गुज़ारा बहुत मुश्किल से होता है। आर्थिक संकट के कारण मेरे पिता जी के लिए मेरी फीस जुटा पाना बहुत कठिन है।

मैं अपनी कक्षा में सदा प्रथम स्थान पर रहा हूं और मैं अपनी पढ़ाई छोड़ना नहीं चाहता। इसलिए आपसे निवेदन है कि आप मेरी फीस माफ करके मुझ पर कृपा करें। मैं जीवनभर आपका आभारी रहूंगा।

धन्यवाद सहित!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
राजेश कुमार
कक्षा आठवीं

तिथि : 18 अप्रैल 2010

4. जुर्माना माफ करवाने के लिए

सेवा में,

मुख्याध्यापक जी,
सरकारी मिडल स्कूल,
नवां शहर।

श्रीमान् जी,

सविनय निवेदन है कि हमारी हिंदी अध्यापिका जी ने कल हमारा टैस्ट लेना था। कल मेरी माता जी बीमार थीं और घर पर मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं था। इसलिए मैं कल स्कूल उपस्थित न हो सकी। अध्यापिका जी ने टैस्ट न देने के कारण मुझे 10 रुपये जुर्माना लगा दिया है। मेरे पिता जी बहुत गरीब है। मैं यह जुर्माना नहीं दे सकती।

इसलिए कृपा करके आप मेरा जुर्माना माफ कर दें। मैं आपकी बहुत आभारी रहूंगी।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
रीना गुप्ता
कक्षा सातवीं

तिथि :

5. सेक्शन बदलने के लिए

सेवा में,

प्रिंसीपल महोदय,
सरकारी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
रूप नगर।

श्रीमान जी,

विनम्रता सहित मैं आपके स्कूल में आठवीं-''बी'' कक्षा में पढ़ता हूं। मेरा चचेरा भाई भी इसी स्कूल में आठवीं में पढ़ता है, पर उसका सेक्शन ''ए'' हैं। हम दोनों एक ही मकान में रहते हैं और इकठ्ठे मिल कर पढ़ते हैं। हमारी कक्षा का सैक्शन अलग होने से कई बार हमें इकठ्ठे पढ़ने में मुश्किल आती है। यदि हम दोनों एक ही सेक्शन मे होंगे तो हमारी पढ़ाई पहले से अच्छी हो सकती है। अत: आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे भी सेक्शन ''बी'' से ''ए'' में करने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूंगा।

धन्यवाद सहित!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
मनोज
कक्षा आठवीं ''बी''

तिथि :

6. पीने के पानी व शौचालय की उचित व्यवस्था के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,
आदर्श मॉडल स्कूल,
जगरांव।

श्रीमान जी,

विनम्रता सहित मैं आपका ध्यान अपने विद्यालय की पेयजल व्यवस्था की ओर दिलाना चाहता हूं। विद्यालय के प्रांगण में छात्रों के पीने के पानी के लिए मात्र तीन नल ही लगे हुए हैं जो 800 के लगभग छात्रों के लिए बहुत कम हैं। आधी छुट्टी के समय इन नलों के ईद-गिर्द भारी भीड़ जमा हो जाती है! कुछ बच्चों को तो पानी मिल भी नहीं पाता और पीरियड की घंटी हो जाती है। धक्का-मुक्की में छोटे बच्चों के गिरने की आशंका भी बनी रहती है।

विद्यालय में बने हुए शौचालय भी छात्रों की संख्या को देखते हुए बहुत कम

है। छात्रों को काफी देर तक खड़े रह कर अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। छात्रों की संख्या अधिक और शौचालय कम होने के कारण वहां दुर्गंध भी उत्पन्न हो जाती है जो छात्रों के स्वास्थ्य के निए हानिकारक है।

अत: आपसे निवेदन है कि छात्रों की इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आप पीने के पानी के नलों एवं शौचालयों की संख्या में वृद्धि की योजना बनाएं। सभी छात्र गण इन सुविधाओं के लिए आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
अजय कुमार
दसवीं ''सी''

तिथि :

निजी पत्र

परीक्षा में प्रथम आने की सूचना देते हुए पिता जी से रुपये मंगवाने के लिए

आदर्श मॉडल स्कूल,
गांव गज्जूमाजरा,
जिला पटियाला।
दिनांक- 10 अप्रैल 2010

पूज्य पिता जी,

सादर चरण-स्पर्श!

आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि छठी कक्षा में मैं अपनी कक्षा में प्रथम आया हूं। अब मैंने सातवीं श्रेणी में दाखिला लेना है। साथ ही इस कक्षा की पुस्तकें एवं कापियां भी खरीदनी हैं।

इसलिए आप कृपा करके मुझे 500/- रुपये मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें। माता जी को प्रणाम। मिन्नी को बहुत प्यार।

आपका आज्ञाकारी बेटा
संजीव शर्मा

जन्म दिवस पर भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र

25, मॉडल टाऊन,
जालंधर।
16 सितंबर, 2010

आदरणीय चाचाजी,

सादर प्रणाम!

कल मेरे जन्म-दिन के अवसर पर जब हम आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, आपके द्वारा भेजा हुआ कोरियर प्राप्त हुआ। जब मैंने उसे खोला तो उसमें एक बहुत सुंदर घड़ी को देख मुझे बहुत खुशी हुई। घड़ी की मुझे बहुत जरूरत थी। आपके उपहार ने मेरी जरूरत को पूरा कर दिया।

मेरे मित्रों को भी यह घड़ी बहुत पसंद आई। इस सुंदर उपहार के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं।

चाची जी को प्रणाम! सोनू और मिंकू को बहुत सारा प्यार।

आपका भतीजा
मुकेश

परीक्षा में असफता पर मित्र/ सहेली को सांत्वना देते हुए पत्र

परीक्षा भवन,
..... शहर।
दिनांक 28 जून, 2010

प्रिय सुखविंदर,

कैसी हो! कल पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड का आठवीं की परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। यह पता चलने पर कि तुम इस वर्ष यह परीक्षा पास नहीं कर पाई हो, मुझे बहुत दु:ख हुआ। तुम्हें भी इस बात से बहुत निराशा हुई होगी। लेकिन इस असफलता में तुम्हारा कोई दोष नहीं है। मैं जानती हूं कि पिछले कुछ महीनों से तुम्हारी माता जी अस्वस्थ है। उनकी बीमारी के चलते घर का सारा काम तुम्हें ही करना पड़ता है। इस कारण तुम अपनी पढ़ाई की ओर भी पूरा ध्यान नहीं दे पाई। अगर तुम्हें पूरा समय मिलता तो तुम अवश्य ही अच्छे अंकों में परीक्षा उत्तीर्ण कर लेती।

चलो कोई बात नहीं। तुम अगले वर्ष के लिए अभी से मेहनत करना शुरू कर दो। मुझे आशा है कि तुम अब निराशा को छोड़ कर, नए सिरे से परिश्रम करके परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करेगी।

आंटी जी और अंकल जी को नमस्ते! मुन्नी और दीपक को प्यार।

तुम्हारी सखी
मीनू

परीक्षा में प्रथम आने पर मित्र/सहेली को बधाई देते हुए

25, प्रेमनगर,
कपूरथला।
18 जुलाई, 2010।

प्रिय मित्र नवीन,

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। यह पढ़कर बहुत खुशी हुई कि तुम आठवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हो गए हो। बोर्ड की मेरिट लिस्ट में तुम्हारा नाम आया है। इस शानदार सफलता पर तुम्हें मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई। बोर्ड की परीक्षा 87 प्रतिशत अंक लेना कोई हंसी खेल नहीं है। तुमने सिद्ध कर दिया है कि सच्चे मन से किया गया परिश्रम जरूर रंग लाता है। अपने माता-पिता को भी मेरी ओर से हार्दिक बधाई देना। उन्हें मेरी ओर से प्रणाम एवं चुन्नु को प्यार।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
प्रकाश

शिकायती पत्र

पोस्ट मास्टर को डाकिए की शिकायत

सेवा में,

पोस्ट मास्टर साहब
जनरल पोस्ट ऑफिस,
पटियाला

महोदय,

निवेदन है कि मैं मोहल्ला रामनगर का निवासी हूं। यहां के डाकिए का नाम दीनानाथ है। इस डाकिए से मोहल्ले के लगभग सभी लोग परेशान हैं। यह डाक सही प्रकार से और समय पर नहीं पहुंचाता। कई बार तो पत्र गली में खेलते बच्चों को पकड़ा जाता हैं। एक दो बार तो आवश्यक पत्र नाली में पड़े मिलते हैं।

हमने डाकिए को समझाने की भी बहुत कोशिश की है पर उसके कान पर जूं तक नहीं रेंगती। आप से प्रार्थना है कि या तो इसे अच्छी तरह से समझा दें या फिर इसे बदल कर कोई और अच्छा सा डाकिया हमारे मोहल्ले के लिए भेज दें।

धन्यवाद सहित!

भवदीय
विनोद कुमार
एवं
अन्य मोहल्ला निवासी

दिनांक- 12 जून 2010।

स्वास्थ अधिकारी को मोहल्ले की सफाई के लिए

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी महोदय
नगर पालिका
फरीद कोट।

श्रीमान जी,

मैं मोहल्ला कृष्णनगर का निवासी हूं। इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले की सफाई की ओर ले जाना चाहता हूं। हमारे मोहल्ले का सफाई कर्मचारी रामदीन अपना काम ठीक ढंग से नहीं करता। गली की सफाई करते समय वह बड़ी लापरवाही दिखाता है। गली की नालियां बहुत गंदी रहती हैं और पानी नाली के किनारों से बहता रहता है। गली का कूड़ा-कचरा भी वह रोज़ का रोज़ नहीं ले जाता, बल्कि वहीं कोने में फेंक जाता है। कचरे के ढेर पर मच्छरों और मक्खियों ने अपना अड्डा बना लिया है। वहां से उठने वाली बदबू के कारण मोहल्ले वासियों का रहना दूभर हो गया है।

हम सब ने रामदीन को समझाने की भी कोशिश की है, पर उसके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं आकर मोहल्ले की दशा देखें और सफाई कर्मचारी रामदीन की ताड़ना करें। अगर हो सके तो आप रामदीन की जगह किसी और सफाई कर्मवचारी को हमारे मोहल्ले में लगवा दें।

धन्यवाद सहित!

निवेदक
नवीन कुमार
गली नं. 2
मोहल्ला कृष्णनगर

तिथि :

पाठ–19

कहानियां

1. प्यासा कौआ

जून का महीना था। बहुत अधिक गर्मी पड़ रही थी। एक कौए को बहुत प्यास लगी। वह पानी की तलाश में इधर–उधर भअकने लगा। भग्कते–भटकते वह एक बाग में पहुंचा। बाग में उसे एक घड़ा दिखाई दिया। घड़े को देखकर वह बहुत खुश हुआ। वह जल्दी से घड़े के पास पहुंचा। उसने घड़े में चोंच डालकर पानी पीने का प्रयत्न किया लेकिन घड़े में पानी बहुत कम था। यह देखकर कौआ बहुत निराश हुआ, लेकिन उसने हिम्मत न छोड़ी। उसने इधर–उधर नजर दौड़ाई। उसे घड़े के आस–पास कुछ कंकड़–पत्थर दिखाई दिए। समझदार कौए को उपाय सूझ गया। उसने एक–एक करके उन कंकरों को घड़े में डालना शुरु कर दिया जिससे घड़े का पानी ऊपर आ गया। कौए ने जी भर पानी पी कर अपनी प्यास बुझाई और उड़ गया।

शिक्षा:–

1. जहां चाह, वहां राह।
2. मुसीबत के समय समझदारी से काम लेना चाहिए।

2. लालची कुत्ता

एक गांव में एक कुत्ता था। वह भोजन की तलाश में इधर–उघर घूम रहा था। उसे कहीं से मांस का एक टुकड़ा मिल गया। वह उस टुकड़े को एकांत में बैठ कर खाना चाहता था। चलते–चलते वह नदी के पास पहुंच गया। नदी पर पुल बना हुआ था। वह पुल पर चला गया। पानी में उसे अपनी परछाई दिखाई दी। उसने समझा की नदी में एक और कुत्ता है, जिसके मुंह में भी मांस का टुकड़ा है। कुत्ते के मन में लालच आ गया। दूसरे मांस के टुकड़े को प्राप्त करने के लिए वह जोर से भौंका। भौंकने के लिए ज्यों ही उसने अपना मुंह खोला, उसका अपना टुकड़ा भी पानी में गिर गया। मुर्ख कुत्त बहुत पछताया और मुंह लटका कर गांव में लौट आया।

शिक्षा:–

1. हमें कभी भी लालच नहीं करना चाहिए क्योंकि लालच बुरी बला है।

3. खरगोश और कछुआ
अथवा
घंमडी का सिर नीचा

एक बार एक जंगल में एक खरगोश और एक कछुआ रहते थे। दोनों मित्र थे। खरगोश अपने मित्र कछुए की धीमी चाल पर अक्सर उसकी हंसी उड़ाता था। खरगोश की बातें सुन कर कछुआ चुप रह जाता था।

एक दिन खरगोश द्वारा फिर हंसी उड़ाए जाने पर कछुआ बोला –

'' चलो, हम एक दौड़ लगाते हैं, फिर देखते कि कौन तेज चाल चलता है और कौन धीमी। ''

खरगोश को अपनी तेज चाल पर बहुत घमंड था। उसने झट कछुए की बात मान ली।

दौड़ के लिए स्थान निश्चित करके वे दोनों दौड़ने लगे। खरगोश जल्दी ही बहुत आगे निकल गया। रास्ते में उसने सोचा की कछुआ तो बहुत धीरे–धीरे आ रहा है, क्यों ना मैं कुछ देर आराम कर लूं। वह एक पेड़ की ठंडी छांया में आराम करने लगा। आराम करते–करते उसे नींद आ गई। थोड़ी देर बाद धीरे–धीरे चलता कछुआ उसके पास से गुजरा। वह चुपचाप आगे बढ़ गया और निश्चित स्थान पर पहुंच गया।

शाम को जब खरगोश की आंख खुली तो वह निश्चित स्थान की ओर भागा। कछुआ पहले से ही वहां पहुंच चुका था। खरगोश को बहुत शर्म आई। हार जाने से उसका घमंड चूर–चूर हो गया। फिर कभी उसने कछुए की उसकी चाल के लिए हंसी नहीं उड़ाई।

शिक्षा:–

1. हमें कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए।
2. हमें किसी की भी हंसी नहीं उड़ानी चाहिए।
3. लक्ष्य पर पहुंचने से पहले विश्राम नहीं करना चाहिए।

4. ईमानदार लकड़हारा
अथवा
ईमानदारी उत्तम नीति है।

एक गांव में एक गरीब लकड़हारा था। वह प्रतिदिन जंगल से लकड़ियां काटकर लाता और उन्हें बेचकर अपना गुजारा करता था। एक दिन नदी के किनारे वह एक वृक्ष पर चढ़ कर लकड़ियां काट रहा था। अचानक कुल्हाड़ा उसके हाथ से छूट कर नदी में जा गिरा। लकड़हारा बहुत मायूस हो गया। उसकी आखों में आंसू आ गए। उसे रोता हुआ देखकर वहां एक देवता प्रकट हुए। देवता ने लकड़हारे से रोने का कारण पूछा। लकड़हारे ने बताया कि कुल्हाड़े के अभाव में वह लकड़ी नहीं काट सकेगा और लकड़ी नहीं बेचेगा तो वह अपना और अपने परिवार का पेट कैसे भरेगा। लकड़हारे की बात सुनकर देवता पानी में उतरे और एक सोने की कुल्हाड़ी के साथ बाहर आए। सोने की कुल्हाड़ी को देखकर लकड़हारे ने कहा कि यह मेरा कुल्हाड़ा नहीं है। देवता ने फिर पानी में डुबकी लगाई और एक चांदी का कुल्हाड़ा लकड़हारे को दिखाया। लकड़हारे ने इस कुल्हाड़ी

को भी लेने से मना कर दिया।

अंत में देवता ने एक लोहे का कुल्हाड़ा निकाला। लोहे का कुल्हाड़ा देखकर लकड़हारा प्रसन्न हो गया और उसने कहा कि हां, यही मेरा कुल्हाड़ा है। देवता उसकी ईमानदारी पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तीनों कुल्हाड़े उस लकड़हारे को दे दिए, जिससे उसकी गरीबी दूर हो गई।

शिक्षा:-

1. ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है।
2. ईमानदारी का फल मीठा होता है।

5. गढ़ा हुआ खजाना
अथवा
परिश्रम के बिना फल नहीं मिलता

एक बार एक गरीब किसान था। उसके चार बेटे थे। वे चारों ही बहुत आलसी और निकम्मे थे। किसान उन्हें बार-बार समझाने की कोशिश करता, पर वे उसकी एक ना सुनते। अपने बेटों की चिंता करते-करते किसान बीमार रहने लगा। बूढ़ा तो वह था ही।

एक दिन उसने अपने बेटों को अपने पास बुलाया। चारों उसके ईद-गिर्द खड़े हो गए। किसान ने अपने पुत्रों से कहा, ''मैंने कुछ धन इकठ्ठा करके अपने खेतों में गाढ़ दिया था। मेरे मरने के बाद तुम चारों मिलकर खेत को खोद कर उस धन को निकाल लेना और आपस में बांट लेना।''

कुछ दिनों के बाद वह बूढ़ा किसान मर गया। उसके लड़कों ने सोचा कि अब घर के गुजारे के लिए खेत में गढ़ा हुआ धन निकाल लेना चाहिए। चारों लड़के खेत खोदने में जुट गए। सारा खेत खोद लेने पर भी उन्हें गढ़ा हुआ धन कहीं दिखाई नहीं दिया। वे अपने सिर पकड़ कर बैठ गए। इतने में उधर से एक समझदार किसान गुजरा। उसने लड़कों से उनकी उदासी का कारण पूछा। लड़कों ने सारी बात कह सुनाई। बात सुनकर वह किसान मुस्कुराया और उसने उन लड़कों को खोदे हुए खेत में बीज डालने की सलाह दी। लड़कों ने उसकी बात मानी। समय-समय पर उन्होंने खेत में पानी आदि भी दिया। कुछ समय बाद उनके खेत भरपूर फसल से लहलहा उठे। लड़कों को अब अपने पिता की कही बात का अर्थ समझ आ गया था। उनके खेतों में भरपूर फसल रूपी खजाना छिपा था जो अब उन्हें मिल गया था।

शिक्षा:-

1. मेहनत से कभी भी जी नहीं चुराना चाहिए।

6. एकता में बल है

किसी गांव में एक बूढ़ा किसान रहता था। उसके चार पुत्र थे। चारों आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। किसान उनके आपसी झगड़ों से बहुत दुखी था। उसने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की, पर उन पर कोई असर ना था।

एक दिन किसान ने अपने चारों पुत्रों को अपने पास बुलाया और लकड़ियों का एक गट्ठा

लाने को कहा। वे गट्ठा ले आए। किसान ने उन सब को बारी-बारी उस गट्ठे को तोड़ने को कहा। कोई भी लड़का उस गट्ठे को तोड़ न सका। तब उसने गट्ठा खोलकर एक-एक लकड़ी सभी को तोड़ने के लिए दी। अब सभी ने आसानी से उस लकड़ी को तोड़ दिया। तक किसान ने उन्हें समझाया कि अगर तुम इन लकड़ियों की तरह इकठ्ठे रहोगे तो कोई भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। तुम आपस में झगड़ा करके अकेले रहोगे तो लोग तुम्हें नष्ट कर देंगे। अत: तुम सब लड़ाई-झगड़ा छोड़कर इकठ्ठे मिल-जुल कर रहो। एकता में ही ताकत है।

शिक्षा:-

1. हमें लड़ाई-झगड़ा ना करके आपस में मिल-जुल कर रहना चाहिए।